नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
□ नमन : भारत के गौरव
□ पिलानी में एक दिन
जून '९४
पांच रुपए

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कामिक्स
डायमण्ड कामिक्स

डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैन्टम-32

रसना जीनी
और क्राल

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कामिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टॉल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/- रुपये) की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच छः पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कॉमिक्स की सूची में से पांच छः पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच से छः पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।

आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 5 या 6 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।

इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

...यमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
..., दरियागंज नई दिल्ली-110002

डायमण्ड कॉमिक्स मैजिक फन बॉक्स

- 5 मल्टी डाइमेंशनल कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 10 डायमण्ड कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 1 लंच बॉक्स मूल्य 20/-
- अनेक आकर्षक उपहार मूल्य 40/-

कुल मूल्य 120/-

बालों का गिरना? असमय पकना? खुश्की होना?

बालों की समस्या ?

यह सब बालों की बिमारी है ही नहीं, यह केवल लक्षण मात्र हैं। इसलिए इनके उपचार के लिए बालों की जड़ों में औषधि लगाने के साथ-साथ सटिक खाने की भी औषधि नितान्त आवश्यक हैं। ...डा० सरकार

न हो खुश्की, घने काले बाल अगर हो पाना, तो **आर्निकाप्लस** लगाना और होगा **ट्रायोफर** खाना।
इस दोनों के करने से बालों का गिरना होगा बन्द, असमय पकना रोकेगा, और खुश्की होगी कोसों दूर।
सर मे होगी ठडक, पेट की गड़बड़ी होगी दूर, बालो में भी होगी मजबूती, बालो के बढ़ने मे होगी मदद,
तभी तो नये, घने और काले बाल बढ़ेगे। इससे आपके रूप में जगेगी एक आभा नयी,
डर नही क्योंकि होगा ही लाभ, नुकसान नही।

विश्व में पहली बार

बालों के सम्पूर्ण उपचार के लिए

डा० सरकार का-एक लाभकारी अविष्कार –
आर्निकाप्लस-तेलविहीन हेयर लोशन और
खाने के लिए होमियो हेयर टॉनिक-**ट्रायोफर** टेवलेट
दोनों, एक ही पैकेट में।

पैक – ६० मि.लि. और १०० मि.लि.

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल ऐक्शन हेयर वाईटलाइजर

बालों की समस्या के, समाधान के लिए शोध से प्रमाणित होमियो औषधि।

सेवन विधि :
पैकेट के भीतर

लीवोसीन निर्माता की
सहयोगी संस्था Allen का
होमियो रिसर्च का एक उपहार।

एलेन लेवोरेटरीज प्रा० लि०
एलेन हाउस, २२४/एच, मानिकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषधि निर्माता :
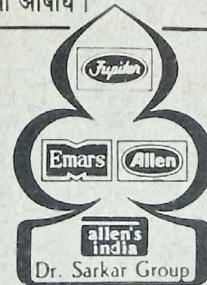
जिसके प्रयत्न से ही मिले आपको आरोग्य और विश्वास।

Marketed by :
allen's india **Allen's India Marketing Pvt. Ltd.**
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

84/77B, Narayan Bag, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph-242844.
Branch Offices : Halwai Lane, Raipur-492001, Ph-26263
(Behind Post Office) East Boring Canal Road, Patna-800 001, Ph.-2360

आओ बात करें

औरंगाबाद जिले में जाम्ब गांव है। कई सौ साल पहले वहां राणूबाई ने एक बालक को जन्म दिया। नाम रखा नारायण। पांच बरस का होने पर नारायण का उपनयन संस्कार हुआ। बचपन में बालक बड़ा ऊधम मचाया करता था।

नारायण हनुमान जी का जाप किया करता। हनुमान जी प्रसन्न हुए। उन्होंने दर्शन दिए। कहते हैं, उन्होंने ही नारायण का नाम रामदास रख दिया। रामदास अभी बारह बरस का ही था कि भजन-पूजन में ज्यादा लगा रहता। माता-पिता को चिंता होने लगी—कहीं लड़का साधु न हो जाए। उन्होंने विवाह कर देने का निश्चय कर लिया।

विवाह संस्कार के समय पुरोहित बोलने लगे—'शुभ लग्न, सावधान, सावधान।' बस तभी रामदास ऐसे सावधान हुए कि वहां से भाग निकले। सगे-सम्बंधी देखते रह गए, ढूंढ़ते रह गए—रामदास तो यह जा और वह जा। बारह बरस तक उनका कहीं कुछ भी पता न चल सका।

रामदास नासिक-पंचवटी में रहकर तप करते। फिर गुफा में रहकर राम-मंत्र का जाप करने लगे। धर्म-ग्रंथ भी बराबर पढ़ा करते। जप-तप का यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। फिर वह भारत-भ्रमण को निकल पड़े। उन्होंने जगह-जगह देखा कि मुसलमान शासक हिंदुओं को सताते हैं।

घूमते-घूमते एक दिन रामदास ने पैठण में कीर्तन किया। वहां के लोगों ने उन्हें पहचान लिया। कहा—"आप तो निश्चिंत होकर तीर्थों में घूम रहे हैं। आपकी मां रो-रोकर अंधी हो गई है।" वह तुरंत जाम्ब गांव पहुंचे। वहां द्वार पर जाकर अलख जगाई। मां ने आवाज सुनी तो पूछा—"कौन, मेरा बेटा नारायण?"

"हां माता जी, मैं ही हूं।"—रामदास बोले।

उन्होंने मां के पास पहुंचकर, उनके चरणों में मस्तक रख दिया। चौबीस बरस बाद मां का पुत्र से मिलन हो रहा था। आंखों से प्रेम के आंसू रुकते न थे। पुत्र ने मां की आंखों पर हाथ फेरा तो मां की आंखों में फिर से ज्योति आ गई।

रामदास ने मां को गीता सुनाई। फिर मां से आज्ञा लेकर गोदावरी की परिक्रमा पर निकल पड़े। रामदास जहां-जहां भी जाते, मठ स्थापित करते चलते। उन्होंने सात सौ से अधिक मठ बनाए।

उन्हीं दिनों छत्रपति शिवाजी धर्म-राज्य की स्थापना में लगे थे। महाराज शिवाजी ने समर्थ रामदास को गुरु बनाया और गुरु मंत्र लिया। सज्जनगढ़ में गुरु रामदास रहते थे। शिवाजी अनेक बार उनके दर्शन करने आया करते थे। एक बार महाराज शिवाजी सतारा में थे। रामदास भिक्षा मांगते हुए राजद्वार पर जा पहुंचे। महाराज ने एक कागज इनकी झोली में डाल दिया। जिसमें लिखा था—'आज तक जो कुछ भी मेरा है, वह स्वामी के चरणों में समर्पित है।' दूसरे दिन सब छोड़-छाड़कर महाराज स्वयं झोली लटकाकर, गुरु के साथ भिक्षा मांगने लगे।

गुरु रामदास ने उन्हें समझाया—"राज्य करना ही तुम्हारा धर्म है।" तब महाराज शिवाजी ने फिर से शासन हाथ में लिया।

सौ साल पहले एक महापुरुष ने छोटे-से गांव पिलानी में रामनवमी को जन्म लिया—उनका नाम था घनश्याम दास। देश भर में उनकी शताब्दी मनाई जा रही है। उन्होंने देश में नए-नए उद्योग लगाए। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छोटी-बड़ी अनेक संस्थाएं स्थापित कीं।

यह अंक उन्हीं दादा जी की याद को समर्पित है। हम सब उनके आदर्शों को अपनाने का प्रयास करें। उनको नमन।

–तुम्हारे भइया

नंदन

जून '९४
वर्ष : ३० अंक : ८

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : तिमिर दत्ता

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**
मुख्य उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील**
वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा**; उप सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार**; चित्रकार : **नारायण**
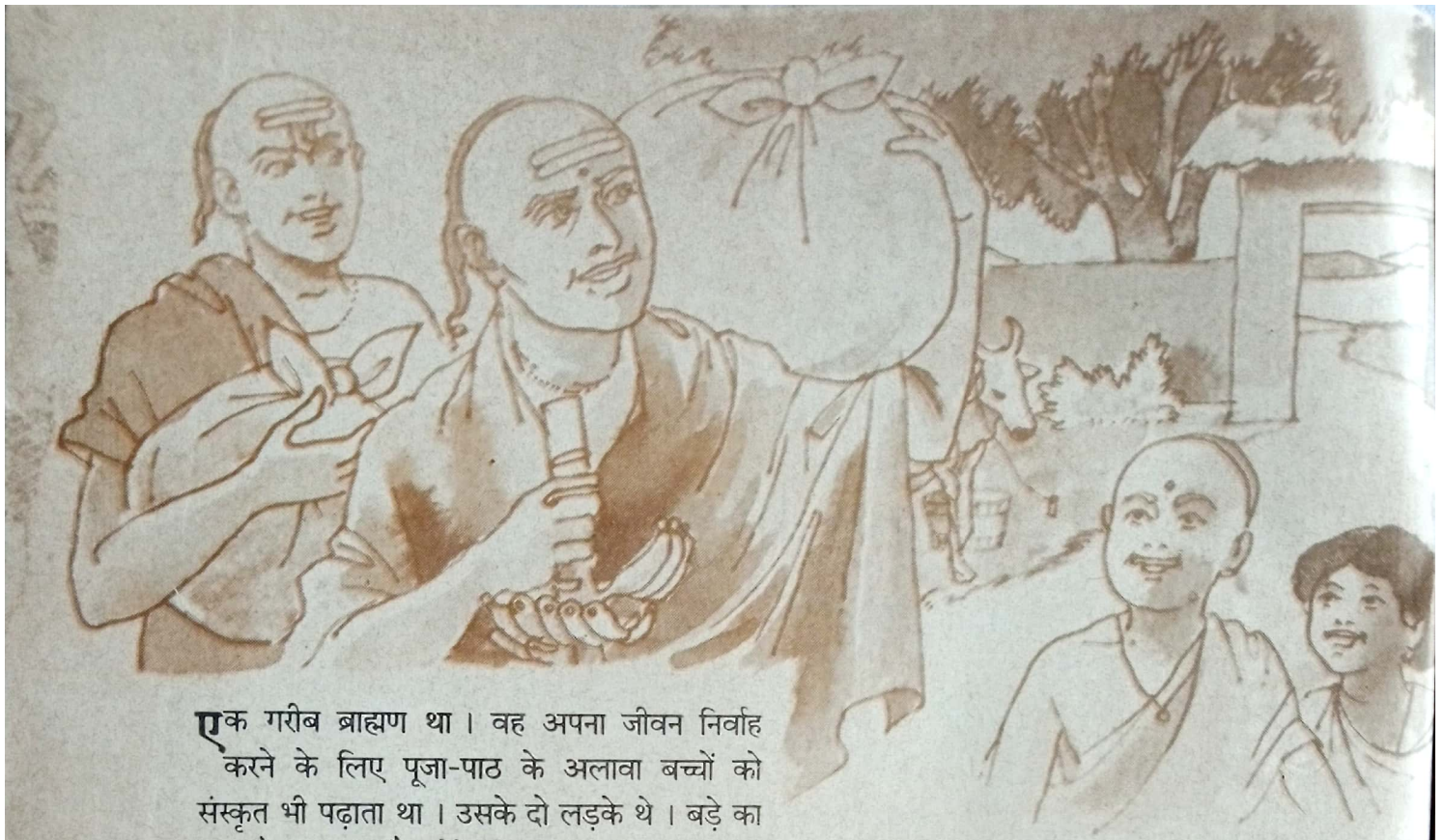
एक गरीब ब्राह्मण था। वह अपना जीवन निर्वाह करने के लिए पूजा-पाठ के अलावा बच्चों को संस्कृत भी पढ़ाता था। उसके दो लड़के थे। बड़े का नाम भैरवप्रसाद और छोटे का नाम कामताप्रसाद था। उसने अपने दोनों बेटों को गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा।

शिक्षा पूरी कर, दोनों भाई अपने घर लौट आए। पिता को उन्होंने विश्राम करने के लिए कहा और पूरे घर का भार संभाल लिया। वे पूजा-पाठ करवाने के लिए आसपास ही नहीं, दूर-दूर के गांवों में भी जाने

बड़ा भाई

—विष्णु भट्ट

लगे। उन दोनों का यश चारों ओर फैल गया। पहले तो दोनों भाई एक साथ एक ही दिशा में जाते। जब उन्हें प्रसिद्धि मिलने लगी, तो वे दोनों अलग-अलग दिशाओं में जाने लगे।

दोनों को प्रसिद्धि के साथ-साथ अच्छी आमदनी भी हो रही थी। वे दोनों जब घर लौटते तो अपनी पूरी आमदनी अपने माता-पिता के चरणों में रख देते। कभी बड़े भाई को आमदनी होती, तो कभी छोटे को। लेकिन जो कुछ आमदनी होती उसी में पूरा परिवार बहुत सुखी था।

उनके दिन बड़ी अच्छी तरह से बीत रहे थे। दोनों भाइयों का विवाह भी हो गया। परिवार में दो सदस्यों की और वृद्धि हो गई। उनका भी खर्च चलाने के लिए उन दोनों को पहले से अधिक परिश्रम करना पड़ता था। दोनों बहुओं ने घर-गृहस्थी का काम संभाल लिया।

एक दिन, अचानक ब्राह्मण बीमार हो गया। गांव के वैद्य जी का इलाज करवाया गया। अपने पिता की देखभाल और सेवा में उन दोनों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कारण बाहर कमाई करने भी वे नहीं जा सके। धीरे-धीरे जो बचत थी, वह भी खर्च हो गई। इतना सब होने पर भी वे अपने पिता को बचाने में सफल नहीं हो सके। मरते-मरते उनके पिता ने कहा—"तुम दोनों भाई मिलकर रहना। कोई समस्या हो, तो उसे मिल-बैठकर सुलझाने का प्र करना। किसी के बहकावे में न आना।"

अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वे दो असहाय हो गए। उन्हें कुछ भी सुझाई न

था । उनकी पत्नियों ने उन्हें घर में सारा सामान समाप्त होने की सूचना दी ।

तब दोनों कमाई करने के लिए चल पड़े । जब शाम को वे लौटे, तो उन्होंने माता से कहा—"अपनी आमदनी, पिता जी के बाद आपको दें तो कोई आपत्ति तो नहीं ?"

मां ने कहा—"बेटो ! पिता के बाद घर का मुखिया बड़ा बेटा होता है । इसलिए सारी आमदनी बड़े भाई भैरव को ही अपने पास सुरक्षित रखनी चाहिए । आवश्यकता के अनुसार दोनों भाई मिलकर खर्च करें, ताकि पूरे परिवार को किसी तरह की कठिनाई न हो ।"

दोनों भाई मां की बात मान गए, लेकिन यह नियम कुछ ही दिन चल पाया । दुर्भाग्य से दोनों भाइयों की पत्नियां इस नियम को तोड़ने का कोई न कोई बहाना ढूंढ़ने लगीं । वे किसी न किसी बात पर बहस करने लगतीं । एक कहती उसका पति अधिक कमाता है, तो दूसरी कहती उसका पति अधिक कमाता है । इस प्रकार घर में अशांति बढ़ने लगी । दोनों ने अपने ातियों के कान भरने आरंभ कर दिए । कलह बढ़ती ई ।

एक दिन उनकी मां बीमार हो गई । उनकी मां से सुख-शांति की जगह, कलहपूर्ण वातावरण नहीं या । अपने पति की मृत्यु के बाद इतनी जल्दी सुखद दिन दुख भरे हो जाएंगे, ऐसा वह सोच भी नहीं सकती थीं । वह ऐसी बीमार हुई कि कोई भी दवा कारगर साबित नहीं हुई । उनकी अमृतमय दवा थी-सब हिलमिल कर रहें । जो भी मिल रहा है, उसे आपस में मिल-बैठकर बड़े प्रेम से स्वीकारें । किंतु ऐसे हालात बनते जा रहे थे कि जैसा वह सोचती थीं, वह सम्भव नहीं हो पा रहा था । आखिर मां की मृत्यु हो गई ।

मां के मरने के बाद दोनों भाई अलग-अलग हो गए । जब सम्पत्ति के बंटवारे की बात आई, तो बड़े भाई ने सब कुछ छोटे भाई को दे दिया । उसे इतने पर भी संतोष नहीं हुआ । उसने अपना पैतृक मकान भी मांग लिया । इस तरह बड़ा भाई घर विहीन होकर रह गया ।

दुखी होकर उसने गांव छोड़ दिया । अपनी पत्नी को साथ लेकर, वह पास के किसी गांव में बसने के लिए चल पड़ा ।

दोनों भूख से व्याकुल थे । अपनी थकान मिटाने के लिए वे बरगद के पेड़ की छाया में सुस्ताने लगे । तभी एक महात्मा जी अपने शिष्यों के साथ उधर से गुजरे । उनको वैसी हालत में देखकर वह समझ गए कि वे बहुत ही दुखी हैं । महात्मा जी उनके पास गए । लड़खड़ाते हुए दोनों उठे और महात्मा जी को सादर प्रणाम किया । तब महात्मा जी ने आशीर्वाद

दिया। उनसे सारी बात पूछी। भैरवप्रसाद ने आदि से लेकर अंत तक पूरी कहानी सुना दी। महात्मा जी ने बड़े भाई की बहुत प्रशंसा की। अपने पास से उन्हें भोजन कराया। कहा—"तुम्हारा त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाएगा।"

महात्मा जी की बात से भैरव को बहुत शांति मिली। वह वहीं झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। जल्दी ही सबको पता चल गया कि वह एक ईमानदार आदमी है, विद्वान पंडित भी है। बस,फिर क्या था ! लोग उसके पास आने लगे। उसका काम फैलने लगा। घर में लक्ष्मी बरसने लगी।

उधर छोटे भाई कामताप्रसाद की बेईमानी की बात भी चारों ओर फैल गई। जो सुनता वही कामताप्रसाद को भला-बुरा कहता।

धीरे-धीरे लोगों ने कामताप्रसाद को पूजा-पाठ के लिए बुलाना बंद कर दिया। काम बंद हुआ तो घर में रोटी के लाले पड़ गए। कामताप्रसाद की हालत देख, गांव वाले कहते— 'बुरे का फल बुरा ही होता है। इसने अपने सीधे-सादे भाई को घर से निकाला। वह गया तो साथ-साथ इसके घर से लक्ष्मी भी चली गई।' कामताप्रसाद सुनता और चुप रह जाता। गांव वाले कहते तो सच ही थे।

एक दिन भैरवप्रसाद को काम से दूसरे गांव जाना था। रास्ते में उसका अपना गांव भी पड़ता था।

जब वह अपने गांव के पास पहुंचा तो उससे रहा नहीं गया।

घर के सामने पहुंचा,तो चकित रह गया। थोड़े-से दिन में ही घर खंडहर हो चुका था। कामता बहुत कमजोर हो गया था। उसने भैरव को देखा तो फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी पत्नी ने आकर भैरव के पैर पकड़ लिए। कहने लगी—"भइया, हमें माफ कर दो। आप यहां से गए तो सारी सुख-शांति चली गई। हम दाने-दाने को मोहताज हो गए।"

भैरव ने कामताप्रसाद को गले से लगा लिया। बोला—"चिंता किस बात की ? मैं हूं न पगले।"

कामता और उसकी पत्नी जाकर भाभी को भी मना लाए। दोनों फिर पहले की तरह रहने लगे। ●

माटी की मूरत

—घनश्यामदास बिरला

महाभारत में एक कथा है कि निषादराज के एक लड़के को, जिसका नाम एकलव्य था, धनुर्विद्या सीखने की अत्यंत लालसा थी। धनुर्विद्या सीखने के हेतु वह द्रोणाचार्य जी के पास पहुंचा।

आचार्य ने बालक से पूछा—"तुम कौन हो ?"

"मैं निषादराज का पुत्र हूं।"

इस पर द्रोणाचार्य ने कहा—"तुम शूद्र हो, अतः मैं तुम्हें यह विद्या नहीं सिखा सकता।" बालक यह सुनकर न तो दुखित हुआ और न निराश ही हुआ। उसने वन में जाकर द्रोणाचार्य की एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसे ही अपना गुरु मानकर, बिना किसी की सहायता के धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा।

एक दिन पांडव बालक उस वन की ओर आए थे। उनके साथ एक कुत्ता था, जो उस निषाद बालक को देखकर भौंकने लगा। इस पर उस निषाद ने कुत्ते पर ऐसी कारीगरी से बाण बरसाए कि कुत्ता मरा नहीं, पर उसका मुंह बाणों से भरकर बंद हो गया। पांडवों ने जब यह दृश्य देखा, तो उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ और उन्होंने यह सारी कथा जाकर आचार्य से कही। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा कुशल धनुर्धारी तो हमने देखा नहीं।

यह सुनकर द्रोणाचार्य उन सबको साथ लेकर उस बालक के पास पहुंचे और उससे पूछा—"वत्स, यह विद्या तुमने किससे सीखी ?"

उसने उत्तर दिया—"मेरा गुरु द्रोणाचार्य है, उसी से मैंने यह विद्या प्राप्त की है।" द्रोणाचार्य को आश्चर्य हुआ,क्योंकि उन्होंने कभी उसको दीक्षा दी हो, ऐसा उन्हें स्मरण नहीं था। ज्यादा प्रश्नोत्तर के बाद यह पता लगा कि उसने मिट्टी की मूर्ति को द्रोण का प्रतीक बनाकर उसी से यह विद्या प्राप्त की है।

प्रतीक की भी श्रद्धा और लगन के साथ पूजा से उस प्रतीक में एक उच्च शक्ति का आविर्भ जाता है, वह उपासक को वांछित फल दे

जन्म : रामनवमी १८९४
निधन : ११ जून १९८३

भारत के गौरव
घनश्यामदास बिरला

इधर-उधर

—रमाकांत 'कांत'

स्वामी श्रद्धानंद एक पहुंचे हुए महात्मा थे। उन्हें अनेक सिद्धियां प्राप्त थी। दूर जंगल में उनका आश्रम था।

दूर-दूर से भक्त उनके पास आते थे। स्वामी जी के दर्शन कर उन्हें अपने कष्ट बताते थे। स्वामी जी उनकी समस्याओं का निराकरण करते थे।

आश्रम में जो भी आता था वह खाना वही खाता था। भक्त आश्रम में चढ़ावा भी चढ़ाया करते थे। आश्रम के भंडार में कोई कमी नहीं थी। भंडार का नाम 'अक्षय भंडार' था। कई बार भक्त स्वामी जी से इस 'अक्षय भंडार' के बारे में प्रश्न करते थे। स्वामी जी हंस कर कह देते— "मेरे पास सुखदा मणि है। यह सारा चमत्कार उसी का है।"

एक चोर ने भी यह बात सुनी। उसने किसी भी तरह स्वामी की सुखदा मणि हथियाने की सोची।

फिर उसके दिमाग में आया कि साधु-महात्मा के यहां चोरी करना घोर पाप है। पर चोर को तो चोरी करनी ही थी।

एक रात चोर स्वामी जी की कुटिया में जा पहुंचा। उसने कहा— "बाबा, तुमने धन-दौलत देने वाली सुखदा मणि कहां छिपा रखी है? निकाल कर मेरे हवाले कर दो।"

—"बेटा इसमें क्या बात है? तुम जरूरतमंद हो। अतः तुम्हें सुखदा मणि मिल जाएगी। तुम दिन
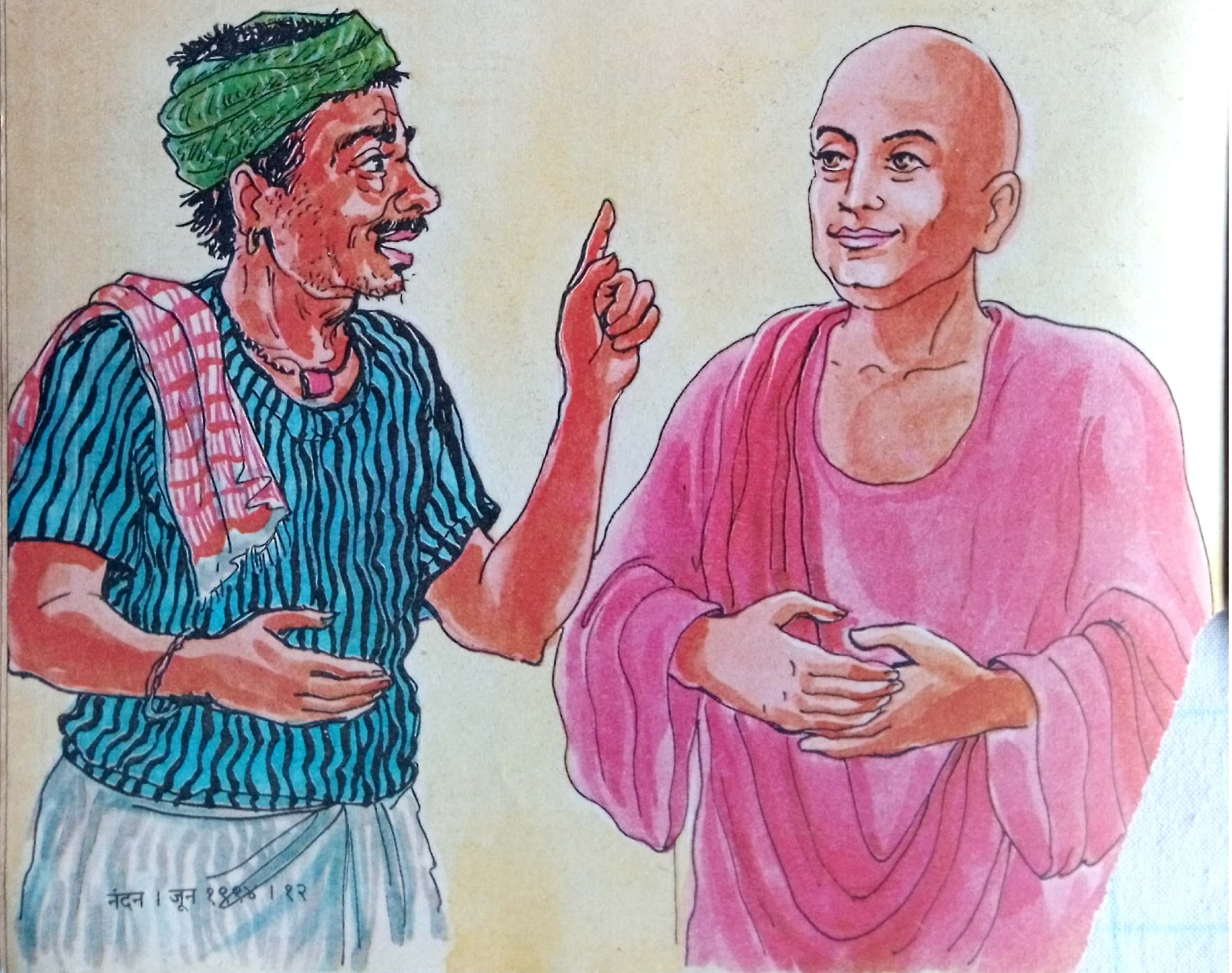
में ही मुझ से मणि मांगते तो भी मैं आनाकानी नहीं करता।'' स्वामी जी बोले।

—''साधु बाबा! तुरंत सुखदा मणि मेरे हवाले करो। मैं यहां से जल्दी जाना चाहता हूं।''

''अरे भाई, मैं तुम्हें देने से कहां मना कर रहा हूं। सुखदा मणि को मैं कुटिया में नहीं रखता। वह चमत्कारी मणि है। बिना तप और साधना किए तुम इससे लाभ नहीं उठा सकते। मेरा कहना मानो और कुछ दिन कुटिया में रहो। विश्वास रखो, तुम खाली हाथ नहीं जाओगे।'' —स्वामी जी ने समझाया।

—''बाबा, यह सब मेरे वश की बात नहीं है। आप सुखदा मणि मुझे जल्दी सौंप दें। उसके बाद मैं देख लूंगा।''

''आज तो मैं भी उस मणि को प्राप्त नहीं कर सकता। उसके लिए तुम्हें पूनम की रात में आना होगा।'' —स्वामी जी ने कहा।

चोर को लगा कि स्वामी जी उसे बहका रहे हैं। स्वामी जी ने कहा— ''विश्वास करो बेटा, मैं तुम्हें सुखदा मणि देना चाहता हूं। पर तुम्हें पूनम की रात में यहां फिर आना पड़ेगा।''

चोर कुछ सोच-विचार कर वहां से चला गया।

पूर्णिमा की रात भी आ गई। चोर रात में स्वामी जी की कुटिया में पहुंचा। स्वामी जी वहां अकेले थे। चोर को देखते ही स्वामी जी बोले— ''आओ बेटा, आओ। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।''

—''अब आप तुरंत सुखदा मणि का पता मुझे बता दें, ताकि उसे लेकर मैं चलता बनूं।''

—''सुखदा मणि के लिए तुम्हें आश्रम से उत्तर दिशा की ओर जाना होगा। जिस जगह भी चंद्रमा का प्रकाश तुम्हारे सिर पर एकदम सीधा पड़ने लगे यानि कि तुम्हारी परछाईं सिमट कर तुम्हारे पैरों पर पड़ने लगे, तुम वहीं खुदाई कर देना। सुखदा मणि तुम्हें मिल जाएगी।''

स्वामी जी के कहे अनुसार चोर तुरंत उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। वह तब तक चलता रहा, जब तक [illegible]द्रमा उसके सिर की सीध में नहीं आ गया। परछाईं सिमटी, उसने उसी स्थान पर खुदाई शुरू कर दी।

काफी देर की खुदाई के बाद भी चोर को मणि नहीं मिली। उसके मन में विचार आया कि कहीं वह गलत जगह तो नहीं खोद रहा है। उसने फिर अपनी परछाईं को देखा। तब तक परछाईं फैल गई थी। वह भटकता हुआ इधर-उधर दौड़-भाग करने लगा। उसने जगह-जगह गड्ढे खोद डाले। हताश होकर वह गुस्से में वहां से स्वामी जी के पास पहुंचा। स्वामी जी के चारों ओर भक्त बैठे थे। वह चिल्ला कर बोला— ''स्वामी जी, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि आप झूठ भी बोल सकते हैं। मैं रात भर परेशान रहा। जगह-जगह गड्ढे खोद डाले, पर सुखदा मणि कहीं भी नहीं मिली।''

स्वामी जी हंस कर बोले— ''बेटा, मैंने झूठ नहीं कहा था। तुम मेरी बात समझे ही नहीं।

"पूर्णिमा की शीतल, प्रकाशमय रात्रि का मतलब ज्ञान का प्रकाश है। इससे मन को संतोष मिलता है।

''यह सुखदा प्रकाश सदा मन में रहने पर तुम अज्ञान रूपी बुरे विचारों को खोद कर एक नहीं, अनेक सुखदा मणि ढूंढ़ सकते हो। तुम यह कर देखो। सुखदा मणि से तुम्हें धन ही नहीं वरन् ऐसे सुखों की प्राप्ति होगी, जो तुम्हें ढूंढ़े से नहीं मिल सकते।''

चोर अब स्वामी जी की बात का मर्म समझा। उसे लगा कि स्वामी जी जिस रास्ते की ओर इशारा कर रहे हैं, सचमुच उस पर चलने से सुख मिलेगा।

यह समझते ही अपने को धिक्कारने लगा।

वह स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा। उसकी आंखों से आंसू बह चले। कांपते स्वर में बोला— ''स्वामी जी, मैंने आज तक अपना जीवन व्यर्थ गंवाया। अंधेरे में ही भटकता रह गया। मुझ पर कृपा करें।''

महात्मा जी ने उसे स्नेहपूर्वक उठाया। मुसकराते हुए बोले— ''पश्चात्ताप के आंसुओं में तुम्हारा पाप धुल गया। मुझे विश्वास है, अब तुम्हें सुखदा मणि अवश्य मिल जाएगी।''

चोर को अंधेरे में प्रकाश दिखाई दे रहा था। ●

हार में जीत

—दिलीपकुमार तेतरवे

अंग प्रदेश में तलवारबाजी की प्रतियोगिता हो रही थी। मगध के राजकुमार चंद्रसेन ने मथुरा के राजकुमार वीरभद्र को छोड़कर अनेक वीरों को हरा दिया था। कल उसका वीरभद्र से अंतिम मुकाबला था। वीरभद्र तलवारबाजी में चंद्रसेन से अधिक अनुभवी और शक्तिशाली था।

चंद्रसेन ने चिंतित स्वर में अपने गुरु प्रचंड से पूछा— "गुरुवर, क्या मैं वीरभद्र को हरा सकता हूं ?"

गुरु प्रचंड ने कहा— "चंद्रसेन, अस्त्र-शस्त्रों के संचालन में शक्ति और अनुभव के अलावा युक्ति का भी महत्व होता है। कल के मुकाबले में तुमको युक्ति से काम लेना होगा। मैंने इसका प्रबंध कर दिया है। तुम्हारे लिए नई करामाती तलवार, ढाल और कवच की व्यवस्था कर दी है।"

चंद्रसेन ने तलवार, ढाल और कवच को देखा। ढाल में हीरा जड़ा था। तलवार चमक रही थी। उसने गुरु से पूछा— "गुरुवर, क्या मैं तलवार, ढाल और कवच का रहस्य जान सकता हूं ?"

गुरु प्रचंड ने बताया— "चंद्रसेन, कल सूर्य देवता तुम्हारी मदद करेंगे। जब तुम मैदान में उतरोगे, तब सूर्य की किरणें तुम्हारी तलवार, ढाल और कवच से टकराकर वीरभद्र की आंखों को चुंधिया देंगी। ऐसी दशा में वीरभद्र तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकेगा। तुम मौका मिलते ही उसे निहत्था कर देना।"

दूसरे दिन चंद्रसेन और वीरभद्र आमने-सामने थे। दोनों एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। अचानक वीरभद्र की आंखें चुंधिया गईं। उसने अपनी आंखें मीच लीं। चंद्रसेन ने मौका पाते ही वीरभद्र की तलवार के दो टुकड़े कर दिए। चंद्रसेन को विजयी घोषित कर दिया गया।

प्रतियोगिता में विजयी होने के बाद चंद्रसेन घमंडी हो गया था। उसके मित्र कृपाचंद्र और पुंगव भी उसके दम्भ को बढ़ाते रहते थे।
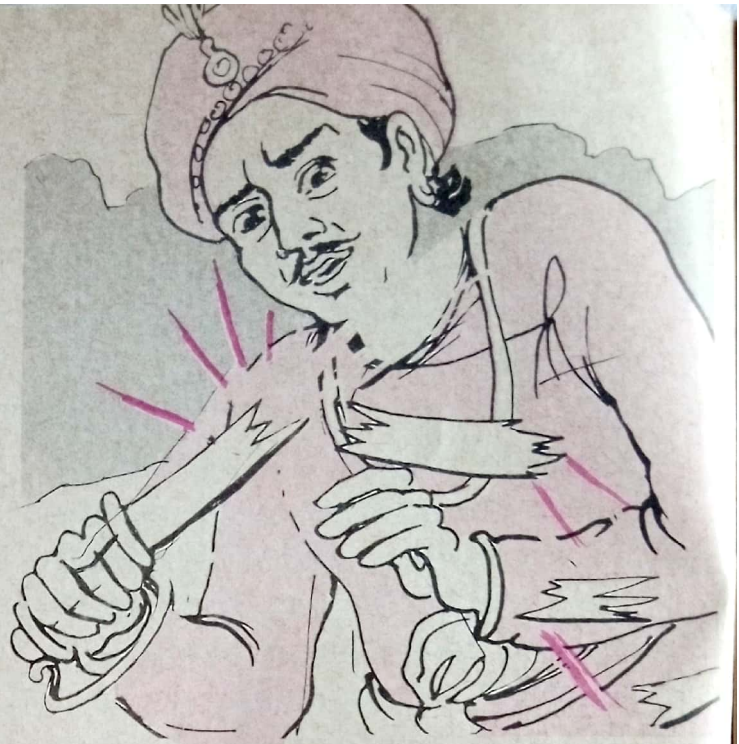
एक दिन कृपाचंद्र ने चंद्रसेन से कहा— "युवराज, वीरभद्र प्रतियोगिता स्थल में प्रवेश करते समय भय से कांप रहा था। आप शेर की तरह वहां उपस्थित थे। आपकी तलवार बिजली की तरह चमकती थी।"

पुंगव ने भी कहा— "युवराज, वीरभद्र तो आपकी आंखों की चमक से डर गया था।"

अपने मित्रों की ऐसी बातें सुनकर चंद्रसेन फूला नहीं समाया।

एक दिन राजकुमार चंद्रसेन से उसके पिता महाराजा विचित्रसेन ने कहा— "मैं चाहता हूं कि तुम मथुरा की राजकुमारी वसुंधरा से विवाह करो।"

चंद्रसेन ने पूछा— "मुझे इस विवाह के लिए क्या करना होगा ?"

विचित्रसेन ने कहा— "चंद्रसेन, राजकुमारी वसुंधरा की शर्त है कि जो राजकुमार उसे तलवारबाजी में हराएगा, वह उसी से विवाह करेगी। तुम मथुरा जाओ और राजकुमारी को तलवारबाजी में हराओ।"

चंद्रसेन ने कहा— "पिता जी, मैं राजकुमारी को तलवारबाजी में अवश्य हराऊंगा। मैं उसके भाई युवराज वीरभद्र को तलवारबाजी की प्रतियोगिता मे

पहले ही हरा चुका हूं ।''

अगले दिन, चंद्रसेन मथुरा को चल पड़ा । उसे वहां काले घोड़े पर सवार एक अन्य राजकुमार दिखाई पड़ा । चंद्रसेन ने अनुमान लगाया— 'यह राजकुमार भी वसुंधरा से विवाह करने के उद्देश्य से मथुरा जा रहा है ।' वह राजकुमार की कोमल काया देखकर हंस पड़ा । उसने कहा— ''ओ पिलपिले राजकुमार, वसुंधरा का सपना देखना छोड़ दे । मैं उससे विवाह करने जा रहा हूं । अपने कमजोर हाथों से तुम तलवार कैसे उठाओगे ? तुम जल्दी ही यहां से नौ-दो ग्यारह हो जाओ , वर्ना तलवार के एक ही वार से मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूंगा ।''

काले घोड़े पर सवार राजकुमार यह सुन, घोड़े से उतर गया । उसने म्यान से तलवार निकाली और राजकुमार चंद्रसेन की ओर देखा ।

काले घोड़े वाले राजकुमार ने कहा— ''अगर तुम्हारी मौत मेरे हाथों होनी होगी, तो भी मैं तुमको नहीं मारूंगा ।''

यह सुन चंद्रसेन क्रोध से पागल हो उठा । दोनों की तलवारें झनक उठीं । चंद्रसेन ने अनेक दांव, पैंतरे ौर युक्तियों का सहारा लिया, पर काले घोड़े वाले कुमार को हरा नहीं पाया । वह उसे हराने की नई सोच ही रहा था कि काले घोड़े वाले राजकुमार ने ऐसा दांव लगाया कि चंद्रसेन की तलवार के कई टुकड़े हो गए । वह जमीन पर गिर गया ।

काले घोड़े वाले राजकुमार ने चंद्रसेन के सीने पर अपनी तलवार टिका दी और कहा— ''आज आकाश में बादल छाए हैं । इसलिए सूर्य देवता तुम्हारी मदद नहीं कर पाए । तुम्हारी तलवार, ढाल और कवच प्रतिद्वंद्वी की आंखें चुंधियाने के लिए हैं । खैर, तुमको किसी ने मुझसे पराजित होते नहीं देखा है । इसलिए शोक मत करो । जाओ, महल में राजकुमारी वसुंधरा तुम्हारा इंतजार कर रही होगी ।'' राजकुमार चंद्रसेन सिर झुकाए घोड़े पर सवार होकर महल की ओर बढ़ चला ।

राजकुमार चंद्रसेन वसुंधरा के महल के द्वार पर पहुंचा । द्वारपाल को अपना परिचय दिया । द्वारपाल उसे महल में ले गया । वहां राजकुमार ने आसन पर काले घोड़े वाले राजकुमार को बैठे देखा, तो हैरान रह गया ।

अपने सिर पर बंधी पगड़ी को उतारते और अपने घुंघराले बालों को खोलते हुए काले घोड़े वाले ने कहा— ''मैं ही राजकुमारी वसुंधरा हूं ।''

राजकुमार चंद्रसेन ने अपना सिर झुका लिया । उसने अपनी चमकदार तलवार, ढाल और कवच राजकुमारी वसुंधरा को सौंपते हुए कहा— ''मेरा दम्भ टूट गया । मैंने तुम्हारे भाई वीरभद्र को प्रतियोगिता में छल से हराया था । मैं तुम्हारा और तुम्हारे भाई का अपराधी हूं । मुझे उचित सजा दी जाए ।''

वसुंधरा ने कहा— ''तुम्हारी सजा यही है कि तुम ईमानदारी से श्रेष्ठ तलवारबाज बनकर एक वर्ष के अंदर मेरे सामने उपस्थित होओ ।''

चंद्रसेन ने पूछा— ''क्या तुम मुझे अपने गुरु का नाम बता सकती हो ?''

वसुंधरा ने कहा— ''हां, क्यों नहीं ? मेरे गुरु राजकुमार वीरभद्र हैं ।''

चंद्रसेन राजकुमारी वसुंधरा के महल से निकल कर वीरभद्र के महल में पहुंचा । और उसने वीरभद्र को अपना गुरु बनने के लिए राजी कर लिया । ●
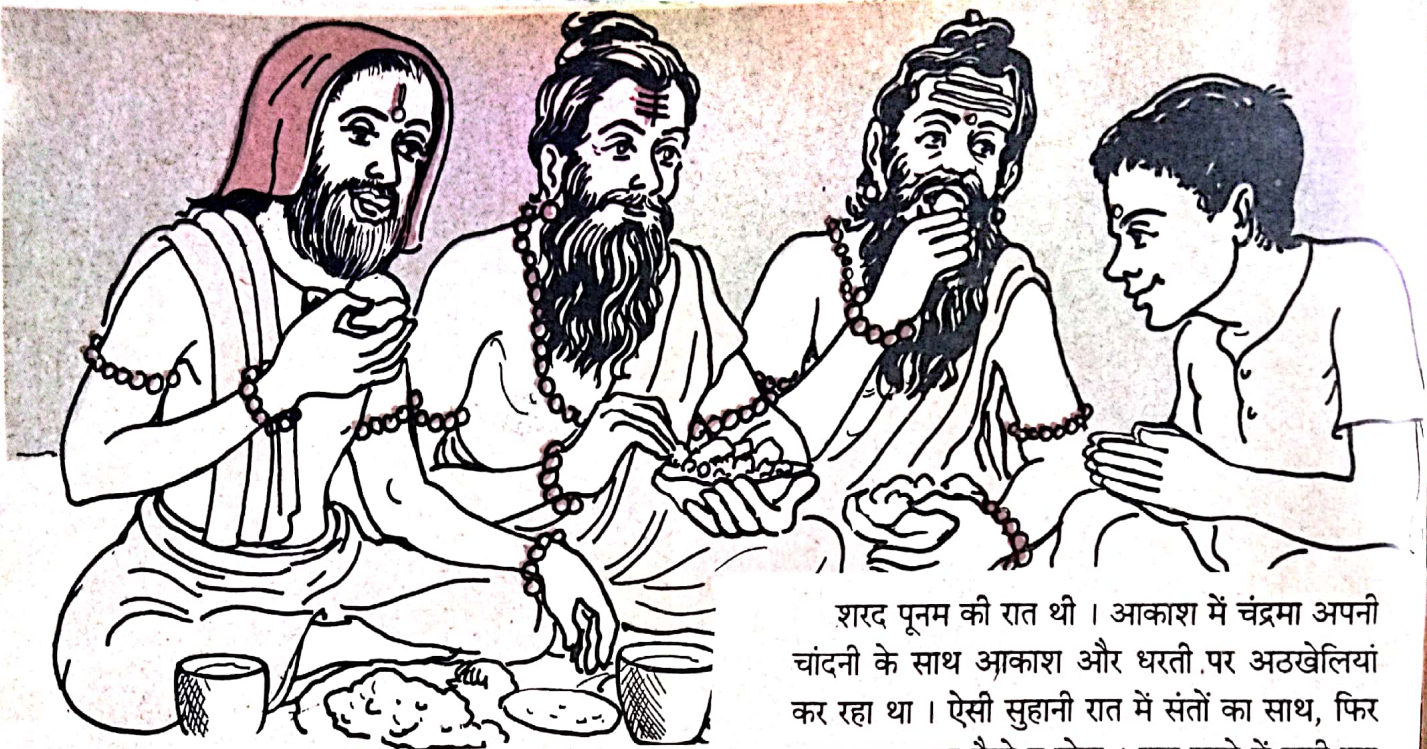
वीरो भगत

—हेमंतकुमार चावड़ा

किसी समय गुजरात में मच्छु नदी के किनारे लुनसरिया नाम का एक गांव था। वहां वीरो भरवाड़ नाम का एक गरीब आदमी रहता था। वह गांव की गायें चराकर अपनी गुजर-बसर किया करता था।

वीरो सुबह से ही गांव के जानवरों को जंगल ले जाता था। गाय, भैंस जंगल में चरतीं और वीरो पेड़ की छाया में बैठ, राम नाम जपता रहता।

जैसा वीरो, वैसी ही उसकी पत्नी भी थी। वह गरीबी में भी संतोष मानकार अपनी गृहस्थी चलाती थी। खुद खेतों में मजदूरी किया करती थी। शाम के समय जब वीरो जंगल से लौटता, तो रास्ते में जो भी साधु-संत मिलते, उन्हें अपने घर लाता। उनकी सेवा करता। उनके साथ देर रात तक भजन-कीर्तन करता था।

एक बार वीरो शाम के समय घर आ रहा था, तो उसे रास्ते में संतों की मंडली मिल गई। वीरो पूरी मंडली को अपने घर ले आया। प्रेम पूर्वक उसने सबको भोजन कराया।

शरद पूनम की रात थी। आकाश में चंद्रमा अपनी चांदनी के साथ आकाश और धरती पर अठखेलियां कर रहा था। ऐसी सुहानी रात में संतों का साथ, फिर भला रास गरबा कैसे न होता। रास गरबे में सारी रात कैसे बीती, वीरो को पता भी न चल पाया।

लेकिन जब वीरो का जंगल में जाने का समय आया, तो वह अपनी पत्नी से बोला—"सुनती हो जी, संत मंडली को बिना खाए-पिए जाने मत देना। मैं गाय चराने जा रहा हूं। हो सके तो मेरा खाना जंगल में ले आना।"

तब एक संत बोले—"अरे भगत, इस तरह कोई जाता है क्या ? हमारे साथ प्रसाद लेकर जाना।"

वीरो ने उस संत को नम्रता से जवाब दिया—"महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। अगर मैं यहां रुक गया, तो सारे जानवर जंगल में चले जाएंगे और खेतों का नुकसान भी करेंगे।"

संत बोले—"भगत, यदि हमारे साथ प्रसाद लिए बगैर ही तुम्हें जाना हो, तो हम भी नहीं रुकेंगे।" इसके बाद सारे संत हठ करने लगे।

यह सुन, वीरो निराश हुआ। वह सोचने लगा—'यदि संत मंडली बिना प्रसाद लिए और बिना भोजन किए चली जाएगी, तो यह अधर्म होगा। लेकिन यदि मैं यहां इनके साथ रह जाऊं, तो वहां सारे जानवर खेतों में फसल को नष्ट करेंगे ! मैं क्या करूं ?'

वीरो को चिंता में देख, उसकी पत्नी बोली—

संतों का आग्रह है तो रुक जाइए। जब हम भगवान के भरोसे जी रहे हैं तो वह भी हमारी मदद करेगा।''

पत्नी की बात सुनकर वीरो भगत रुक गया।

उधर वीरो के न आने पर गांव के जानवर लावारिस की तरह खेतों में फसलों का नुकसान करने लगे। यह देख, सारे किसान बापू (जमींदार) के पास जाकर शिकायत करने लगे।

—''बापू, वीरो जानवरों की देख-भाल ठीक से नहीं कर रहा है। सारे जानवर खेतों में घुसकर फसल नष्ट कर रहे हैं।''

''ठीक है! तुम सब जाओ। मैं अभी वीरो की खबर लेता हूं।''—बापू बोले।

बापू घोड़ी पर बैठ कर खेतों की ओर चल पड़े। बापू को देख, वीरो को आश्चर्य हुआ। वह खुशी से बोल उठा—''पधारिए बापू, पधारिए। मेरे तो भाग्य खुल गए जो आप यहां आए।'' बापू जब पास आए, तब वीरो ने उन्हें बैठने के लिए अपना कम्बल फैलाया।

बापू उस पर बैठ गए। फरियादियों की बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने खेतों पर नजर डाली। वह मन ही मन सोच रहे थे—'अजीब बात है! यहां तो सब ठीक है। वीरो मेरे सामने खड़ा है। जानवरों की देखभाल भी कर रहा है।''

बापू बोले—''वीरो, आज तो मुझे जोरों की भूख लगी है। कुछ है तेरे पास खाने के लिए!''

वीरो ने कहा—''हां बापू, आपके आशीर्वाद से खाना है...''

वीरो ने अपने खाने की पोटली खोली। बापू ने खाना खाया। इसके बाद बापू घोड़ी पर बैठकर गांव की ओर चल पड़े।

गांव की सीमा के पास वीरो को गांव से आता देख, बापू को आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन बोले—'अभी तो जंगल में वीरो को जानवर चराते है। फिर यह गांव से आता हुआ दूसरा वीरो है?' जैसे ही वीरो पास आया, बापू बोल 'वीरो, तू यहां कैसे? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। लोगों की शिकायत पर मैं जंगल गया, पर वहां भी मैंने वीरो को देखा। उसका दिया हुआ खाना भी खाया। फिर यह दूसरा वीरो कहां से आ गया!''

वीरो बोला—''बापू, वह वीरो मेरा भगवान...''

यह कहते हुए वीरो की आंखों से आंसू बहने लगे।

उसी पल वीरो भगत घर लौटा। उसने अपनी पत्नी से सारी बातें कहीं। अब वीरो भगत अपनी पत्नी के साथ सामान बांध, दूसरे गांव जाने लगा।

यह देख, बापू बोले—''क्यों वीरो भगत, कहां जा रहे हो?''

—'भगवान जहां ले जाए।''

—''क्यों, यहां क्या हो गया?

—''बापू, यहां मेरे कारण भगवान को ग्वाला बनना पड़ा। यह बात जब सारे संसार में फैल जाएगी, मुझसे सहन नहीं होगा। अब तो भगवान की मर्जी, वह जहां ले जाए, वहां जाऊंगा।''

यह सुनते ही बापू और गांव वाले उसके रास्ते पर लेट गए। बोले—''वीरो भगत, जाना है तो हमारी पीठ पर पैर रखकर जाओ।''

आखिर वीरो भगत को उनकी बात माननी पड़ी, लेकिन वीरो नदी के उस पार केराड़े गांव में रहने चले गए। इस तरह वीरो भगत की बात रह गई और गांव वालों की भी।

वीरो भगत ने केराड़े गांव में ही प्राण त्यागे। आज भी वहां वीरो भगत की समाधि के दर्शन किए जा सकते हैं। ●

निकलो घर से

—विभावरी सिन्हा

हरिकेश नाम का एक प्रसिद्ध यक्ष था। उसके पिता थे पूर्णभद्र। हरिकेश बहुत ही प्रतापी, ब्राह्मण भक्त तथा धर्मात्मा था। जन्म से ही उसकी भगवान शिव के प्रति असीम आस्था थी। वह दिन-रात शिवजी के ध्यान में डूबा रहता था।

पिता पूर्णभद्र को यह सब अच्छा नहीं लगता था।

जब हरिकेश की शिवभक्ति दिनोंदिन बढ़ने लगी तो पूर्णभद्र से नहीं रहा गया। एक दिन उन्होंने हरिकेश से कहा—"बेटा! तुम हर वक्त भगवान की पूजा पाठ व ध्यान में ही क्यों लगे रहते हो? तुम हमारे कुल के विपरीत काम क्यों करते हो? यह सब तुम्हें शोभा नहीं देता।"

एक दिन सदा की तरह हरिकेश शिव के ध्यान में डूबा था। उसे देख, पूर्णभद्र का पारा चढ़ गया। क्रोधित होकर बोले—"यदि तुम अपना व्यवहार नहीं छोड़ सकते, मेरा कहा नहीं मान सकते, तो इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है।"

पिता के ऐसे कठोर वचन सुन, हरिकेश जरा भी विचलित नहीं हुआ। वह अपने सभी सगे-संबंधियों तथा घर-द्वार को त्यागकर निकल पड़ा।

इधर जब पूर्णभद्र का क्रोध शांत हुआ, तब उसे लगा, जैसे उसने ठीक नहीं किया। उसने तुरंत अपने पुत्र की खोजबीन शुरू कर दी। नगर-नगर, देश-विदेश सभी जगहों पर ढूंढ़ा, पर हरिकेश का कहीं कोई पता नहीं चला। धीरे-धीरे न जाने कितने वर्ष बीत गए।

एक दिन भगवान शिव पार्वती के साथ संसार का भ्रमण करते हुए पुण्य नगरी वाराणसी के निकट पहुंचे। वहां की सुंदरता देखकर पार्वती से रहा नहीं गया। उन्होंने भगवान शंकर से कहा—"नाथ! मनोहारी वन-उपवन से घिरी इस नगरी की सुंदरता तो देखते ही बनती है। मैं आपके साथ यहां घूमना चाहती हूं। यह नगरी आपको भी तो बहुत प्रिय है।" पार्वती की इच्छा तथा आग्रह देखकर भगवान शंकर पार्वतीजी को वाराणसी के उद्यानों में घुमाने लगे। फलों से पेड़ लदे थे। टहनियां सुंदर रंग-बिरंगे फूलों के भार से झुकी जा रही थीं। छोटे-छोटे सुंदर तालाबों में कमल खिले थे। कहीं भौरों का गुंजन, कहीं मोर का नृत्य। तालाबों में हंस तैर रहे थे।

दोनों घूमते हुए एक विशेष स्थान के पास आ पहुंचे। पार्वती ने भगवान शिव से कहा—"आपने यहां की सुंदरता तो दिखा दी, लेकिन वाराणसी क्षेत्र के गुणों व उसके महत्व के बारे में नहीं बताया। यह स्थान किसलिए प्रसिद्ध तथा पवित्र माना जाता है, कृपा करके यह भी बता दें।"

शिवजी ने बताया—"यह क्षेत्र मुझे बहुत प्रि[illegible] है। यहां सभी प्राणियों को ज्ञान एवं मोक्ष की प्रा[illegible] होती है। जैगीषव्य मुनि यहां सिद्धि प्राप्त कर[illegible] हैं। महायक्ष कुबेर—जिन्होंने इस स्थान पर मुझमें ध्यान लगाकर कठिन तप किया था, [illegible] की सिद्धि प्राप्त हुई थी।"

बातें करते-करते शिव-पार्वती एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां कोई महान योगी एक हजार वर्ष से तपस्या में लीन थे। तपस्वी का शरीर हड्डियों से बना ढांचा रह गया था। तपस्वी को ऐसी हालत में देखकर पार्वती से नहीं रहा गया। उन्होंने शिवजी से पूछा—"नाथ ! यह तपस्वी कौन है ? इनकी ऐसी हालत क्योंकर हुई ?"

भगवान शिव ने बताया—"यह यक्ष कुल में जन्मा मेरा परम भक्त है। वर्षों तक मेरा कठिन तप करने के बाद अब मुझसे वर पाने का अधिकारी हो गया है।" वह तपस्वी और कोई नहीं, यक्ष हरिकेश ही था, जो वर्षों पहले पिता के कहने पर घर छोड़कर चला आया था।

पार्वती ने पुनः उस शिवभक्त की ओर देखा। बोली—"भगवन् ! घोर तपस्या में लीन इस परम भक्त का कष्ट देखकर भी आपने इसे अभी तक वर क्यों नहीं दिया ? आखिर ऐसी कठोरता क्यों !"

भगवान शिव मुसकराए। वह तो यही चाहते थे और इसी कारण पार्वती के साथ इस स्थान पर आए थे। बस, वर देने की बात पार्वती के मुंह से सुनना चाहते थे। पार्वती की बात से सहमति प्रकट करते हुए वह जैसे ही हरिकेश के निकट गए, हरिकेश उनके चरणों पर गिर पड़ा। शिव की कृपा से उसका जर्जर शरीर स्वस्थ बन पहले जैसी ही स्थिति में हो गया। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—"पुत्र ! मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूं। मांगो, क्या चाहते हो ?"

हरिकेश हाथ जोड़कर विनीत स्वर में बोला—"भगवन् ! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो मेरे मन में सदा आपकी अटल भक्ति व आस्था बनी रहे। मैं हमेशा आपका प्रिय रहूं। मुझे सिद्धि, ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्त हो जाए। मैं लोकों का अन्नदाता व गणों का अध्यक्ष तथा सभी सुखों का स्वामी बनूं।"

भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उसे वैसा ही वर देते हुए 'तथास्तु' कहा और पार्वती के साथ अंतर्धान हो गए।

(मत्स्य पुराण)

अधूरी रचना

—श्रीनिवास वत्स

कल्याणी के राजा इंद्रसेन विद्वानों का बहुत आदर करते थे। वह स्वयं भी शास्त्रों के ज्ञाता थे। वह नए-नए ग्रंथों को स्वयं पढ़ते। जो ग्रंथ उन्हें अच्छा लगता, वह उसके लेखक को पुरस्कार भी देते थे।

वहीं हरिदेव नामक एक ब्राह्मण रहता था। परिवार में पत्नी सुजाता और एक पुत्र था गोपाल।

एक बार इंद्रसेन ने हरिदेव को राजमहल में बुलाकर कहा— "विप्र ! आप नीतिशास्त्र पर एक ग्रंथ लिखें। ग्रंथ पूरा होने पर आपको पुरस्कार स्वरूप दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी।"

अगले ही दिन हरिदेव ने पूजा-अर्चना के बाद ग्रंथ लेखन का कार्य शुरू कर दिया।

अभी पांच दिन ही बीते थे, एक रात अचानक सुजाता की तबीयत खराब हो गई। हरिदेव ग्रंथ को छोड़कर वैद्य को बुलाने गया। पर जब वह लौटा, तो सुजाता मर चुकी थी। हरिदेव को बहुत आघात पहुंचा। अब गोपाल की देखभाल का भार उस पर ही आ गया। इस कारण लेखन कार्य भी रुक गया था।

एक दिन एक मित्र ने हरिदेव को दूसरा विवाह करने की सलाह दी।

हरिदेव को मित्र की सलाह पसंद आई। उसने

अनुराधा नाम की कन्या से विवाह कर लिया।

अनुराधा शक्ल-सूरत से सुंदर थी, पर उसका स्वभाव अच्छा न था। वह जब-तब गोपाल को डांट देती। हरिदेव ने एक-दो बार अनुराधा को समझाया। पर अनुराधा कहती— "अधिक लाड़-प्यार करने से बच्चे बिगड़ जाते हैं। इसलिए मैं समय-समय पर गोपाल को डांटती रहती हूं। ताकि वह बिगड़ न सके।"

हरिदेव चुप हो गया। वह नीतिशास्त्र के लेखन में व्यस्त रहने लगा। आलस्य के कारण अनुराधा पति का ध्यान भी नहीं रखती थी।

गोपाल पिता की सेवा करना चाहता था। पर अनुराधा उसे पिता के पास जाने से रोक देती थी। गोपाल मन मसोस कर रहा जाता। पर जब सौतेली मां सो जाती, तो वह चुपचाप पिता के पास बैठ जाता और पिता द्वारा लिखे हुए पृष्ठों को पढ़ता।

अभी एक चौथाई ग्रंथ ही पूरा हुआ था कि हरिदेव भी चल बसा। अब तो गोपाल पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। सौतेली मां ने उसे घर से निकाल दिया। गोपाल अपने पिता द्वारा लिखे पृष्ठों को साथ ले जाने लगा। अनुराधा ने वे पृष्ठ भी उससे छीन लिए। वह गोपाल को डांटती हुई बोली— "मैं ये पृष्ठ लेकर राजमहल में जाऊंगी और राजा से पुरस्कार प्राप्त करूंगी।" गोपाल उदास होकर चला गया।

एक दिन अनुराधा अधूरे ग्रंथ को लेकर राजमहल पहुंची। उसने राजा से कहा— "महाराज, मेरे पति का देहांत हो गया है। अब यह ग्रंथ पूरा नहीं हो पाएगा। आप अधूरे ग्रंथ पर ही मुझे पुरस्कार की धन राशि देने की कृपा करें।"

इंद्रसेन बोले— "देवी ! ग्रंथ अधूरा है, इसलिए पूरी धन राशि नहीं दी जा सकती। मैं तुम्हें कुछ धन दक्षिणा में देता हूं।"

राजा ने अनुराधा को एक सौ स्वर्ण मुद्राएं दे दीं। पुस्तक के पृष्ठ भी उसे लौटा दिए।

उधर विमाता द्वारा घर से निकाल दिए जाने पर गोपाल एक नदी के किनारे जाकर बैठ गया। थोड़ी देर लहरों को देखता रहा। वह मन ही मन कुछ बुदबुदा रहा था।

उसी समय आचार्य अक्षयेंद्र अपने कुछ शिष्यों के साथ उधर से गुजरे। गोपाल अपने में खोया था।

आचार्य ने गोपाल से पूछा— "बेटा ! तुम किससे बातें कर रहे हो ?"

"स्वयं से।" —गोपाल ने उत्तर दिया।

शिष्य हंस पड़े। पर आचार्य गम्भीर हो गए। वह जानते थे कि विद्वान ही स्वयं से बातें कर सकता है। उन्होंने गोपाल से कहा— "चलो, तुम मेरे साथ चलो।"

गोपाल हंसा। बोला— "जब मां-बाप ही मुझे अपने साथ नहीं ले जा सके, तो और कौन मुझे अपने साथ ले जा सकता है ?"

यह सुन, आचार्य ने गोपाल से कहा— "वत्स ! मैं एक ग्रंथ की रचना कर रहा हूं। तुम हमारे आश्रम में चलो।" मैं वहां तुम्हारी प्रतिभा का पूरा सम्मान करूंगा।"

आचार्य के कहने पर गोपाल उनके साथ आश्रम में आ गया। अक्षयेंद्र ने उसे वर्षों पढ़ाया। गोपाल विद्वान बन गया। उसकी प्रतिभा देख, सब वाह-वाह कर उठते थे।

एक दिन महाराज इंद्रसेन आचार्य अक्षयेंद्र के आश्रम में आए। वह आचार्य द्वारा लिखे नए ग्रंथ को पढ़ना चाहते थे। आचार्य ने इंद्रसेन को गोपाल से मिलवाया।

गोपाल की विद्वत्तापूर्ण बातें सुनकर राजा बहुत खुश हुए।

राजा ने पूछा तो उसने कहा— "मैं हरिदेव का पुत्र हूं।"

राजा ने कहा— "हे युवा विद्वान ! आप नीतिशास्त्र का वह ग्रंथ पूरा करें जिसे आपके पिता अधूरा ही छोड़कर चल बसे थे।"

गोपाल बोला— "पिता के अधूरे कार्य को पूरा कर मुझे बहुत खुशी होगी। आप पिता के अधूरे ग्रंथ के पृष्ठों को मुझे विमाता से दिला दें।" राजा ने
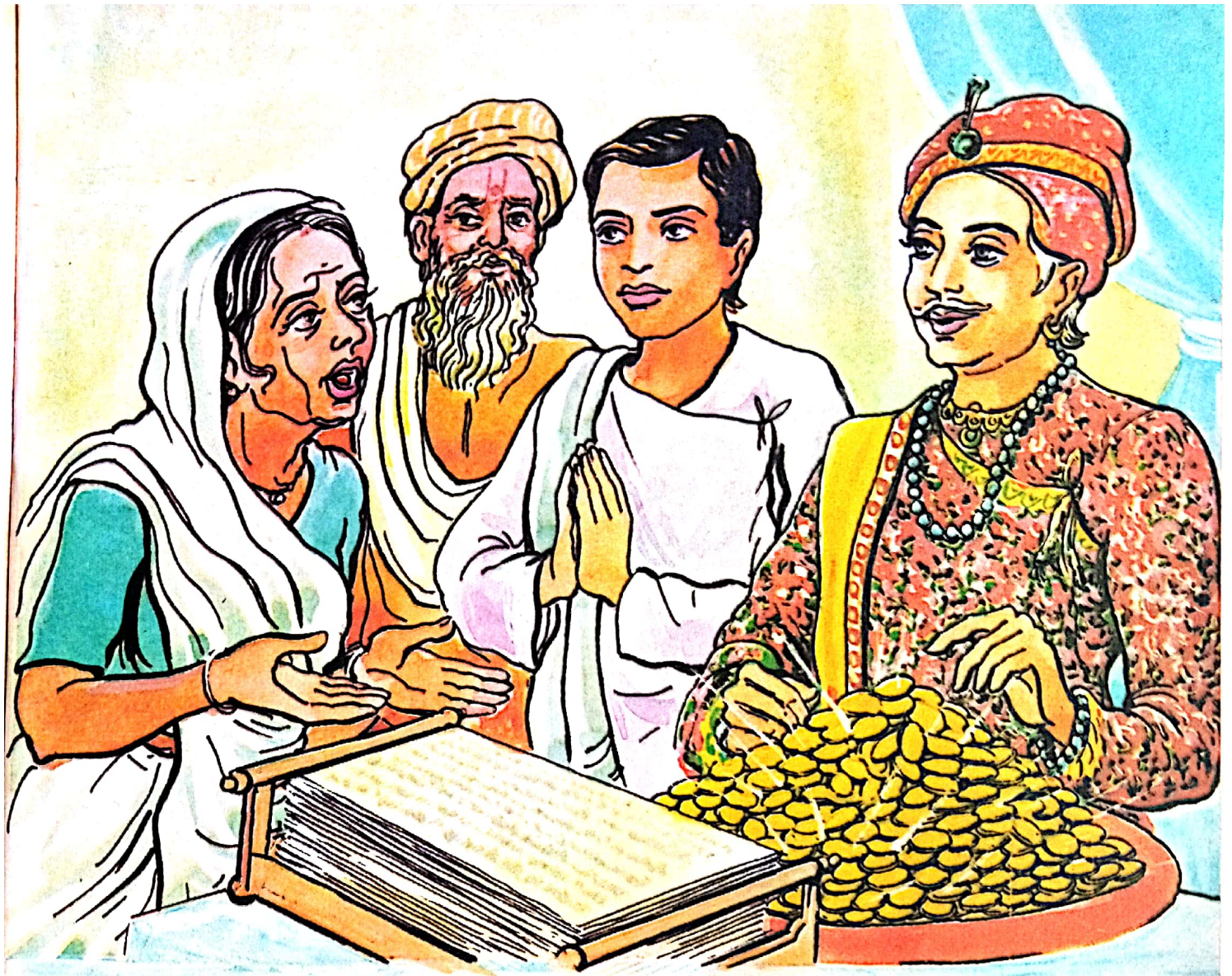
आश्वस्त कर महल की राह ली।

राजा ने सैनिक भेजकर अनुराधा के घर से ग्रंथ के पृष्ठ मंगवा लिए। उन्हें गोपाल को सौंपते हुए कहा— "अब आप ग्रंथ पूरा करें। मैं आपको पुरस्कार में दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दूंगा।"

गोपाल ने ग्रंथ लिखना प्रारंभ कर दिया। चार वर्ष के कठोर परिश्रम के बाद ग्रंथ पूरा हुआ।

गोपाल ने ग्रंथ आचार्य को दिखाया। आचार्य ने ग्रंथ को पढ़ा। बोले— "बेटा! तुम्हारी रचना अनमोल और श्रेष्ठ है। महाराजा इंद्रसेन अवश्य इसे पढ़कर प्रसन्न होंगे।"

अगले दिन आचार्य और गोपाल नीतिग्रंथ ो ले राजदरबार पहुंचे। दरबारियों के बीच राजा ने का स्वागत किया।

आचार्य ने ग्रंथ के बारे में विस्तार से वहां सबको बताया। इंद्रसेन ग्रंथ को देख बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मंत्री से कहा— "गोपाल को दस की बजाय ग्यारह सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दे दो। मैं चाहता हूं कि गोपाल आगे भी हमारे लिए ऐसी ही पुस्तकें लिखे।"

जब अनुराधा को यह पता चला तो वह दौड़ी-दौड़ी राजदरबार में आई। गोपाल से अपने किए अपराध की क्षमा मांगने लगी।

गोपाल ने कहा— "आप मेरी मां हैं। मुझे आशीर्वाद दीजिए। आपकी डांट-फटकार से ही मैं यह ग्रंथ पूरा कर सका हूं।"

यह सुन, अनुराधा ने बेटे को गले से लगाया। उधर सब गोपाल की जय-जयकार करने लगे। ●

पिलानी में एक दिन

बिरला हवेली : दीवारों पर चित्र
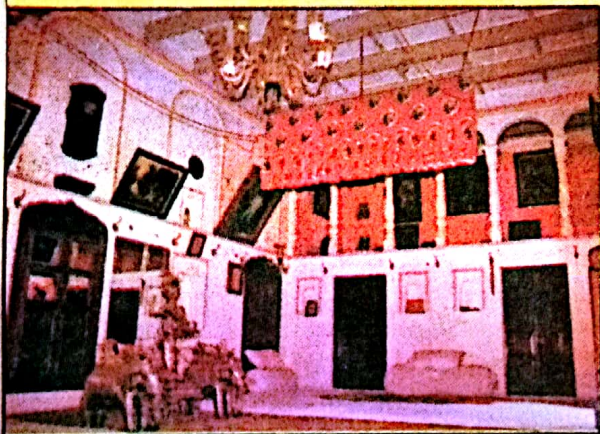
हवेली में गद्दी
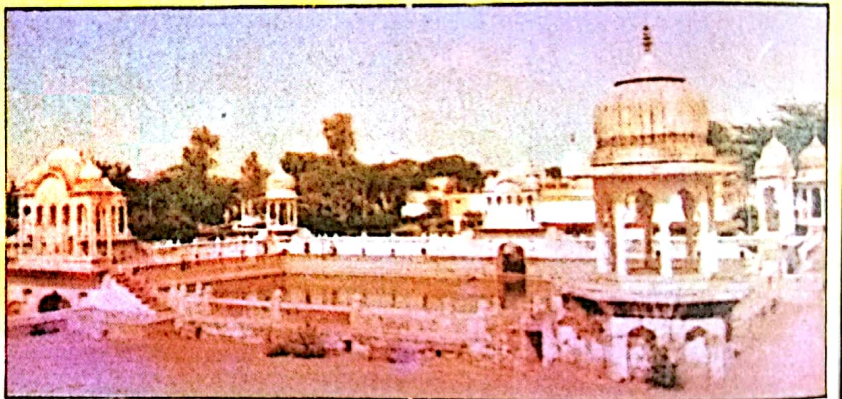
तालाब

पंचवटी का एक दृश्य

शिव गंगा नहर
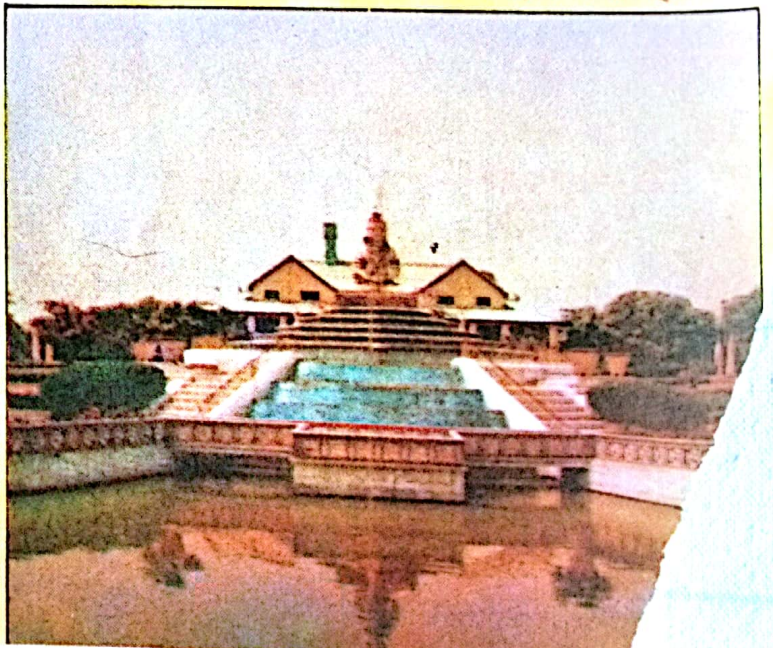
म्यूजियम के बाहर प्रतिमा ।
पीछे बिरला इंस्टीट्यूट आफ
टेक्नॉलाजी एंड साइंस

बिरला संग्रहालय
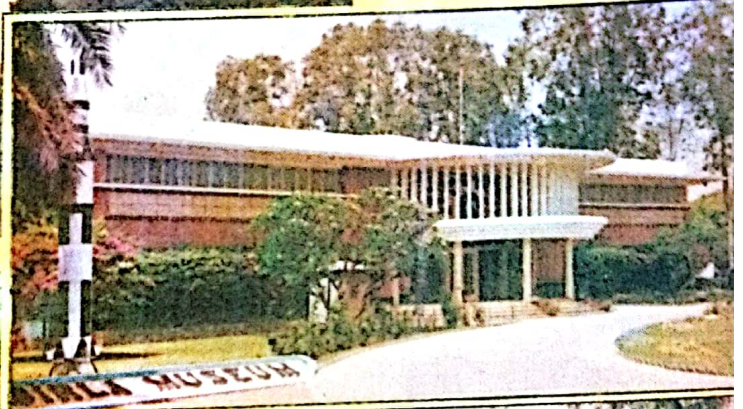
बिरला पब्लिक स्कूल

बिरला बालिका विद्यापीठ

जी.डी. बिरला मैमोरियल
पॉलिटेकनिक

जी.डी. बाबू का
वायुयान

मधुर यादें

पूज्य काकोजी

बसन्त कुमार बिरला

पुरानी से पुरानी मेरी याददाश्त सोलन की है, जब मैं साढ़े चार साल का था। मां की तबीयत खराब थी। शिमला के पास सोलन एक सुंदर स्थान है। वहां का मौसम व हवा-पानी बहुत अच्छा माना गया था। मां के साथ हम सब भाई-बहन, पू. बड़े भाईजी, चंद्रकला बाई, भाई कृष्ण, अनुसूया, शांति तथा मैं—सोलन गए। चार-पांच महीने सोलन-शिमला में रहे।

सोलन में दो मकान किराए पर लिए—महेश विला और पुंज विला। एक मकान ऊपर था, दूसरा डेढ़ सौ-दो सौ फीट नीचे। मकानों के पास एक छोटी-सी पहाड़ी थी। पंडित उदित मिश्र जी के साथ हम लोग वहां रोज जाते थे। पहाड़ी के ऊपर चढ़ जाते। डेढ़-दो घंटे तक पढ़ते-लिखते, खेलते-कूदते। पूज्य काकोजी पहाड़ी के नीचे घूमते। उन्हें देखते ही हम लोग प्रफुल्लित हो जाते। ऊपर से पुकारते—"का...को...जी..." वापस उनका उत्तर आता—"कृष्ण...जी, बसंत...जी।" प्रायः रोज ही यह क्रम रहता, पर मेरे लिए तो यह नित-नूतन आनंद था। यह दृश्य आज तक साफ-साफ याद है।

बचपन की बातें अनोखी होती हैं—सबसे निष्कपट प्रेम, मन में आनंद और संतोष। सोलन में मैंने कई भाई बनाए। बचपन की वह माया! पहाड़ भाई, वृक्ष भाई, जंगल भाई, कुत्ता भाई! सबसे प्रेम।

पूज्य काकोजी का जन्म शुभ संवत् १९५१, चैत्र शुक्ल नवमी, शुक्रवार तदनुसार सन् १८९४ में रामनवमी के पावन दिवस हुआ। कैसा मंगल मुहूर्त! बचपन पिलानी में बीता। पढ़ाई-लिखाई मामूली सी—हिंदी, गणित, पहाड़े तक सीमित। पहली शादी कुमारी दुर्गादेवी से १३ वर्ष की उम्र में। बारात में १००० व्यक्ति गए। खूब धूमधाम से शादी
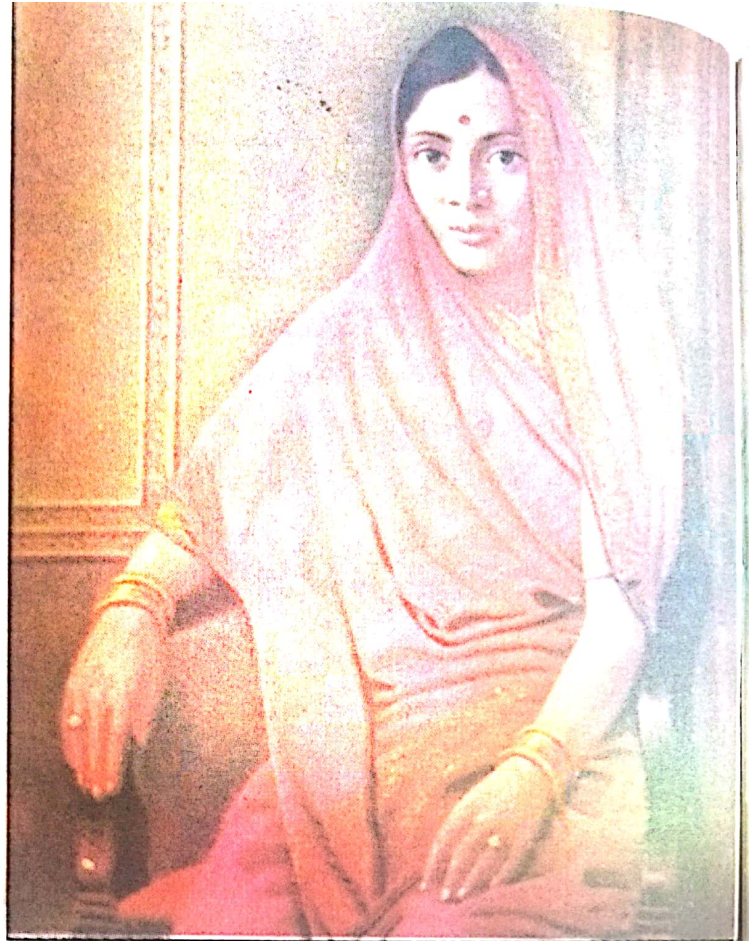
मां महादेवी

हुई। इस शादी से एक संतान—पूज्य भाई लक्ष्मीनिवास जी। शादी के प्रायः चार वर्ष बाद पूज्य मां का स्वर्गवास। दूसरी शादी कुमारी महादेवी से—काकोजी १८ वर्ष के। इस शादी से पांच संतानें—चंद्रकला बाई, भाई कृष्ण, मैं, अनुसूया बाई और शांति बाई। मां का स्वर्गवास हुआ, १३ फरवरी, १९२६ को ओखला में।

सन् १९१० के आसपास काकोजी कलकत्ता आ गए थे। शुरू में जब अकेले आते थे, तो १८ मल्लिक स्ट्रीट स्थित एक तल्ले पर गद्दी में रहते थे। यह गद्दी अभी तक अपने पास है—भाड़े पर। फिर चौरंगी तथा मेफेयर स्थित अपने मकानों में तीन-चार साल रहे। वहां पर मां को पिलानी से बुलाया। सन् १९१५ के आसपास ६ नं. रैनी पार्क खरीदा। उस समय यह स्थान कलकत्ते के बाहर ही था। इसके आसपास बहुत कम मकान थे। इस मकान के साथ काफी जमीन थी। मेरा जन्म इसी मकान में हुआ था।

इस मकान में मां बहुत प्रसन्न थीं। मां की जिंदगी का सबसे अच्छा समय इसी मकान में बीता। पिलानी की हवेली के बाद अपना यह मकान-आधुनिक सुविधाओं के साथ। हवेली में स्नानागार, शौचालय आदि कमरों से काफी दूर तथा सामूहिक थे। कमरों में हवा और रोशनी का अभाव रहता। पिलानी में बिजली नहीं थी। उस समय हवेली के पास पेड़-पौधे-बगीची उगाने की प्रथा भी नहीं थी। रैनी पार्क के मकान में ये सब सुविधाएं—बिजली, टेलीफोन का भी प्रबंध। पूरी स्वतंत्रता। पूज्य काकोजी, मां को इस मकान में कितना आनंद मिला होगा। उस समय तो यह मकान पूज्य काकोजी तथा खासकर मां को 'स्वर्ग का एक छोटा-सा टुकड़ा' ही लगा होगा।

एक आलीशान मकान की योजना। नक्शे प्रायः खुद ही बनाए। एक बंगाली फर्म एन. गुइन को इंजीनियरिंग के लिए रखा। एक-एक भाई के लिए तीन-तीन कमरे, दो-दो स्नानागार तथा एक लम्बे वरांडे की व्यवस्था। मकान बाहर से बहुत सुंदर, भव्य बनाया—विक्टोरियन स्टाइल में। सन् १९२३ में मकान तैयार हुआ। पूज्य काकोजी, पूज्य मां तथा परिवार के और सब सदस्य इस मकान में आए—कितना आनंद आया होगा। पिलानी की हवेली से यह महल।

महामना मालवीय जी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे। एक बड़ी मीटिंग की। ३०-३५ राजा-महाराजा, जमींदार तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों को बुलाया। पूज्य मालवीय जी का काकोजी से प्रेम था। वह भी आए। मालवीय जी ने बड़ा अच्छा भाषण दिया। चंदा इकट्ठा करने का प्रस्ताव रखा तथा हरेक व्यक्ति से पूछकर, उसी मीटिंग में चंदे की घोषणा। पूज्य काकोजी की बारी आई। मालवीय जी ने उनसे पूछा। उनको एक लाख रुपयों की उम्मीद थी। चंदा देने वालों में सबसे ऊंचा नाम ग्वालियर नरेश का था—३ लाख के चंदे का। काकोजी उदार तो थे ही। जोश आया। सोचा, क्यों न सबसे ऊंचे चंदे का मुकाबला करूं। मालवीय जी को आश्चर्य और प्रसन्नता। माइक पर घोषणा की—'हिंदुस्तान के एक बड़े विख्यात उद्योगपति तथा दानी श्री घनश्यामदास जी बिरला ने तीन लाख रुपए देने का वायदा किया है।' सब राजा-महाराजा अवाक् रह गए। यह कौन व्यक्ति है, जो हमसे होड़ कर रहा है। किसकी इतनी शक्ति है कि तीन लाख रुपए दे सकता है? मीटिंग खत्म हुई। ग्वालियर नरेश की इच्छा कि काकोजी से मिलें। मालवीय जी ने परिचय कराया। इसके पश्चात् दोनों में बड़ा मेल-जोल हो गया। महाराजा साहब की प्रेरणा से ही मिल की स्थापना ग्वालियर में की।

काकोजी को हम लोगों की कितनी चिंता रहती थी। जब कभी विदेश में साथ रहते—उनको चिंता रहती कि मैं शाम के ६ बजे के बाद बाहर घूमने के लिए नहीं जाऊं। यूरोप में मई-जून में अंधेरा रात ९ बजे के बाद ही होता है। दिन भर काम करने के बाद मैं साढ़े पांच बजे शाम को घूमने के लिए जाता। काकोजी को यह बिलकुल नापसंद। मैं भी जिद्द करता—"काकोजी, मैं ६० वर्ष का हो गया—जुग इतनी छोटी जगह है कि मैं खो जाने की चेष्टा भी करूं तब भी खो नहीं सकता। यहां पर इतनी शांति है कि झगड़ा-फिसाद, मारपीट कभी नहीं होती। अंधेरा अभी तीन घंटे नहीं होगा। शाम के खाने का समय ७ बजे का है। मैं ६.४५ तक वापस आ जाऊंगा।"

मेरी पत्नी से कहते—"बसंत मेरी बात कोनी मानै, जिद्द करै है। अच्छा तो पौणे सात बजे तक पक्काई से वापस आ जाए। गलती मत करिए—हां कुणसै रास्ते सै जावैगो और कुणसै रास्ते से वापस आवैगो?" सवा छह बजे से मेरी पत्नी से कहने लगते—"बसंत आयो कोनी। ठीक टाइम पर आ जावैगो न?" साढ़े छह बजे से दरवाजे पर खड़े हो जाते, या खिड़की से रास्ते की ओर देखते रहते। मैं जो समय निर्धारित करता, उससे पहले ही आ जाता। कहते—"सब उम्र का खेल है। मेरी उम्र के होओगे, तो तुम भी बच्चों के लिए इतनी ही चिंता करोगे।"
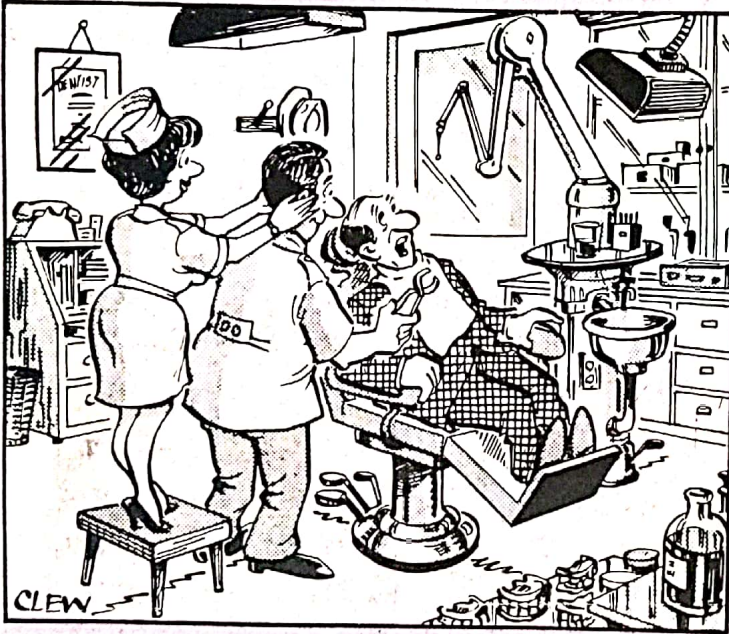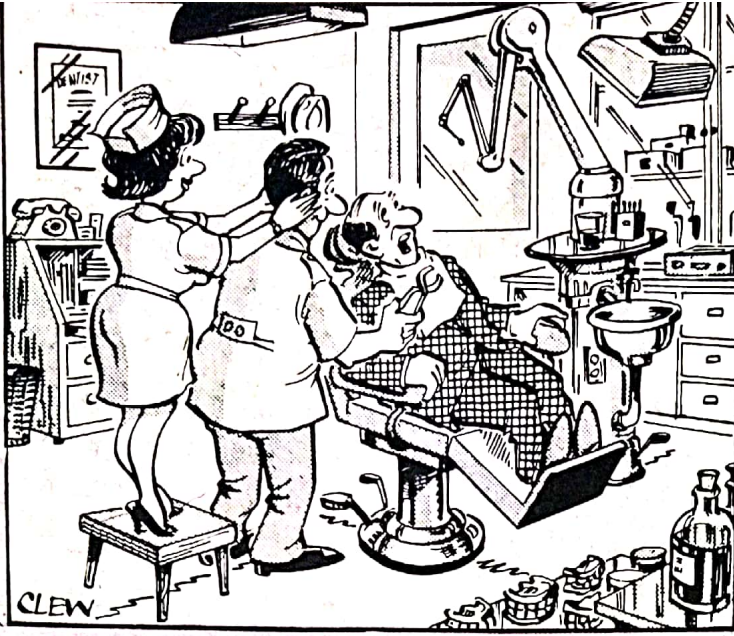
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट।**

कहानी लिखो—१२७

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ जून तक **कहानी लिखो—१२७, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अगस्त, ९४ अंक

चित्र-पहेली—१२७

सावन के झूले : इस विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता** साफ-साफ लिखिए। चित्र १५ जून,१९९४ तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : सितम्बर, ९४ अंक
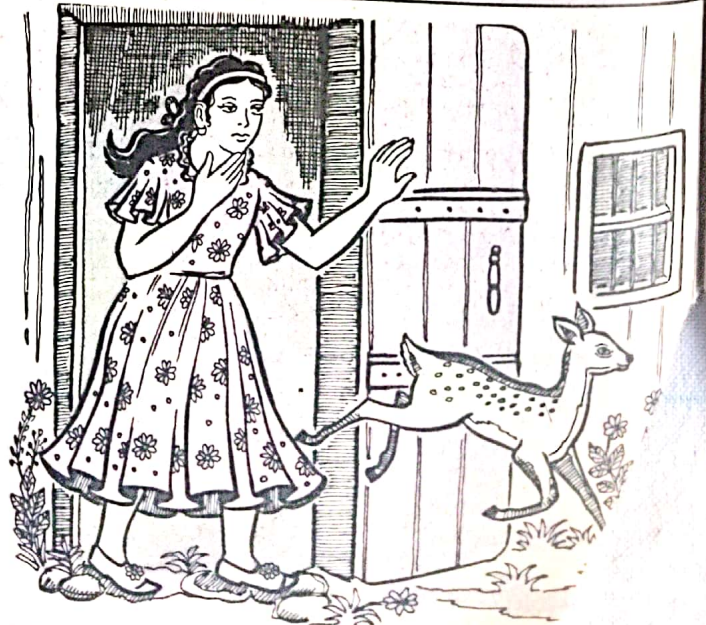
चाल बेचाल

—ईश्वरलाल प. वैश्य

एक नगर में एक सेठ रहते थे। वह नगर में सबसे धनवान माने जाते थे। सेठानी बड़ी भली थी। उनकी कोई संतान नहीं थी। इसी से वे दुखी रहते थे।

एक रात सेठ पलंग पर लेटे थे। सेठानी भी पास में सो रही थी। पर सेठ को नींद नहीं आ रही थी। सहसा उन्होंने अपने कुत्ते की भौंकने की आवाज सुनी। वह सतर्क हो गए।

कुत्ते का भौंकना बढ़ता जा रहा था। वह पलंग पर पड़े-पड़े चौकन्नी निगाहों से चारों ओर देख रहे थे। उन्होंने देखा कि बरामदे की ओर से कोई व्यक्ति खिड़की की राह घुस रहा था। उसके एक हाथ में बड़ा छुरा था। सेठ उसे देख कर घबरा गए। उन्होंने सोचा— 'यदि मैं चिल्लाऊंगा, तो हो सकता है कि चोर मुझ पर छुरा चला बैठे और मार ही डाले।' अतः उन्होंने चतुराई से काम लेने की सोची।

सेठ ने सेठानी को जगाया। सेठानी से कहा— "अभी-अभी सपने में मां जगदम्बा ने आकर मुझे कहा कि मैंने तुम्हारे घर एक बेटा भेजा है। तुम दीप जलाकर उसका स्वागत करो।"

सेठानी ने खुश होकर दीप जलाया। दीपक की रोशनी में खम्भे के पीछे छिपे चोर को उन्होंने ऐसे देखा मानो पहली बार ही देख रहे हों। उसको देखकर तुरंत ही वह बोल पड़े— "सेठानी! देखो मां जगदम्बा ने कितना सुंदर बेटा हमारे लिए भेजा है।"

चोर सोचने लगा-'यदि सेठ सचमुच मुझे अपने पुत्र की तरह अपनाते हैं, तब तो उनकी सारी सम्पत्ति मेरी हो जाएगी।'

यह सोचकर चोर भोला-सा मुंह बनाकर सेठ की ओर बढ़ा। छुरी उसने कोने में फेंक दी थी। सेठ ने प्रेम से उसे गले लगाया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगे। फिर सेठानी से बोले— "देखती क्या हो? [जा]ओ, बेटे को नहलाने के लिए पानी गरम करो। मां [जग]दम्बा के नैवेद्य के लिए प्रसाद तैयार करो।"

यह सुनकर चोर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सेठ उसके शरीर पर प्यार से हाथ फेरते रहे और वह चुपचाप खड़ा रहा। पानी गरम हो जाने पर उसे नहलाया। सुंदर कपड़े पहनाए। सोने के आभूषणों से उसे लाद दिया गया। अब सेठ उसे लेकर अपने पूजा-घर में गए। वह वहां जगदम्बा की पूजा करने लगे। चोर को विश्वास हो गया कि सचमुच सेठ ने उसे अपना पुत्र मान लिया है।

यों करते-करते सुबह हुई। सेठ ने चोर से कहा— "चलो बेटा, दुकान पर चलते हैं। मैं वहां का काम-काज तुम्हें समझा दूंगा।"

फिर सेठ चोर को दुकान पर ले गए। वहां उन्होंने चोर को गद्दी पर बैठा दिया। तिजोरी की चाबियां भी उसे थमा दीं। कौन-सी चाबी कौन से ताले की है और कहां क्या-क्या रखा है? सेठ ने यह सब कुछ उसे बता दिया।

बाजार में ग्राहकों का आना-जाना शुरू होते ही सेठ ने चोर से कहा— "तुम यहीं बैठो। मैं अभी घर से आता हूं।"

चोर मन ही मन ख्याली पुलाव पका रहा था। उधर सेठ पुलिस थाने में पहुंचे। उन्होंने थानेदार से कहा— "मैंने एक चोर को पकड़ रखा है। आप दुकान में चलें और उसे गिरफ़्तार कर लें।"

थानेदार कुछ पुलिस जवानों के साथ दुकान पर पहुंचा। जवानों ने चोर को घेर लिया। चोर पुलिस को देखकर सकपका गया। वह सेठ की चतुराई को समझ गया। तब चोरी करने वाले को फांसी पर लटका दिया जाता था। चोर गुस्से में भरकर सेठ से बोला— "तुमने बेटा बनाकर मेरे साथ धोखा किया है।"

सेठ ने हंसते हुए कहा— "बेटे! तुम मुझे मारने आए थे। तुम मेरी छाती में छुरा आरपार करने में जरा भी देर नहीं करते। अब तुम ये कपड़े-जेवर उतार दो और जेल की हवा खाओ। उसके बाद सूली पर चढ़ जाना।" चोर सिर झुकाए थानेदार के पीछे-पीछे चल पड़ा था।
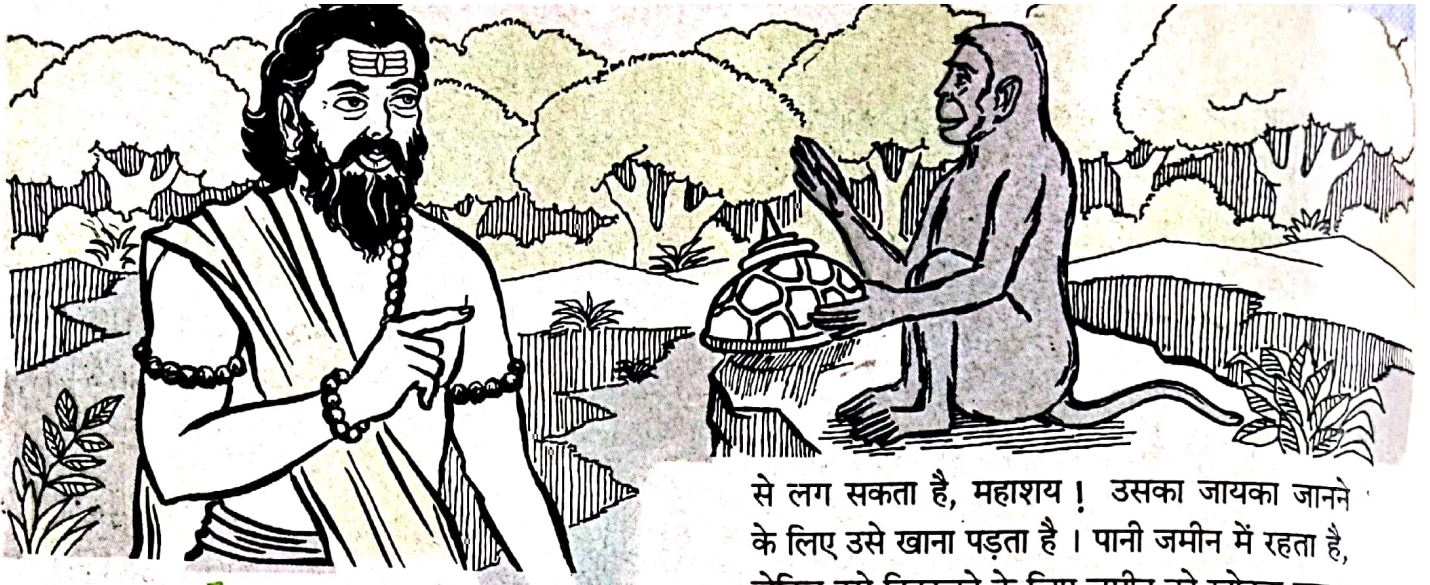
बंदर का मुकुट

—दत्ता जंगम

एक ऊंचे पहाड़ पर जाने के लिए तलहटी से पगडंडी जाती थी। पगडंडी के एक ओर पहाड़ था, तो दूसरी ओर घना जंगल था।

एक दिन की बात है, राजा के कुछ सैनिक उस पगडंडी से गुजर रहे थे। रात का समय था और घना अंधेरा छाया हुआ था। एक सैनिक का घोड़ा पत्थर से टकरा गया। सैनिक घोड़े की पीठ से नीचे गिर पड़ा। सैनिक को भारी चोट तो नहीं आई किंतु कछुए की पीठ का बना उसका टोप लुढ़ककर जंगल में जा पड़ा।

दूसरे दिन वही टोप एक बंदर को मिला। कौन-सी चीज है, बंदर इसे नहीं जानता था। इसलिए वह एक चट्टान पर बैठकर टोप को पटकने लगा।

उसी समय एक महात्मा पगडंडी से गुजर रहे थे। बंदर टोप को तोड़ रहा है, यह देख वह रुक गए।

''बंदर भाई, यह क्या कर रहे हो ?''—महात्मा ने पूछा।

''मैं जानना चाहता हूं कि यह क्या चीज है ?''—बंदर बोला।

''किसी चीज को तोड़ने से उसके बारे में पता नहीं चलेगा, उलटे वह नष्ट हो जाएगी।''—महात्मा ने कहा।

बंदर बोला—''आम की मिठास का पता ऊपर से लग सकता है, महाशय! उसका जायका जानने के लिए उसे खाना पड़ता है। पानी जमीन में रहता है, लेकिन उसे निकालने के लिए जमीन को खोदना पड़ता है। क्या यह सच नहीं ?''

''बंदर भाई, आपका कहना तो सच है...'' महात्मा बंदर के पास जाकर कहने लगे—''लेकिन किसी भी वस्तु को तोड़ने से पहले किसी ज्ञानी की राय लेना भी उचित है। ऐसा करने से उस वस्तु का नाश नहीं होता।''

''क्या आप ज्ञानी हैं ?''—बंदर ने महात्मा से पूछा।

''यह तो मैं नहीं कह सकता।'' महात्मा हंसकर बोले—''लेकिन आप जिस वस्तु को पटक रहे हैं, वह वस्तु क्या है, यह मैं जानता हूं।''

''बताइए, क्या है यह ?''—बंदर ने पूछा।

—''यह एक टोप है !''

''यह किस काम आता है ?''—बंदर ने फिर पूछा।

महात्मा बताने लगे—''यह युद्ध में काम आता है। जब शत्रु सिर पर तलवार का वार करता है, तो वह वार यह टोप झेलकर, सैनिक की रक्षा करता है। इसलिए इस टोप को मुझे दे दो। किसी सैनिक को दे दूंगा !''

''नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।'' गर्दन हिलाकर बंदर बोला—''महाशय, इस जंगल में मुझे हमेशा जंग करनी पड़ती है। डर के कारण हमेशा पेड़ पर रहना पड़ता है। यह टोप मेरे काम आएगा।''

महात्मा चुपचाप आगे चले गए।

टोप मिलने के बाद बंदर बहुत इतराने ल

वह घमंडी बन गया। जान बूझकर अन्य प्राणियों के साथ झगड़ने लगा। बंदर अब खुद को महा योद्धा समझने लगा था। वह टोप सिर पर रखकर आराम से जंगल में घूमता। उसके सिर पर टोप देखकर, जंगल के सारे जानवर उसे सलाम करते थे। इससे जंगल में बंदर का रोब छा गया था।

एक दिन, यह बात शेर तक पहुंची। शेर ने भेड़िए को भेजकर बंदर को अपने सामने बुलवा लिया। ऊंची आवाज में पूछा—"मैंने सुना है तू जंगल का राजा बनने वाला है। क्या जो सुना है,वह सही है ?"

बंदर शेर की ऊंची आवाज से डरा नहीं। डरे भी क्यों ? उसके सिर पर टोप जो था। वह गंभीर स्वर में बोला—"हां जी, यह बात सच है। मैं जंगल का राजा क्यों नहीं बन सकता ?"

इस पर शेर बोला—"मूर्ख, राजा बनने के लिए ज्ञान, शक्ति और हिम्मत की जरूरत होती है। इसके साथ-साथ युद्ध और राजकाज का ज्ञान होना भी आवश्यक है। क्या ये सारे गुण तेरे पास हैं ?"

बंदर छाती तानकर बोला—"मेरे पास यह टोप है। इसमें ये सारे के सारे गुण मौजूद हैं !"

बंदर का जवाब सुनकर शेर को क्रोध आ गया। उसने बंदर को एक जोर का तमाचा लगाया,तो बंदर का टोप हवा में उड़ गया और दूर जाकर गिरा। भेड़िए ने वह टोप लाकर शेर को दे दिया।

"अरे, मूर्ख...यह तो कछुए की पीठ है ! युद्ध में सैनिक इसका इस्तेमाल करते हैं। यह राजमुकुट थोड़े ही है ? पागल कहीं का... !"—शेर हंसकर बोला। और हाथ जोड़कर कहने लगा—"मुझे इसके बारे में मालूम नहीं था। इसीलिए ऐसा बर्ताव कर बैठा।"

"क्षमा करना महाराज !"—बंदर गिड़गिड़ाकर

शेर ने बंदर को माफ कर दिया।

शेर के तमाचे के कारण बंदर का मुंह काला पड़ गया था। उसे छिपाने के लिए बंदर ने उस जंगल को त्याग दिया।

विश्व की महान कृतियां : स्पेन

लासारो

—अज्ञात

लासारो के माता-पिता सालामानूकाके रहने वाले थे। उसका जन्म हुआ था तोर्मेस नदी पर एक यात्रा के दौरान। इसलिए वह कहलाया लासारो दे तोर्मेस यानी तोर्मेस का लासारो।

लासारो अभी सात वर्ष का ही था कि उसके पिता पर किसी ने अनाज की चोरी का आरोप लगाया। पुलिस उन्हें पकड़कर ले गई। उन पर मुकदमा चला और जेल हो गई। लासारो और उसकी मां बेसहारा हो गए। गांव वाले उसकी मां का अपमान करते, तो लासारो को गुस्सा आता, लेकिन वह कुछ कर न पाता।

एक दिन तंग आकर उसकी मां ने गांव छोड़ने का निश्चय कर लिया। शहर पहुंच कर वह दूसरों के घरों में चौका-बर्तन करके गुजारा करने लगी। लेकिन इससे दो जून का खाना भी न जुटता। कई बार मां-बेटे को भूखा ही सोना पड़ता।

विवश होकर लासारो की मां ने उसे एक अंधे भिखारी के साथ कर दिया। मां ने सोचा कि इससे लासारो को खाने-पीने की कमी नहीं रहेगी। अंधे भिखारी ने लासारो की मां को विश्वास दिलाया था कि वह बच्चे को अपने बेटे की तरह पालेगा। मां ने भारी मन से लासारो को विदा किया। लासारो उस समय केवल आठ वर्ष का था।

एक बार लासारो भिखारी के साथ बैल की मूर्ति वाले पुल से गुजर रहा था। भिखारी ने उससे कहा—"इस मूर्ति के साथ कान लगाओ। तुम्हें आवाजें सुनाई देंगी।" लासारो ने जैसे ही मूर्ति के साथ कान सटाया, भिखारी ने उसकी गरदन पर थप्पड़ मारा। लासारो का सिर मूर्ति से जोर से टकराया। वह दर्द से बिलबिला उठा।

भिखारी बोला—"मैं तुम्हें जीवन की शिक्षा दे रहा हूं।" 'यह कैसी अनोखी शिक्षा हैं ?'—दुखी लासारो सोचता रह गया। लासारो के जीवन का यह पहला कड़वा अनुभव था। भिखारी उसकी मां को दिया हुआ वचन भी भूल गया। वह लासारो को बहुत कम खाने-पीने को देता। धीरे-धीरे लासारो भी उसे चकमा देना सीख गया।

एक बार उन्हें किसी ने दया करके अंगूर दे दिए। भिखारी ने लासारो से कहा—"आओ, दोनों मिलकर खा लेते हैं। लेकिन एक-एक दाना खाएंगे।" दोनों ने अंगूर खाने शुरू किए। भिखारी ने एक साथ दो-दो दाने खाए, तो लासारो ने तीन-तीन। भिखारी ने अंगूर खत्म होने के बाद लासारो को डांटा—"तुम मुझे धोखा देते हो ? तुमने तीन-तीन दाने क्यों खाए ?"

"मैंने आपको धोखा नहीं दिया।"–लासारो ने कहा। "लेकिन आपने गिनती कैसे की ?"

"क्योंकि मैंने दो-दो करके अंगूर खाए लेकिन तुमने इसका कोई विरोध नहीं किया।"–भिखारी ने कहा और हंस पड़ा।

यह लासारो के लिए दूसरा अनुभव था। भिखारी चालाकी से काम लेता, तो लासारो उसका जवाब ज्यादा चालाकी से देता। एक दिन भिखारी ने लासारो को ढाबे से खाना लाने के लिए पैसे दिए। लासारो ने रास्ते में ही खाना खा लिया और बचा-खुचा भिखारी को दे दिया। लेकिन भिखारी ने उसका मुंह सूंघकर पहचान लिया कि लासारो ने आज फिर उसे छकाया है। बस, उसने लासारो की अच्छी तरह पिटाई कर दी।

इसके बाद लासारो ने निश्चय कर लिया कि वह भिखारी के साथ नहीं रहेगा। एक दिन बारिश हो रही थी। वह भिखारी को नौका-घाट पर ले जाने के बहाने फिसलन भरी सीढ़ियों पर ले गया।

पैर फिसलते महसूस कर भिखारी ने कहा—"मुझे सीधे रास्ते से ले चलो।"

लासारो ने उत्तर दिया—"यह रास्ता सबसे अच्छा है। इधर से हमें नाव जल्दी मिल जाएगी।" यह कह कर वह एक खम्भे के पीछे छिप गया और बोला—"बाबा, जल्दी से आ जाओ।"

भिखारी जैसे ही आगे बढ़ा, खम्भे से टकराकर गिर पड़ा। लासारो ने कहा—"तुम खाना सूंघ सकते हो, लेकिन खम्भा नहीं !" इतना कहकर वह वहां से भाग गया।इसके बाद भिखारी के पास नहीं लौटा।

भटकता-भटकता लासारो मकीदा नामक नगर पहुंचा। वहां उसे एक पादरी के घर में नौकरी मिल गई। पादरी बहुत कंजूस था। यहां तक कि वह रोटियों को भी एक संदूक में छिपाकर रखता था और संदूक पर ताला लगा देता था।

भूख से परेशान लासारो ने एक दिन मिस्त्री से ताले की दूसरी चाबी बनवा ली। अब भूख लगने पर वह चुपचाप रोटियां निकाल कर खा लिया करता।

पादरी को शक होने लगा कि हो न हो लासारो उसके बाहर रहने पर संदूक में से रोटियां निकाल लेता है। अब वह रोटियां गिनकर रखने लगा। इधर लासारो ने भी भूख मिटाने का एक नया तरीका खोज निकाला। वह रोटियों को बीच से ऐसे कुतर लेता, जैसे चूहे कुतर गए हों।

'इस घर में तो कभी चूहे नहीं थे।'–पादरी सोचता। एक रात खट की आवाज सुन कर पाद

चौंका। उसने पूछा—"लासारो, तुमने कोई आवाज सुनी ? मुझे लगा जैसे कोई सांप इधर आया है ?"

लासारो ने डर जाने का अभिनय करते हुए कहा—"मुझे डर लग रहा है, कहीं सांप मुझे काट न ले !" इसके बाद लासारो ने सोचा कि कहीं दूसरी चाबी पादरी को दिखाई न दे जाए, इसलिए वह चाबी मुंह में रखकर सोने लगा।

एक रात पादरी को लगा, जैसे कहीं से सांप के फुफकारने की आवाज आ रही है। वह डंडा उठाकर आवाज की दिशा में बढ़ा। लेकिन यह क्या! आवाज तो लासारो के मुंह से आ रही थी। मुंह में चाबी होने के कारण सांस चलने के साथ उसमें से आवाज आ रही थी। पादरी को पता चल गया कि रोटियां कुतरने वाला चूहा और सांप कौन हैं। उसने लासारो को उसी समय अपने घर से निकाल दिया।

लासारो एक बार फिर सड़क पर आ गया। घूमता-घामता वह तोलेदो नगर पहुंचा। कई दिन तक उसे कोई काम नहीं मिला। एक दिन बाजार में घूमते हुए उसकी भेंट एक बूढ़े सैनिक से हो गई। वह भी लासारो की तरह बेकार था, लेकिन उसके पास रहने के लिए किराए का एक मकान जरूर था। उस दिन से दोनों साथ रहने लगे। लासारो आस-पास के घरों में जाकर खाने को कुछ मांग लाता, तो कभी सैनिक कुछ ले आता। दोनों मिल-बांटकर खा लेते। कभी-कभी दोनों को भूखा भी रहना पड़ता। लासारो के दिन ऐसे ही बीत रहे थे।
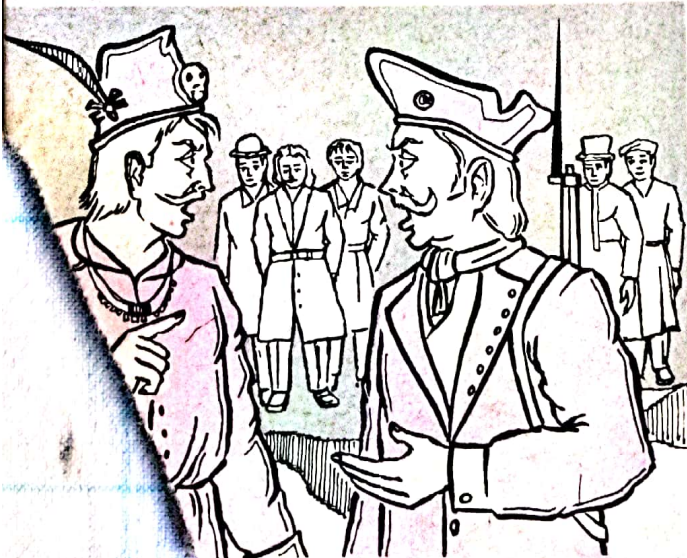
'वीदा दे लासारिल्यो दे तोर्मेस ई दे सूस फोर्तूनास ई आद्वेर्सी दादेस' (लासारिल्यो दे तोर्मेस का जीवन तथा उसका सौभाग्य और दुर्भाग्य) सोलहवीं शताब्दी के किसी अज्ञात स्पानी लेखक का उपन्यास है। पहले-पहल १५५४ में प्रकाशित। अनेक भाषाओं में अनुवाद हुए। यहां इसकी संक्षिप्त कथा दी जा रही है। —सं.

एक दिन सैनिक की बूढ़ी मकान मालकिन दो सिपाहियों के साथ आ धमकी। उसे पिछले दो महीने से किराया नहीं मिला था। बूढ़े सैनिक ने कहा—"आप थोड़ी देर बाद फिर आ जाइए। मैं बाज़ार जाकर नोट भुना लाता हूं।" मकान मालकिन और सिपाही चले गए। लेकिन बूढ़ा सैनिक जो बाहर गया तो फिर लौटा ही नहीं। निराश लासारो ने चाबी मकान मालकिन को दी और बाहर चला गया।

लासारो कई दिन तक भूखा भटकता रहा। उसे काम की तलाश थी। आखिर उसे ताबीज बेचने वाले एक बाजीगर के पास नौकरी मिल गई। ताबीज बेचनेवाला पक्का धूर्त और बेईमान था। वह ताबीज देने के नाम पर भोले-भाले लोगों को ठगता था। इस काम में उसका सहायक था एक सिपाही। लेकिन लासारो उन लोगों की चालबाजी को जल्दी समझ नहीं पाया।

एक दिन उसने देखा कि ताश खेलते हुए दोनों में झगड़ा हो गया है। दोनों ने अपने-अपने हथियार निकाल लिए। आसपास खड़े लोगों ने किसी तरह बीचबचाव कराया।

दूसरे दिन ताबीज वाला सड़क के किनारे ताबीज बेचने की कोशिश कर रहा था। तभी वह सिपाही वहां पहुंचा और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा—"यह आदमी धूर्त है। ताबीजों की बिक्री बढ़वाने के लिए इसने मुझसे सहायता मांगी थी। इसने वायदा किया था कि लाभ में से हिस्सा देगा। लेकिन मेरा दिल बेईमानी के लिए नहीं माना। मैं आप लोगों को धोखा नहीं देना चाहता। इसलिए मैं घोषणा करता हूं कि मेरा इस बेईमान के साथ कोई लेना-देना नहीं है।"

देखते-देखते भीड़ छंट गई। ताबीज वाला सिर पकड़े अकेला बैठा रह गया।

दूसरे दिन जब वह फिर मजमा लगा कर ताबीज बेचने की कोशिश कर रहा था, तो वही सिपाही आया और जमीन पर गिरकर तड़पने लगा। तड़पते हुए उसने ताबीज वाले से प्रार्थना की—"मुझ पर दया करो! दया करो मुझ पर! कल मैंने झूठ बोला था।"

आसपास जमा भीड़ ने ताबीज वाले से कहा कि सिपाही को क्षमा कर दो। ताबीज वाला पूजा की मुद्रा में बैठ गया। थोड़ी देर बाद उठा और सिपाही पर जल छिड़ककर बोला—"उठो, शैतान तुम्हारे सिर से उतर गया है। तुम्हें मुक्ति देने के लिए शैतान को मैंने अपने ऊपर ले लिया है। लेकिन वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।" उसने फिर कोई मंत्र पढ़ा। सिपाही कुछ ही क्षणों में उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—"मुझे क्षमा कर दीजिए महाराज! कल मैंने जो कुछ कहा था, वह झूठ था। इसीलिए शैतान मुझे सता रहा था। आपकी कृपा से अब मैं ठीक हूं।"

उस दिन लोगों ने ताबीज वाले से बहुत ताबीज खरीदे। इसके बाद वह किसी दूसरे शहर को चल दिया। रास्ते में लासारो ने देखा कि वह सिपाही ताबीज वाले के साथ बात करते हुए कह रहा है कि उसने किस तरह लोगों को बुद्धू बनाया और फिर दोनों हंसने लगे।

ताबीज वाले की वास्तविकता पता चल जाने पर लासारो ने उसकी नौकरी छोड़ दी। वह शहर के बड़े पादरी से मिला। पादरी को भी काम के लिए एक नौकर की आवश्यकता थी। उसने लासारो को खच्चर पर लदे पानी के घड़े दिए और कहा—"बाजार जाकर पानी बेच आओ। तीस सिक्के मेरे होंगे, बाकी सब तुम्हारे।" शहर में पानी की कमी थी। इसलिए सारे घड़ों का पानी बहुत जल्दी बिक गया। हर रोज ऐसा ही होता। लासारो तीस सिक्के पादरी को दे देता और अपनी बचत के पैसे एक गुल्लक में जमा करता जाता। वह सोचता था—'अब जीवन के अच्छे दिन आ रहे हैं।'

अगले चार वर्षों में उसके पास काफी पैसे जमा हो गए। उसे लगा कि अब कोई बेहतर काम करना चाहिए। वह सैन्य सामग्री बेचने वाली एक दुकान पर गया, एक पुरानी वर्दी और तलवार खरीद लाया।

वर्दी और तलवार से लैस होकर लासारो पुलिस में भरती हो गया। इस नौकरी में अक्सर उसका सामना चोर-उचक्कों से हो जाता। कई बार वह घायल भी हुआ। इसलिए यह नौकरी भी उसे रास नहीं आई। उसने पुलिस की नौकरी छोड़ दी। लासारो कोई ऐसा काम करना चाहता था, जिसमें वह आजादी से घूम-फिर सके। अब तक उसने कई मित्र भी बना लिए थे। एक मित्र की सहायता से उसे मुनादी करने का काम मिल गया।

इस नौकरी में उसे अलग-अलग शहरों में घूमने का अवसर मिलता था। अब तक लासारो जवान हो चुका था। एक दिन सान साल्वादोर नगर के गिरजे के बड़े पादरी ने उसे बुलाया। उसने लासारो के सामने अपनी नौकरानी से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। लासारो ने सोचा–'पादरी का प्रस्ताव स्वीकार करके मैं उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकूंगा और मेरा जीवन सुख से कटेगा।' उसने पादरी की बात मान ली विवाह करके पत्नी के साथ सुख से रहने लग

(प्रस्तुत : डा. सुरेश

दो देवियां

Scanned with CamScanner
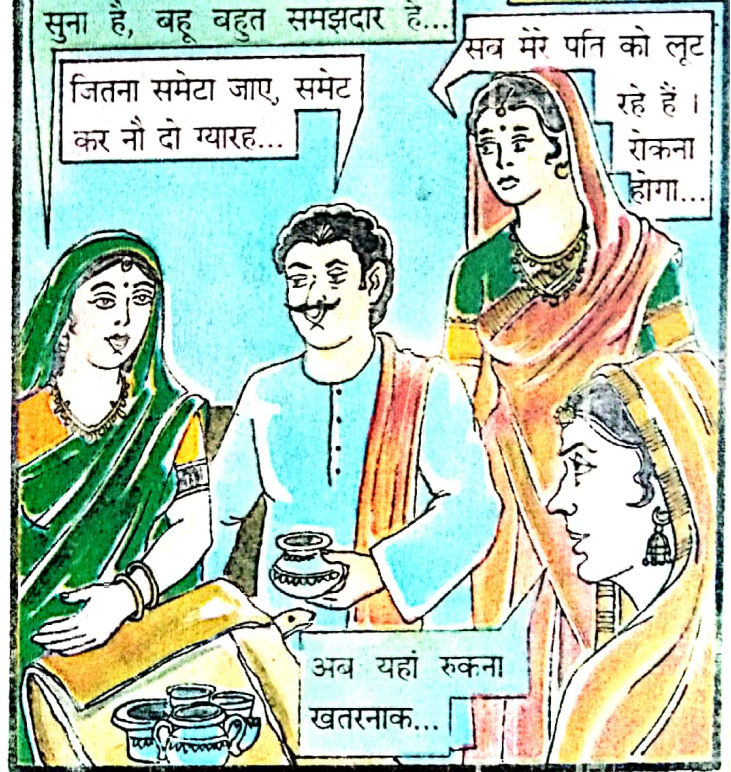
विलसी के मन को बात छू गई । उस रात जब सब सो गए, वह झोंपड़ी से निकल गिरती-पड़ती...
हाथ-पैर लहू लुहान...कपड़े फटे...कहां जा रही हो बेटी इतनी रात में...
भगवान की शरण में...कहां मिलेंगे वह...
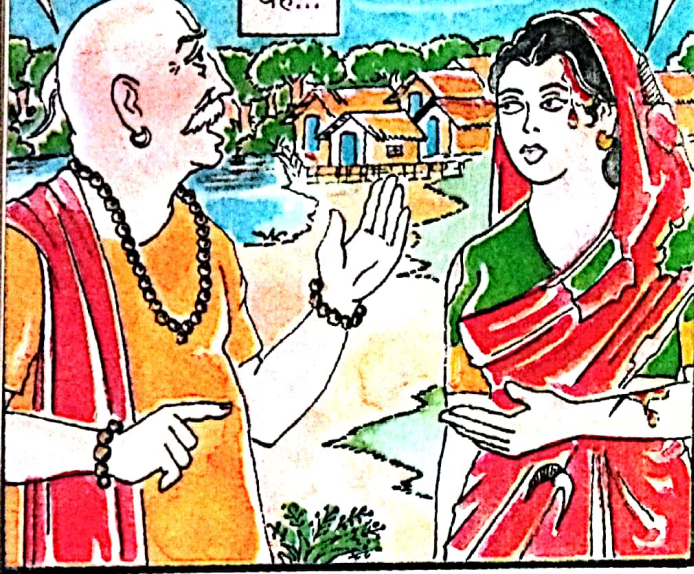
वह काशी के राम मंदिर में प्रधान पुजारी थे । विलसी को साथ ले आए । भोग बनाने का कार्य सौंप दिया...
मेरे भगवान पहली बार.. मेरे हाथ का खाएंगे । ...चखकर देखूं...ठीक बना या...

पुजारियों ने भोग भगवान को अर्पित किया । पर्दा हटाया, तो...
भोग कहां गया ?
ऐसा कभी नहीं हुआ ।
देखो, भगवान के ओठों पर....

कई बार ऐसा हुआ, तो चर्चा सारी काशी में फैल गई । विलसी के दर्शन करने भीड़ उमड़ने लगी । उसे अजपा मां के नाम से पुकारा जाने लगा...
तू ही गोविंद, तू ही नारायण, तू ही पालनहार...

एक दिन अजपा ने वृंदावन की महिमा सुनी—वहां कण-कण में श्रीकृष्ण का वास है। अजपा वृंदावन जा पहुंची। आराध्य के दर्शन पाने यमुना में...
अरी पगली, डूब जाएगी !
आगे मत जाओ गहरा पानी...
श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवः

यमुना की गहराई कमर तक ही रही। लोग अजपा की चरण-रज लेने को आतुर हो उठे।

पूरे मन, पूरी श्रद्धा से उसे पुकारो। छोड़ दो अपनी पतवार उसके हाथों में... वह जरूर आएगा...

वृंदावन में कुछ दिन ठहर अजपा मां भवानी के दर्शन करने चिंतामणि तीर्थ गईं। मंदिर के पुजारी ने उनका स्वागत किया। मार्ग में...
हक-हक माने अमर... । इसी से इन्हें हकहकी माता कहते हैं। जो बोलती है, हमेशा सच होता है...
हक, हक, हक... तू आ गई...यहां हमारा काम खत्म... चलो नौशेरा...
प्रणाम मां

अजपा के पैर जैसे बंध गए। हकहकी माता के साथ वह नौशेरा (पंजाब) आईं। आश्रम बनाकर रहने लगीं। एक दिन...
ऐ...यह झोंपड़ा हटाओ। यहां अंग्रेजों की छावनी बनेगी...
मत डरो। यहां जो भी कुछ बनाएगा -गिराएगा, नहीं बचेगा।

अंगरेज अधिकारी मनमानी करने पर उतर आया । दोनों देवियों को पकड़ने का आदेश दे आश्रम तोड़ डालने को कहा ही था कि...
उफ !
बचाओ !
गायब...
पकड़ो उन दोनों को

किंतु वे दोनों वहां से बहुत दूर नागों के घेरे में ध्यानमग्न थीं । अंग्रेज सैनिक धोखे से उनको पकड़कर किले में ले आए...
तुम जादूगरनी...हमसे टक्कर...हमारे साथी मारे... सवेरे आठ बजे दोनों को शूट...
अत्याचारी ! आठ से पहले ही तुम्हारा अंत होगा ।

हुआ भी ऐसा ही । छह बजते न बजते हजारों सशस्त्र लोग किले पर टूट पड़े । सारे सैनिक मारे गए...
अब माताओं को छुड़ाना है । तलाश करो ! कहां हैं ?

पूरा किला छान मारा गया, किंतु न अजपा मिलीं, न हकहकी मां । मिलतीं भी कैसे ? वे तो वहां से बहुत दूर हिमालय पर...
भक्ति के लिए एकांत चाहिए !
हां, अब हम संसार में नहीं लौटेंगी...यहीं गुफा में उसे पाने की कोशिश...
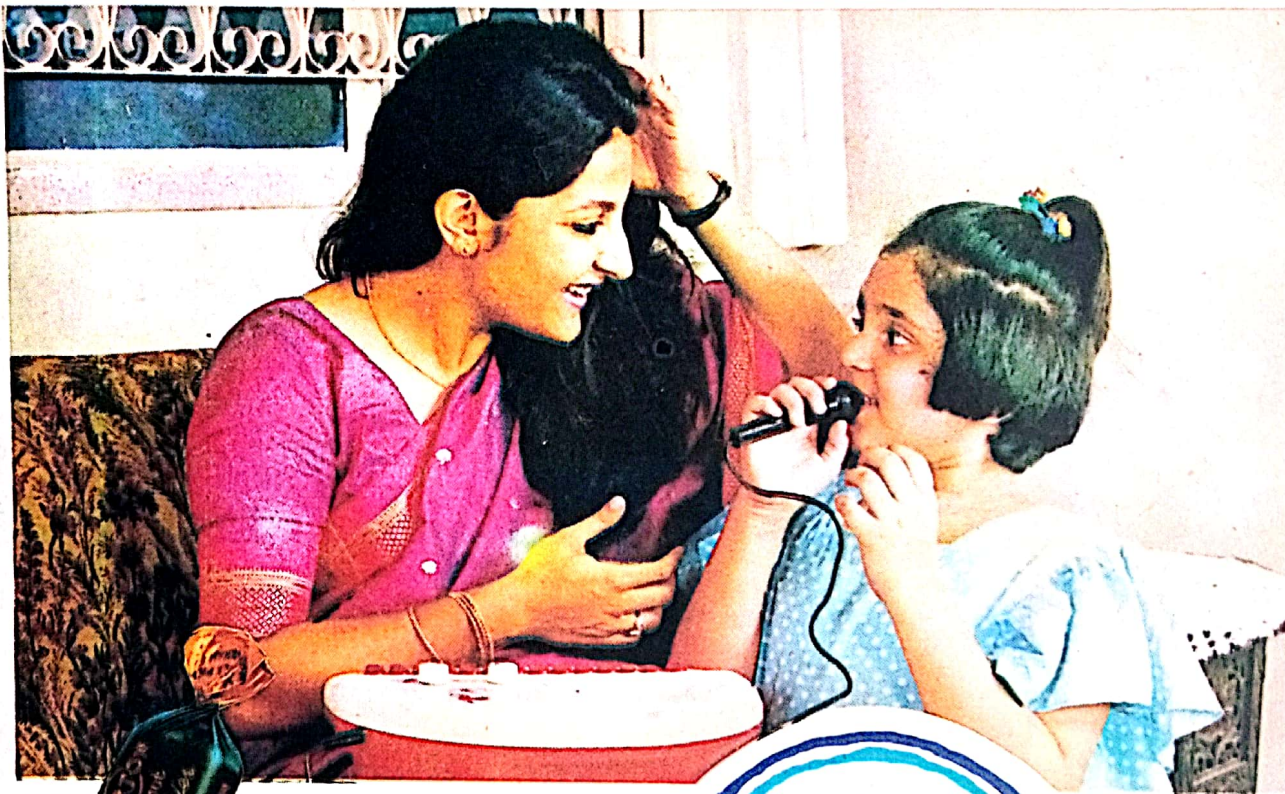
MORTON
SWEETS
मुझे रविवार बहुत प्रिय है...... मार्टन मेरे परिवार की उत्कृष्ट शुद्धता और ग्लूकोज़ और चीनी चॉकलेट एवं लेक्टोबोनबोन्स, आहहा ! क्या लाज़वाब स्वाद !
हर समय नर्सरी राइम्स की ताल, मम्मी का साथ सदा से ही पहली पसंद रही है।
स्वादिष्ट तथा साथ ही की पौष्टिकता से कोकोनट कुकीज़ रोज मैंगोकिंग एवं अन्य
अनेकानेक जायकों भरपूर। एक्लेयर्स, सुप्रीम अनेकों मनलुभावन
और मार्टन का रसभरा स्वाद.
में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध, चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, स्वादों में उपलब्ध।
MORTON
COCONUT
TOFFEE
जीवन का अनुपम माधुर्य
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
CC/M-1/93 HIN

प्यारे प्यारे ये साथी हमारे
आओ, इन्हें हम सदा के लिए सँवारे
कोरस के मनभावन उजले रंगों से सुंदर चित्रों में रंग भरिए. हमेशा के लिए उन्हें अपने पास रखिए.
रोमांचक आर्ट मटीरियल का भरपूर खज़ाना – पोस्टर कलर, वॉटर कलर, वैक्स, फ्लोरसेंट और प्लास्टिक्रेयॉन. अपनी मनपसंद सामग्री लीजिए. पोस्टर, बर्थ-डे कार्ड, ग्रीटिंग कार्ड बनाइए, स्कूल प्रोजेक्ट को सजाइए.
kores
FLUORESCENT CRAYONS
10
kores
Cobalt Blue
kores
Poster Red
POSTER COLOUR
kores
WATER COLOURS
12 ASSORTED SHADES
कोरस
kores
STUDENTS'
WATER COLOUR
CAKES
मुफ़्त!
रंग भरने के लिए
आकर्षक रोमांचक रेखाचित्र.
अपने नाम व पते के साथ 1 रूपये वाला डाक लिफाफा यहाँ भेजिए:
कोरस (इंडिया) लि.,
पोस्ट बॉक्स 6558, बंबई 400 018
कोरस स्टूडेन्ट्स आर्ट मटीरियल लाइए अपनी दुनिया रंगीन बनाइ
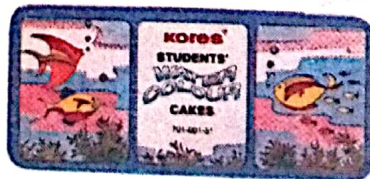
हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष ३०, अंक : ८, जून '९४ नई दिल्ली; ज्येष्ठ-आषाढ़, शक सं. १९१६
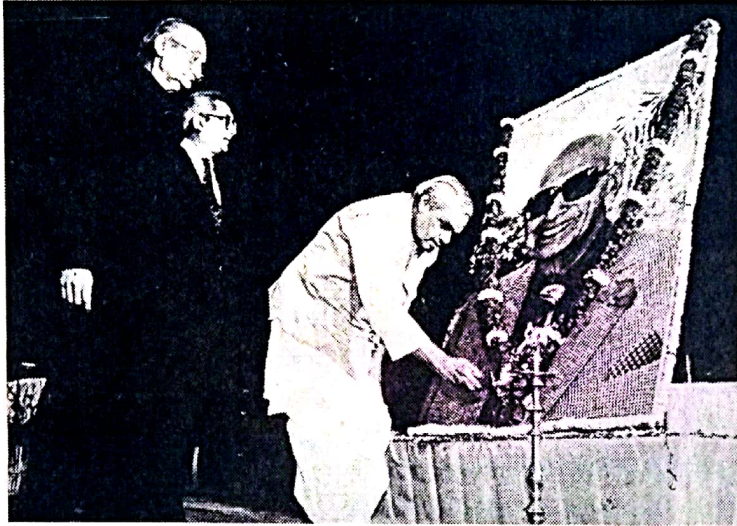
चित्र में बाएं से दाएं : श्री कृष्णकुमार बिरला, श्री आदित्य बिरला और दीप जलाते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी।

वह सचमुच भारत रत्न थे

नई दिल्ली। "इस बात की बहुत खुशी है कि श्री घनश्यामदास बिरला का जन्म भारत में हुआ। वह इस देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में सहभागी बने। देश में नए-नए उद्योग लगाए। उन्होंने विज्ञान व संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया और कठोर परिश्रम व पराक्रम के बल पर सफलता अर्जित की। उन्होंने जो कुछ मन में ठान लिया उसे पूरी शक्ति से अर्जित किया। वह सचमुच भारत रत्न थे। उनमें परोपकार की भावना कूट-कूटकर भरी थी।"—इन शब्दों में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। वह स्वर्गीय श्री घनश्यामदास बिरला के जन्म शती समारोह में बोल रहे थे।

बिरला जी के सुपुत्र, सांसद कृष्णकुमार बिरला ने कहा कि उनके पिता जी पर गांधी जी, अपनी पत्नी महादेवी जी तथा भगवद्‌गीता का गहरा असर पड़ा।

श्री बिरला ने आगे कहा —"मेरे पिता जी ने सभी धर्मग्रंथों, उपनिषदों व रामायण का अध्ययन किया था। वह अपनी समस्याओं का हल भगवद्‌गीता में ढूंढा करते थे। गांधी जी उन्हें अपने पुत्र की तरह मानते थे। उनका मानना था कि तकनीकी शिक्षा और उच्च नैतिक मूल्यों के बल पर ही भारत महान बन सकता है।"

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, सी. सुब्रमण्यम तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति डा. उपेंद्र बख्शी ने भी घनश्यामदास जी को श्रद्धांजलि दी।

श्रीमती सरला बिरला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती शोभना भरतिया और मंजुश्री ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। श्री आदित्य बिरला ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अंतरिक्ष में विज्ञापन

वाशिंगटन। जार्जिया की एक कम्पनी ने सोचा कि क्यों न वैज्ञानिकों की मदद से अपनी चीज का विज्ञापन भी कर दिया जाए। ओजोन का पता लगाने के लिए एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म बनाया गया। उसी पर कम्पनी ने अपनी चीज का विज्ञापन लगा दिया। वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष से जुड़ी संस्थाओं ने इस बात का बहुत विरोध किया। उनका कहना था कि अंतरिक्ष को इस तरह व्यापार का केन्द्र नहीं बनाया जाना चाहिए। वैसे भी ये चीजें दूरबीनों तक का रास्ता रोक लेंगी और वैज्ञानिक अंतरिक्ष को नहीं देख पाएंगे।

पीपल के जंगल

तेलअवीव। इस्राइल के वैज्ञानिक चीन और जर्मनी में पहाड़ी पीपल के जंगल लगाएंगे। चीन में लकड़ी की बहुत कमी है। वहां जंगल भी खत्म हुए हैं। पहाड़ी पीपल तेजी से बढ़ता है, लकड़ी की कमी भी पूरी करता है।

लम्बी नाक वाले

जकार्ता। बोर्नियो के जंगल में विचित्र किस्म के बंदर पाए जाते हैं। इनकी नाक चेहरे के ऊपर किसी फल की तरह लटकी होती है। ये बंदर नदियों के किनारे पेड़ों पर रहते हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

नंदन बाल समाचार

दीन सबहिं को लखत है, दीनहिं लखै न कोय,
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय। —कविवर रहीम

मेमना और भेड़िया

एक मेमना कहीं पानी पी रहा था। भेड़िया वहां आया। बोला—"ऐ छुटके मुझे गाली देता है ?" भोला मेमना बोला—" अंकल, मैं आपको जानता नहीं, भला गाली क्यों दूंगा ?" भेड़िया तो भेड़िया, उसकी नीयत खराब। बोला—"तेरे बाप ने गाली दी थी।" और मेमने पर टूट पड़ा।

पिछले दिनों कई समाचार छपे—जब पांच-छह या आठ-दस साल के बच्चे को उठा लिया गया। मोटी रकम मांगी गई। रकम मिल गई, तो बालक को छोड़ दिया गया। लगता है, हम भेड़ियों से घिरे हों। बच्चों को तो पूरी सावधानी रखनी ही चाहिए। मौका पड़ने पर साहस से काम लेना चाहिए। बड़ों को भी सोचना चाहिए कि वे अपने पापों में बेकसूर बच्चों को भागीदार न बनाएं।

इनसे मिलिए
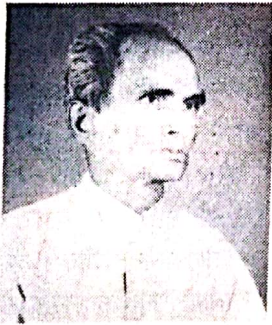
दिल्ली के पास छोटे-से गांव हस्तसाल में जन्मे मुरारीलाल त्यागी चालीस साल से अध्यापक हैं। एक दर्जन से अधिक स्कूल स्थापित कर चुके हैं। एक दर्जन उपन्यास छप चुके हैं। लेकिन प्रचार से दूर-दूर रहे। राजधानी में पब्लिक स्कूल कौंसिल के संरक्षक हैं, कई संस्थाओं के अध्यक्ष भी।

आज छोटे-से छोटा आदमी भी बालक को पब्लिक स्कूल में भर्ती कराना चाहता है। इन स्कूलों में बढ़िया अनुशासन, सफाई, और अच्छी पढ़ाई होती है इसीलिए। कई बार इनके खिलाफ शोर मचता है, अक्सर तब जब दाखिलों के दिन होते हैं। दाखिला चाहने वाले हजारों होते हैं। जिनके बच्चे दाखिल नहीं हो पाते, प्रायः वे ही शोर मचाते हैं। त्यागी जी का कहना है कि ऐसे पब्लिक स्कूल भी हैं जो बच्चों का ध्यान कम रखते हैं, अपना लाभ अधिक देखते हैं। यह अपराध है, पाप भी है।

स्कूल की संपत्ति के बारे में त्यागी जी कहते हैं—"स्कूल किसी की जमीन-जायदाद नहीं हैं। सरकार का पूरा नियंत्रण रहता है। यदि कोई स्कूल बंद करना पड़े तो कायदे से सरकार को सौंपना होगा।"

रस्सी पर पिल्ले

ब्रिस्टल। जेनेट स्मिथ को कुत्ते पालने का बहुत शौक है। उसने बुलडॉग नस्ल के ग्यारह पिल्ले पाल रखे हैं। मगर ये पिल्ले इतने शरारती हैं कि जेनेट को कुछ काम ही नहीं करने देते। तंग आकर जेनेट ने पिल्लों से निबटने का अनोखा तरीका निकाला। जब वह काम में लगी होती है, तो पिल्लों को अलग-अलग थैले में रख, कपड़े सुखाने वाली डोरी पर लटका देती है। पिल्ले बिना शोरगुल किए लटके रहते हैं।

जन्म दिन मुबारक

म्युनिख। टांगा का जन्म १९३४ में हुआ था। उसके साठवें जन्म-दिन पर उसके लिए एक बड़ा-सा केक बनवाया गया। केक सब्जियों से बना था। टांगा एक मादा दरियाई घोड़ा है। यहां के चिड़ियाघर में रहने वाली वह सबसे अधिक उम्र की दरियाई घोड़ी है।

बिना तले चिप्स

स्टाकहोम। आलू के मसालेदार चिप्स मोटे लोग कैसे खाएं। एक तो आलू, ऊपर से तला हुआ। एक कम्पनी ने इन चिप्स को तैयार करने की नई विधि निकाली है। इन्हें तले बिना तैयार किया जाता है। मसाले का स्वाद भी भरपूर मिलता है।

बच्चों के लिए

नई दिल्ली। बच्चों को कठिन कामों से छुटकारा दिलाने के लिए एक सौ नौ नोबुल पुरस्कार विजेता सामने आए हैं। ये एक संगठन 'चाइल्ड राइट वर्ल्ड वाइड' के अंतर्गत काम करेंगे। इनमें प्रमुख होंगे मिखाइल गोर्बाचोव, डेसमंड टुटू, दलाईलामा आदि। करोड़ों बच्चों की मुक्ति के लिए दुनिया भर में अभियान चलाया जाएगा।

मुखिया कौन

टोकियो। रान की उम्र है पचीस वर्ष। अपने परिवार के चवालीस सदस्यों में वह सबसे बड़ा है। रान एक बंदर है। वह अपने परिवार के साथ चिड़ियाघर में रहता है। इन्हीं बंदरों में है—सोतोईमो। उसने रान की सत्ता को चुनौती दी है। वह अक्सर उससे लड़ता-झगड़ता है। जबकि किसी और बंदर ने ऐसा कभी नहीं किया। ऐसा लगता है कि जल्दी ही रान की जगह सोतोईमो बंदरों के इस झुंड का मुखिया बन जाएगा।

अजंता-एलोरा का विकास

औरंगाबाद । अंजता-एलोरा की गुफाओं की देखभाल और विकास के लिए जापान ने दो अरब रुपए की मदद दी है । इसी योजना के तहत अजंता के आसपास वन लगाए जाएंगे । सड़कों की मरम्मत की जाएगी तथा साफ पानी का प्रबंध किया जाएगा । हवाई अड्डे का भी विकास किया जाएगा जिससे कि अधिक से अधिक पर्यटक वहां आ सकें ।

शेरों का इतिहास

रीवां । यहां पाए जाने वाले सफेद शेर दुनिया भर में मशहूर हैं । रीवां का राजघराना इन शेरों के विकास में बहुत मदद देता रहा है । पुष्पराज सिंह रीवां के राजकुमार हैं । वह विधानसभा सदस्य भी हैं । वह सफेद शेरों के इतिहास पर फिल्म बना रहे हैं । फिल्म हिंदी और अंग्रेजी में बनेगी ।

बिच्छू ने सिक्के दिलाए

नासिक । बिच्छू आगे-आगे भाग रहा था और कुछ बच्चे उसके पीछे भाग रहे थे । अचानक बिच्छू एक ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहां बच्चों को जमीन में एक कलश दिखाई दिया । इसमें चांदी के सिक्के भरे हुए थे । बच्चों ने अपने परिवार वालों को इसकी खबर दी । परिवार वालों ने विशेषज्ञों को खबर की । ये सिक्के सोलहवीं से अठारहवीं सदी तक के हैं ।

तोतों का शोर

लंदन । इंग्लैंड में एक व्यक्ति को तोते बहुत अच्छे लगते थे । उसने अपने बाग में चालीस तोते पाल रखे थे । पड़ोसियों ने इस बात की शिकायत अदालत में कर दी । उनका कहना था कि तोते बहुत शोर चाते हैं । अदालत ने अपने फैसले में हा कि यह दुनिया हम सबके लिए है । पक्षियों को भी उतना ही रहने का र है, जितना हमें । इसलिए तोतों कने से कोई नहीं रोक सकता ।

सिक्कों के शौकीन

नई दिल्ली । मयूर विहार में रहते हैं महावीर शंकर माथुर । उनके पास दो सौ देशों के पंद्रह हजार सिक्के हैं । ईसा पूर्व पहली सदी से लेकर भारत में मुगलों द्वारा चलाए गए सिक्के तक मौजूद हैं । उनके पास सूडान के एक सिक्के पर हाथी, नेपाली सिक्के पर गाय, तंजानिया के सिक्के पर खरगोश बना है । उनके पास सबसे बड़ा सिक्का अफगानिस्तान का है । पांच रुपए का यह सिक्का चांदी का है ।

बंदरों के नए घर

नई दिल्ली । यहां के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में बंदरों ने बहुत उत्पात मचा रखा है । अब उन बंदरों को पकड़ा जाएगा । इन्हें पकड़ने में बंदर विशेषज्ञ इकबाल मलिक तथा अन्य पशु विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी । इन बंदरों के लिए नए घर तलाशे गए हैं । कोशिश की जाएगी कि बंदरों के पूरे परिवारों को एक जगह छोड़ा जाए । परिवार से बिछुड़ने पर वे हिंसक हो उठते हैं ।

ओजोन कम नहीं

नई दिल्ली । भारत के ऊपर फैली ओजोन गैस की परत कम नहीं हो रही है । यह बात महासागर विकास विभाग की सालाना रपट में कही गई है । ओजोन परत कम होने से सूरज की किरणें धरती पर रहने वाले प्राणियों पर घातक असर करती हैं । वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक निकाली है कि हर पांच मिनट में ओजोन की कमी के बारे में पता किया जा सकता है ।

जूले वर्न पुरस्कार

नई दिल्ली । दूरदर्शन पर विज्ञान सम्बंधी कार्यक्रम आता है—टर्निंग प्वाइंट । इसे विज्ञान के बारे में नए ढंग से जानकारी देने के लिए जूले वर्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

नन्हे समाचार

☐ भारत में चालीस नए रेडियो स्टेशनों का निर्माण किया जा रहा है ।

☐ राष्ट्र संघ में दक्षिण अफ्रीका का नया राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया ।

☐ आस्ट्रेलिया में सिडनी के पास समुद्र में एक यात्री विमान गिर पड़ा । विमान डूब गया, पर यात्री तथा पायलट बचा लिए गए ।

☐ अमरीका में न्यू आर्लियंस में दो लुटेरों ने एक भिक्षुणी पर गोली चलाई । गोली उसके हाथ की प्रार्थना पुस्तक में धंस गई । उसके प्राण बच गए । सब कह रहे हैं-उसे ईश्वर ने बचाया ।

☐ किसी ने कबाड़ी की दुकान से पुराना कालीन कौड़ियों के मोल खरीदा । बाद में पता चला, वह तो मुगल बादशाहों के महल में बिछा करता था । बाद में वही कालीन पचीस लाख रुपयों में बिका ।

☐ लगातार चलने वाली लड़ाई के कारण काबुल का चिड़ियाघर सुनसान हो गया है । वहां बस पांच बाघ बचे हैं ।

☐ रूस के एक टायर कारखाने में मजदूरों को तनख्वाह के रूप में वहां बने टायर दिए गए क्योंकि कारखाने में पैसे की कमी थी ।

☐ कुवैत में 'भारत सप्ताह' धूमधाम से मनाया गया । मेले में आए हजारों दर्शकों ने भारतीय हीरे-जवाहरातों को बहुत सराहा । भारतीय जेवरों की प्रदर्शनी लगी । इस प्रदर्शनी को देखने बहुत-से अमीर लोग आए । एक हार साढ़े ग्यारह लाख रुपए में बिका ।

☐ पिछले वर्ष भारत में ढाई लाख से अधिक मोटर कारें बनाई गईं ।

☐ भारत में बनी रेल पटरियां नौ देशों को निर्यात की जाती हैं ।

☐ दिल्ली में महिलाओं द्वारा एक पेट्रोल पम्प सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है ।

सचित्र समाचार
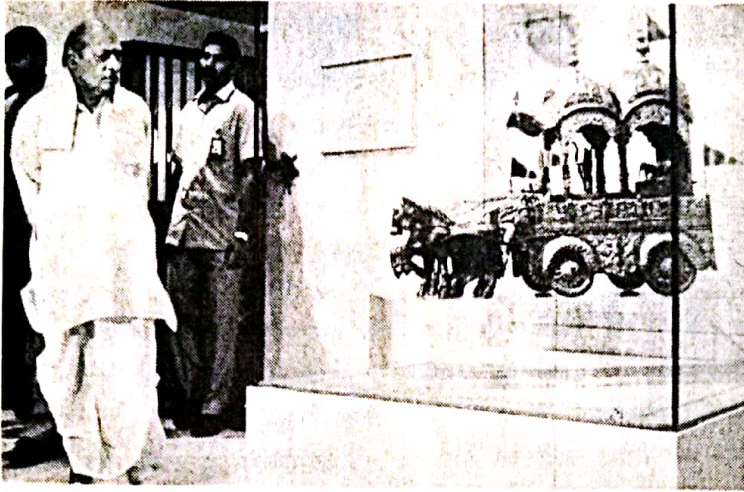
राष्ट्रीय कला संग्रहालय में प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव ने आभूषण वीथिका का उद्घाटन किया। चित्र में सोने का अर्जुन रथ देखते हुए प्रधानमंत्री।

हिंदुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित कार्टून प्रतियोगिता में हैदराबाद के संजय अष्टपुत्रे के कार्टून को प्रथम पुरस्कार मिला।

बाल मजदूरों की दशा की ओर ध्यान खींचने के लिए बावन सौ कि.मी. की यात्रा गांधी जी की समाधि पर समाप्त हुई। यात्रा कन्याकुमारी से शुरू हुई थी।

ट्रेनर-२००० — यह मशीन फुटबाल खिलाड़ियों को खेलना सिखाती है। इसे बनाने वाले जीन पियरे को अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में पुरस्कार दिया गया है।

बर्लिन (जर्मनी) में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेला। भारतीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत मणिपुरी नृत्य।
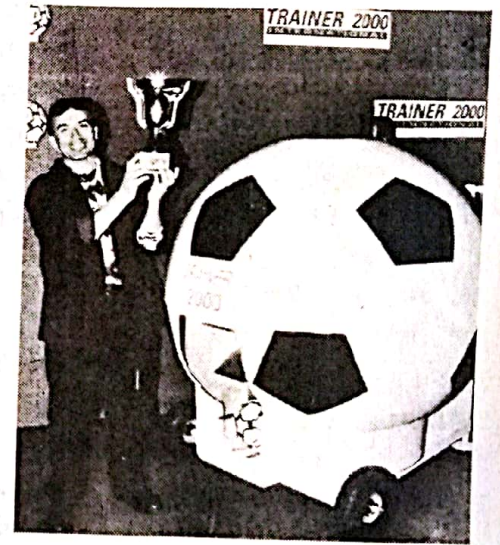
राष्ट्रपति भवन में बाल स्काउटों और गाइडों की राष्ट्रीय

बैटरी इधर... खिलौने उधर!
Charge
अब आएगा खूब मज़ा! ज़रा सोचो, बिना बैटरी के बैटरी से चलनेवाले खिलौने भला किस काम के?
इस भूलभुलैया में बैटरी को (पेंसिल द्वारा) खिलौने से जोड़ो. खेल के अंत में एक शानदार ईनाम कर रहा है इंतज़ार!
1 'ले-एन-एग' अंडे देनेवाली मुर्गी जी उठी!
2 बुलेट ट्रेन सीट थामकर बैठो, बुलेट ट्रेन की असली तेज़ रफ़्तार देखो!
3 'ग्रैन् प्री' 'ग्रैन् प्री' ट्रैक पर कारों को सरपट दौड़ाओ, मौज़ उड़ाओ!
अंत
मुबारक! सारे खिलौने चार्ज हो गए. अब आई शानदार ईनाम (मुफ़्त खेल पोस्टर) की बारी... इस पन्ने को काटकर इस पते पर भेजिए:-
ब्लो प्लास्ट लिमिटेड (टॉयज़ डिवीज़न), लियो हाउस, 88-सी, ओल्ड प्रभादेवी रोड, बम्बई - 400025.
LEO
MATTEL
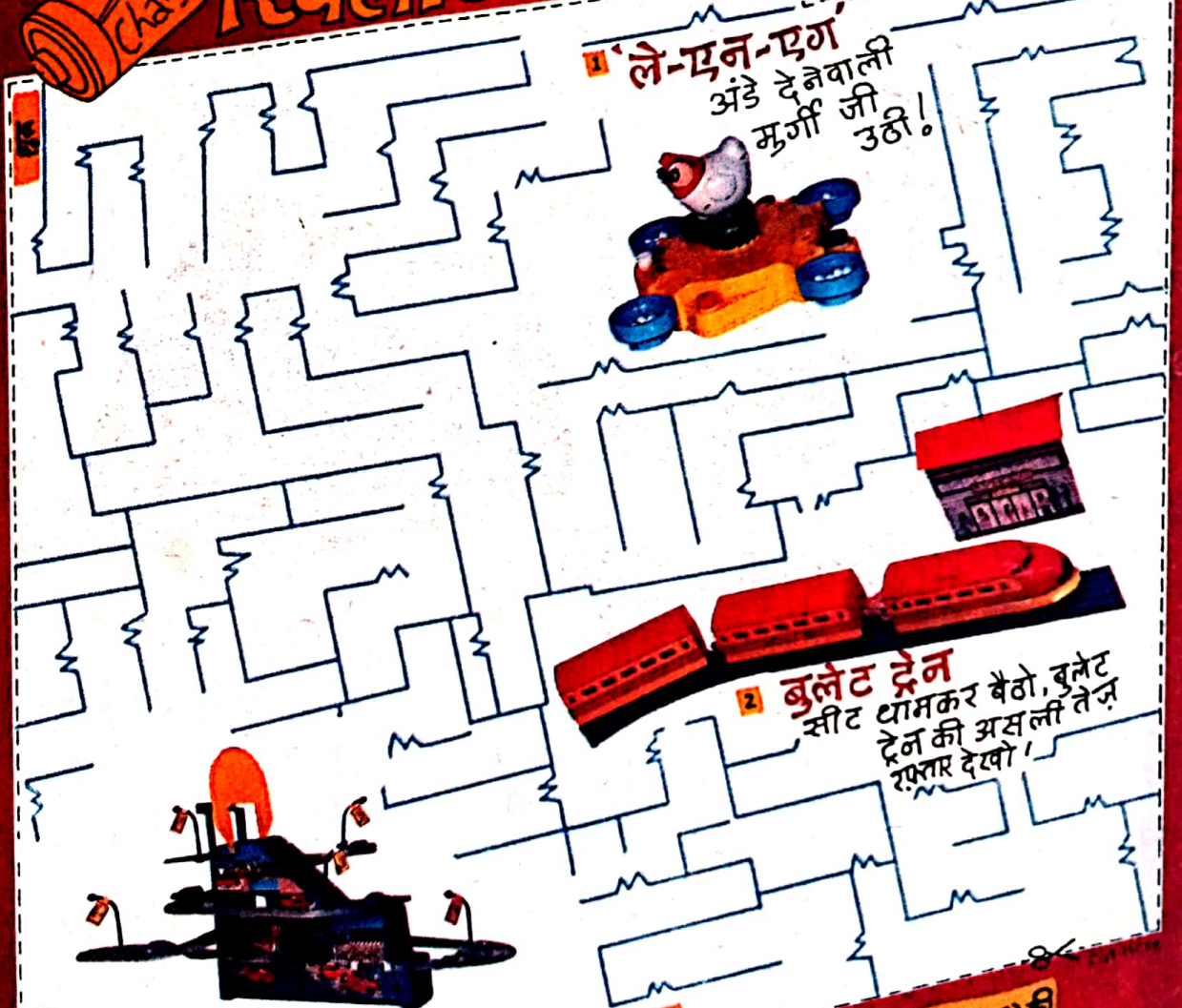
किस का फोन

स्कूल में वार्षिक उत्सव था । होनहार छात्रों को पुरस्कार दिए जाने थे । अचानक...
पंडाल में दो बम... दस मिनट में विस्फोट...
बाप रे !

रंग में भंग... पुलिस आई । बम नहीं मिले
फोन की आवाज पहचानते हैं ?
किसी पर संदेह है ?
संदेह... आवाज... नहीं...

उसी शाम को
मदन की बात सच... उसी ने तो कहा था...
मुझे इनाम नहीं मिला तो किसी को नहीं लेने दूंगा..
कहीं उसी ने तो फोन...

योजना बनाकर वे तीनों...
मदन, पुलिस का कहना है, वह फोन तुमने किया था !
अरे वाह, मैं क्यों करने लगा ऐसा... पुलिस जो चाहे कहे...

बच्चों ने प्रधानाचार्य से बात की। किसी तरह मदन से उन्हें फोन कराया, किंतु
नहीं, नहीं, मदन की आवाज... उस फोन जैसी नहीं थी...
तुम, इस पचड़े में मत पड़ो। जाओ पढ़ो... उत्सव अगले हफ़्ते फिर...
अगले हफ़्ते फिर ऐसा ही हुआ, तो...
लगता है, हम समारोह कभी नहीं कर पाएंगे...
फिर कीजिए स्कूल हाल में। हम चौकसी करेंगे
कोई ऐसा वैसा लगा, तो पकड़ लेंगे...
तीसरी बार उत्सव की घोषणा की गई। इस बार...
सावधान रहना। हाल में कोई झांकने तक न पाए...
खतरा देखो, तो तुरंत विसिल...
अरे मदन... इतना बदहवास...
मदन पास आया, तो...
वह पठान मेरे पीछे पड़ा है। पूछे तो कह देना- इधर कोई नहीं आया...
ठहरो, हाल में... उफ चला गया। तुम भी अंदर जाओ... उस पर नजर रखो...

एक मिनट बाद
ऐ... वह छोकरा किदर गया... हरी कमीज जल्दी बताओ...
छोकरा कौन ? इधर कोई नहीं आया।
ऐ... अंदर नहीं जाना...

हट जा मच्छर... वरना कचूमर...
दौड़ो... बचाओ...
सी ऽऽ सी ऽऽ सी ऽऽ
सी ऽऽ सी ऽऽ सी ऽऽ
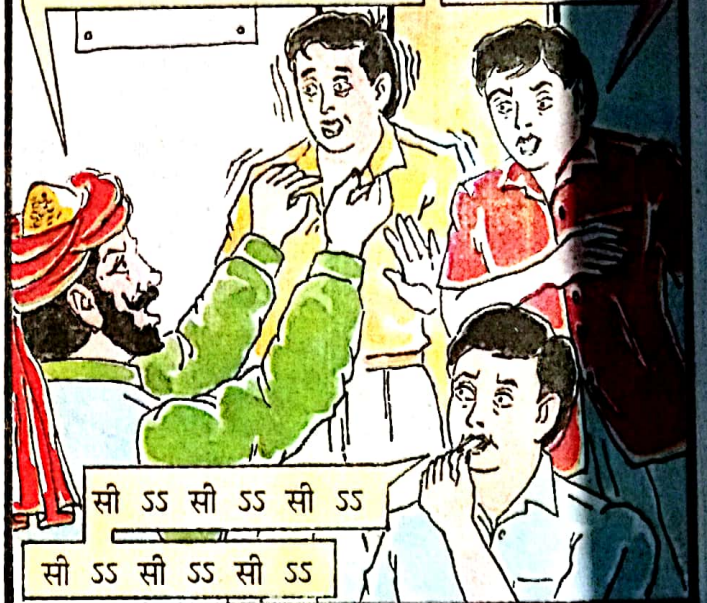
तुरंत पठान को अध्यापकों और विद्यार्थियों ने दबोच लिया। एक कमरे में...
बंद कर दो कमबख्त को...
शायद इसी ने बम की खबर...
शक्ल से ही ऐसा लगता है।

प्रधानाचार्य डरे-सहमे मदन को ले कार्यालय में आए। पुलिस इंसपेक्टर को बुलाकर सब कुछ बताया...
मुझे शक है... वही गड़बड़ करता है...
सच बताओ मदन, वह तुम्हें क्यों परेशान कर रहा है ?
पता... नहीं...

पुलिस ने उस पठान को गिरफ़्तार कर लिया।
हमें क्यों पकड़ा साब ? हम शरीफ... नौकरी करता, पेट भरता...
थाने चलो। वहीं कहना, जो कहना हो...
थाने में...
तुम मदन को जान से क्यों मारना चाहते हो ?
तुमने मना करने पर भी हाल में घुसने की कोशिश क्यों की...
हम बेकसूर है साब...
आखिर पठान टूट गया...
उस छोकरे ने हमें धोखा दिया। झूठ बोलकर हमसे फोन कराए—हाल में बम रखे हैं। फिर वायदे से मुकर गया...
साथियों पर रोब जमाने के लिए... पठान को स्कूल में नौकरी दिलाने का वायदा... मुझे पुरस्कार क्यों नहीं दिया गया...
और अगले दिन...
इस शैतानी के लिए तुम्हें स्कूल से निकाला जाना चाहिए... मगर एक मौका और देता हूं। पुरस्कार योग्य काम करोगे, तभी तो...
मैं अब अच्छा बनने की कोशिश... इस बार क्षमा कर दें।
कुलदीप

पोटली में गहने

—नयनकुमार राठी

बरसों पहले किसी गांव में किशन अपनी पत्नी कृष्णा के साथ रहता था। थोड़ी-बहुत खेतीबाड़ी थी। इससे उसका गुजारा हो रहा था। गांव के धनी किसानों को देख, कृष्णा हमेशा उसे टोका करती—"मेरी किस्मत ही खराब थी जो तुम्हारे साथ विवाह हुआ। विवाह के बाद आज तक तुमने मुझे सुख नहीं दिया। गांव में सभी सुखी-सम्पन्न हैं। सभी की औरतों के पास ढेरों गहने हैं। मेरे पास मायके से दी गई सोने की चूड़ियों के सिवाय कुछ नहीं है।"

किशन उसे समझाता—"कभी न कभी हमारे अच्छे दिन आएंगे। आज हमें दो वक्त की रोटी मिल रही है, यह क्या कम है! हम किसी के कर्जदार नहीं हैं।" कृष्णा मुंह बिचका देती। वह किसी न किसी बात को लेकर रोज उसे परेशान करती।

एक रात दो परियां उनके घर के बाहर खड़ी थीं। कृष्णा किशन को कोस रही थी। दोनों परियां परी रानी के पास पहुंचीं। सारी बात बताई। हंसते हुए वह बोली—"किशन की समस्या शीघ्र हल हो जाएगी।" दोनों परियां वहां से चली गईं। परी रानी ने स्वप्न परी को बुलाया। सारी बात बताकर बोली—"ऐसा स्वप्न बुनो कि कृष्णा ठीक हो जाए। किशन को परेशान करना छोड़ दे।" हामी भरकर स्वप्न परी वहां से रवाना गई।

दूसरे दिन परी रानी के पास पहुंचकर खुश होते हुए वह बोली—"रानी जी, मैंने सपना बुन दिया है। किशन के दिन फिर जाएंगे।"

दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर कृष्णा ने नहा-धोकर खाना बनाया। मनुहार करके किशन को खिलाने लगी। किशन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह आश्चर्य में था। कल तक उसे दुत्कारने वाली पत्नी आज उसे कितना प्यार दे रही है। वह कुछ पूछता, इससे पहले वह बोल पड़ी—"आज सुबह मुझे बहुत प्यारा सपना आया है। हम लोगों के पास बहुत धन हो गया है। गांव के अमीरों में हम गिने जाने लगे हैं। कल तक गांव के लोग तुम्हें देख मुंह बिचका लेते थे, आज नमस्कार कर रहे हैं। गांव की औरतें भी मुझे प्यार कर रही हैं।" कहते-कहते वह हंसने लगी।

समझाने के अंदाज में किशन बोला—"सुनो, सपने की बात पर मत जाओ। सपने कभी सच नहीं होते हैं।" कृष्णा हंसते हुए बोली—"मैंने सुना है, सुबह का सपना सच ही होता है।" किशन खेत पर चला गया। दिन भर काम करता रहा।

शाम को घर लौटते हुए उसने सोचा—'अजीब सपना आया है। अगर सपने की बात पर कृष्णा अड़ी रही, तो रोज मुझे परेशान करेगी। इससे बेहतर है घर न जाऊं।' वह अनजान रास्ते पर चल पड़ा। रात होने पर एक बियाबान जंगल में पहुंच गया। चारों ओर सन्नाटा था। जंगली जानवरों की भयानक आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

एक जगह बैठकर मन ही मन भगवान को याद करके बोला—'हे भगवान! तुमने किस मुसीबत में डाल दिया। पहले ही परेशान हूं, अब और ज्यादा परेशान हो गया। मेरी पत्नी को इतना सुंदर सपना क्यों दिखलाया?' अचानक शेर की आवाज सुन, डरकर वह तेजी से भागने लगा। पैर में कांटे चुभ गए। चप्पल टूट गई। फिर भी बेपरवाह होकर वह दौड़ता रहा। बहुत दूर पहुंचने पर एक झोंपड़ी के करीब पहुंचा। दरवाजा खटखटाया, एक बूढ़े ने दरवाजा खोल दिया। घबराकर उसने सारी बात बताई। रात

विश्राम करने की इजाजत चाही । बूढ़ा राजी हो गया । उसे अंदर ले जाकर पानी पिलाया । घर में जो रूखा-सूखा था, खिलाया । थकान के कारण उसकी आंख लग गई ।

रात उसे दो स्त्रियों की आवाजें सुनाई पड़ीं । एक बोली—"स्वप्न परी के कारण इस बेचारे को दुःख उठाना पड़ रहा है । उसने गलत सपना बुन दिया । इसकी पत्नी ने सच मान लिया, इसीलिए यह घर नहीं पहुंचा ।" दूसरी बोली—"हमें अभी स्वप्न परी के पास पहुंचकर सारी बात बतानी है । वह कोई रास्ता निकालेगी ।" और वे दोनों चली गईं । किशन समझ गया कि दो परियां आपस में बात कर रही थीं ।

दोनों परियां स्वप्न परी के पास पहुंचीं । सारी बात बताई । वह बोली—"हां, मुझसे गलती हो गई । मैंने गलत सपना बुन दिया । अब कोई रास्ता निकालती हूं ।" उसने एक सपना बुना । कुछ देर में कृष्णा को सपना आया कि उसका पति किशन घर नहीं पहुंचा है । वह बहुत परेशान है । रोते हुए कह रही है—'मैंने सपना सुनाकर बेकार में पति को परेशान किया है । वह सचमुच मुझे छोड़कर चले गए हैं । उन्हें कहां ढूंढू ? सारा गांव देख आई हूं, कहीं भी नहीं हैं । जब तक वह नहीं आएंगे, तब तक खाना नहीं खाऊंगी ।' उसने देखा, किशन बहुत दूर बनी झोंपड़ी में है । वह उसे मनाने गई । घर चलने को कहा । उदास-सा वह बोला—'जब तक तुम्हारा सपना साकार नहीं कर दूंगा, घर नहीं लौटूंगा ।' उसने बहुत मिन्नत की पर वह राजी नहीं हुआ । उदास-सी वह बोली—'जब तक आप नहीं चलेंगे, मैं भी यहीं रहूंगी ।' किशन उसे घर लौटने को समझा रहा है और वह मना कर रही है ।

इतने में उसकी आंख खुल गई । अंधेरे के सिवाय कुछ दिखाई नहीं पड़ा । वह उठी, दरवाजे पर ताला लगाकर निकल पड़ी । उसी राह पर वह चल रही थी जिस राह से किशन गुजरा था । बहुत दूर पहुंचने पर उसे झोंपड़ी दिखाई पड़ी । तब तक सबेरा हो चुका था । उसने देखा, किशन और एक बूढ़ा वहां बैठकर बातें कर रहे हैं । वह पीछे की ओर खड़ी होकर उनकी बातें सुनने लगी । बूढ़ा बोला—"बेटे, तुम्हें इस तरह घर से भागकर नहीं आना चाहिए था । तुम्हारी पत्नी कितनी दुखी हो रही होगी ।"

यह सुन, उदास-सा वह बोला—"बाबा, मैं करूं भी क्या ! भागकर आने के सिवाय मेरे पास कोई चारा नहीं था । आप ही सोचिए, रोज सपने की बात सुनाकर वह मुझे परेशान करती । मैं कब तक उसे दिलासा देता ? मुझसे काम भी नहीं होता ।"

हंसते हुए बूढ़ा बोला—"बेटा, घर आखिर घर होता है । पत्नी घर की लक्ष्मी होती है । तेरे जैसा हाल बरसों पहले मेरे साथ हुआ था । मैं भी पत्नी की जिद से परेशान होकर घर से भागकर आ गया था । मेरी पत्नी मुझे ढूंढ़ने नहीं आई । बहुत समय तक मैंने राह देखी । एक दिन चुपके से मैं घर पहुंचा । वहां मालूम हुआ, मेरे नहीं लौटने पर वह भी जीवित नहीं रही । मैं लौटकर वापस यहां आ गया । बहुत मेहनत करने लगा । अब मेरे पास बहुत धन है । मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं है । पता नहीं भगवान कब बुलवा ले । तुम्हें अपना बेटा मानकर धन सौंपता हूं । तुम धन लेकर जाओ । पत्नी को मनाओ । सुख से जीवन बिताओ ।"

किशन आश्चर्य में था । उसे विश्वास नहीं हो रहा था । बूढ़े ने उसे सूखी रोटियां खिलाई थीं । वह सोचने लगा—'इतना धन होते हुए भी बाबा ऐसे क्यों रहते हैं ?'

हंसते हुए बाबा बोले—"अब मुझसे कुछ न पूछना ?" उन्होंने संदूक उठाया, ताला खोलकर एक पोटली उसे थमाई । पोटली लेकर किशन उन्हें प्रणाम करके चला गया । कृष्णा पहले ही छिपकर निकल गई थी । घर आकर पलंग पर लेट गई थी ।

किशन घर पहुंचा, सारी बात बताई । खुश हो, पोटली खोली । उसमें बहुत से कीमती गहने और रुपए-पैसे थे । गांव में उसने मकान और बहुत से खेत खरीदे । कृष्णा को गहने मिल गए । खुश होते हुए वह किशन से बोली—"मैंने सही कहा था न, सुबह का सपना सच होता है ।"
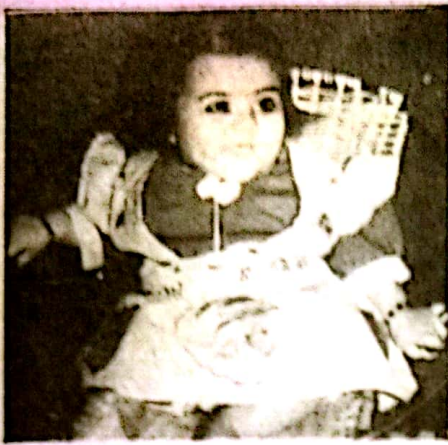
गुड़िया

लहर-लहर लहराए गुड़िया,
सबके मन को भाए गुड़िया।
चिड़िया जैसी चोंच खोलती,
हाथ-पंख फैलाए गुड़िया।
कभी होंठ में हंसी छिपाती,
कभी आंख भर लाए गुड़िया।
दादी से दीदे मटकाती,
दादा को बहकाए गुड़िया।
खुद भी नाचे और सभी को,
सौ-सौ नाच नचाए गुड़िया।

—विष्णु खन्ना

बता दो

मां, यह शब्द प्रदूषण क्या है,
इसका अर्थ बता दो,
इससे क्या-क्या हानि-लाभ हैं,
कुछ ये भी समझा दो।
टी. वी. पर इसके बारे में
क्या चर्चा होती है,
कभी फूल मुरझा जाता है,
कभी कली रोती है।

बेटा, दूषित वायु किसी भी
साधन से यदि आए,
और हमारे इधर-उधर वह
गंदापन फैलाए।
इसी वायु के दुष्प्रभाव से
व्याकुल है जग सारा,
फूल और कलियां रोती हैं
सी प्रदूषण द्वारा।

— दिग्गज मुरादाबादी

नाच नचाती

तितली मन को भाती है,
रंगबिरंगी पोशाकों में
सजकर बहुत लुभाती है।

कभी बाग के पत्तों पर
कभी फूल के छत्तों पर,
तितली रानी प्यार जताती
कभी किताबों, गत्तों पर।
तितली बहुत छकाती है,
जब भी उसको बढ़ें पकड़ने
पत्तों में छिप जाती है!

इंद्रधनुष की लिए छटा
गाती मन-मन गीत रटा,
तितली रानी पंख हिलाकर
उड़ती चाहे घिरे घटा।
बच्चों को ललचाती है,
तितली हमको नाच नचाती
पकड़ो तो उड़ जाती है!

—हरस्वरूप 'भंवर'

टमाटर

सब्जी और सलाद टमाटर
देता अनुपम स्वाद टमाटर,
सहज सभी में घुलता-मिलता,
बिन कोई फरियाद टमाटर।
सब्जी आलू और टमाटर
सब्जी गोभी और टमाटर,
बैंगन का भी बढ़े जायका,
सबका यह सिरमौर टमाटर।
चिकना-चिकना गोल टमाटर
खाने में अनमोल टमाटर,
बड़ा रसीला, छैल-छबीला,
तन को करे सुडौल टमाटर।
मन में चुस्ती लाए टमाटर
सबके मन को भाए टमाटर,
ताजा यदि तुम खाओ इसको,
सेहत खूब बनाए टमाटर।

—योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी'

ढम्मक-ढम्मक

बंदर मामा ढोल बजाते,
ढम्मक-ढम्मक,
भालू दादा नाच सिखाते,
झम्मक-झम्मक।
तम्बूरा ले मेंढक चाचा
सोच रहे थे,
परेशान हो अपनी दाढ़ी
नोच रहे थे।
तम्बूरे की तान और मैं—
कितना खींचू,
गदहेराम जब गीत सुनाते,
'ढेंचू-ढेंचू!'

—चंद्रकांता विश्वकर्मा

मत छुओ मुझे

—उमा शर्मा

एक ब्राह्मण था। काशी से विद्या पढ़ करके आया था। गांव में उसके पास केवल एक झोंपड़ी थी। उसी के सामने एक पत्थर पर शिवजी की मूर्ति रख पूजा अर्चना करता। उसे देखकर गांव के दूसरे लोग भी वहां आरती करते थे। जल चढ़ाने लगे। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ने लगी। पत्थर की पटिया वाला शिव मंदिर नाम से वह स्थान प्रसिद्ध हो गया। दूर-दूर के गांव वाले वहां मनौती मांगने आने लगे। पुजारी ब्राह्मण की गुजर-बसर बहुत अच्छी होने लगी। बढ़ती आमदनी को देख उसके शत्रु पैदा हो गए।

उसी का एक मित्र गंगादत्त भी काशी से पढ़कर आया था। उसके कटु स्वभाव के कारण गांव वाले उससे नाराज रहते थे।

एक दिन मौका देख गंगा दत्त ने अपने मित्र पर मंदिर में धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया।

उसने कहा— "पंडित जी, मंदिर में रखी चीजें चुराकर ले जाते हैं और बेच देते हैं।" उसने कई लोगों को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। उन्होंने पंडित जी के खिलाफ झूठी गवाही दे दी।

इस पर पंचायत ने पुजारी को गांव से निकल जाने का फैसला सुना दिया। उस मंदिर का पुजारी गंगादत्त को बना दिया। गंगादत्त तो यही चाहता था।

ब्राह्मण पुजारी को गांव छोड़ने और मंदिर छूटने का बहुत दुःख हुआ। उसने रास्ते में एक टूटा-फूटा खंडहर देखा। अपनी ज्योतिष विद्या से हिसाब लगाया। पता चला कि हजारों साल पहले यहां एक विशाल शक्तिपीठ थी। पुजारी वहीं रुक गया।

नाम का मोह

—रूपक प्रियदर्शी

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारत में एक संगीतज्ञ हुए। वह थे महात्मा त्यागराज। वह संगीतज्ञ होने के साथ-साथ भगवान के भक्त और समाज सुधारक भी थे।

उन्हीं दिनों त्रिभुवन स्वामीनाथ अय्यर कर्नाटक संगीत शैली के विद्वान कलाकार भी थे। वह आनंद भैरवी नामक शास्त्रीय राग को बहुत पसंद करते थे। इस राग को वह स्वयं भी बहुत अच्छा गाते थे। चारों ओर उनका नाम था। किंतु इतने से ही वह संतुष्ट न थे। वह इस राग में और अधिक प्रसिद्धि चाहते थे।

स्वामीनाथ अय्यर की अपनी संगीत मंडली भी थी। वह हमेशा उस मंडली के साथ जगह-जगह घूमते रहते। एक बार वह महात्मा त्यागराज के गृहनगर तिरूवैयार पहुंचे। लोगों ने एक दिन स्वामीनाथ अय्यर से आनंद भैरवी राग सुनाने का आग्रह किया। लोगों के अनुरोध पर स्वामीनाथ अय्यर ने आनंद भैरवी राग सुनाया। लोग उनका संगीत सुन, झूम उठे।

श्रोताओं की भीड़ में महात्मा त्यागराज के कुछ शिष्य भी थे। वे स्वामीनाथ अय्यर का आनंद भैरवी राग का गायन सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने महात्मा त्यागराज को इसकी सूचना दी। स्वामीनाथ अय्यर के गायन की प्रशंसा सुनकर त्यागराज को भी उनका गायन सुनने की इच्छा हुई। त्यागराज स्वयं भी इस राग के पंडित थे और कुछ रचनाएं भी इसमें की थीं। वह वेश बदलकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे, ताकि उन्हें कोई पहचान न ले। स्वामीनाथ अय्यर ने गाना आरंभ किया। लोग गायन सुनने में लीन थे वह बहुत प्रसन्न थे। त्यागराज भी उन्हें बधाई दे लिए अधीर होने लगे।

दिन-रात मेहनत करके उसने एक दिन खंडहर में दबी देवी की प्रतिमा को खोज निकला। देवी की प्रतिमा को उसने जैसे ही पहाड़ी पर रखा, तेज आंधी-बरसात शुरू हो गई। कई सालों से उस गांव में बरसात नहीं हो रही थी। गांव वालों को पता चला कि यह सब चमत्कार दैवी शक्ति का है। देवी प्रतिमा को उस ब्राह्मण पुजारी ने दिन-रात खुदाई करके निकाला है, तो वे सब बहुत प्रसन्न हुए।

गांव वालों ने ब्राह्मण पुजारी को मंदिर की व्यवस्था का सारा भार सौंप दिया। चंदा करके मंदिर का निर्माण किया। जब से वह ब्राह्मण पुजारी आया था, पूरा गांव खुशहाल हो गया था।

एक दिन गंगादत्त को बहुत बुरी दशा में भिखारी की तरह मंदिर के सामने पुजारी ने देखा। गंगादत्त की यह हालत देखकर, पुजारी को बहुत दुःख हुआ। वह उसके पास गया। हाल-चाल पूछने लगा।

गंगादत्त पुजारी से माफी मांगने लगा— "मुझे माफ कर दो भाई, मैं बहुत बड़ा पापी हूं। मैंने तुम्हारे ऊपर झूठे आरोप लगाए थे। उसी की सजा भुगत रहा हूं।"

—"तुम तो शिवालय के पुजारी बन गए थे, फिर यह दशा।"

"तुम्हारे जाने के बाद मैं मंदिर में मन चाही करने लगा था— गांव वालों को अधिक से अधिक चढ़ावा चढ़ाने के लिए मजबूर करता। धीरे-धीरे मैं योगी से भोगी बन गया। एक दिन देखा, शिवलिंग गायब है। वह धीरे-धीरे धरती में समाता जा रहा था। जैसे ही मैंने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, आवाज आई— "मुझे मत छू पापी। तू आज से इस लायक नहीं रहेगा जो किसी मूर्ति को छू सके। और तब से ही मेरे हाथ..."— कहकर वह रोने लगा।

ब्राह्मण पुजारी को उस पर दया आ गई। उसने गंगादत्त को अपने साथ रख लिया। ब्राह्मण पुजारी की संगत में रहकर दुष्ट गंगादत्त का स्वभाव बदल गया। ●

कुछ देर बाद स्वामीनाथ अय्यर ने गायन बंद किया। त्यागराज स्वयं को रोक न सके। वह मंच की ओर बढ़ने लगे। त्यागराज को अपनी ओर आता देख स्वामीनाथ अय्यर ने उन्हें पहचान लिया। वह मंच से उतर कर उनके चरणों में बैठ गए। वह बोले— "महात्मन, मैंने आपकी उपस्थिति में आनंद भैरवी राग अलापने की धृष्टता की है। इसके लिए आप मुझे क्षमा कर दीजिए।" त्यागराज ने उन्हें उठाकर गले लगाया। कहा— "मुझे अपने शिष्यों से पता चला कि तुम यहां आए हुए हो। तुम आनंद भैरवी राग के गायन में कुशल हो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।" कहते हुए उन्होंने अपना हाथ स्वामीनाथ अय्यर के सिर पर रख दिया। यह सुनकर स्वामीनाथ अय्यर ने कहा— "यदि आप मेरे गायन से सचमुच प्रसन्न हैं [illegible] मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूं।" त्यागराज ने [illegible]कराते हुए कहा— "अपनी इच्छा बताओ।" [illegible]मीनाथ अय्यर ने कहा— "मैं चाहता हूं कि आज के बाद आप आनंद भैरवी में कोई नई रचना नहीं करेंगे। न ही इस राग की शिक्षा किसी को देंगे। अब तक आपने आनंद भैरवी राग में तीन ही रचनाएं की हैं। अब भविष्य में लोग यह पूछेंगे कि त्यागराज जैसे विद्वान ने आनंद भैरवी राग में तीन ही रचनाएं क्यों की? तब इसके उत्तर में लोग आज की इस घटना को याद करेंगे। इस प्रकार आपके नाम के साथ मेरा भी नाम हमेशा के लिए जुड़ जाएगा।"

स्वामीनाथ अय्यर की बात सुनकर लोग स्तब्ध रह गए। कुछ लोगों ने स्वामीनाथ अय्यर को बुरा-भला कहा। त्यागराज के शिष्य भी उत्तेजित होने लगे। पर महात्मा त्यागराज ने लोगों से शांत रहने को कहा। "मैं अब वहीं करूंगा जैसा स्वामीनाथ अय्यर ने कहा है।" —इतना कहकर त्यागराज वहां से चले गए।

कहा जाता है कि उस दिन के बाद महात्मा त्यागराज ने न तो किसी शिष्य को आनंद भैरवी राग सिखाया और न ही इसमें कोई रचना की। ●

गौरैया का उपहार

—मृदुला हालन

छोटी गुड़िया-सी पायल स्कूल से लौटी,तो वह थक गई थी। भूख भी लगी हुई थी। घर में घुसते ही मां ने पूछा— "पायल, आज स्कूल में तुमने क्या पढ़ा ?"

"ओह मां ! यह सवाल बाद में। हमें भूख लगी है।"— पायल ठुनकी।

थोड़ी देर बाद पायल मां के हाथ से खाना खा रही थी। साथ में वह स्कूल की बातें भी मां को सुना रही थी।

मां ने कहा— "बातों से ही पेट भर लेगी। कुछ खा भी तो सही।"

"बस मां ! पेट भर गया।"— कहते हुए पायल ने मुंह पर हाथ रख लिया।

—"अजीब लड़की है। अभी भूख-भूख चिल्ला रही थी। एक कड़छी भात खाने से ही पेट भर गया। ऐसे आधा पेट खाने से भला काम चलेगा ?"

पायल बोली— "मेरा पेट क्या रामू काका का थैला है, जितना चाहो, ठूंस-ठूंस कर थैले में भर लो ?"

रामू कबाड़ी था। हर महीने वह मां से अखबार, शीशी, डिब्बे, प्लास्टिक आदि ले जाता था। पायल उससे कहती— "जो मिलता है, इसी थैले में ठूंस लेते हो रामू काका !"

पायल उठ गई, लेकिन जूठा भात तो नाली में नहीं फेंका जा सकता था। मां ने कुछ सोचा। फिर रसोई की खिड़की खोलकर, बाहर निकले एक पत्थर पर भात रख दिया।

सहसा मां चीं...चीं...की आवाज सुन चौंक उठीं। गर्दन घुमाकर देखा, तो मुसकराईं। दो छोटी-छोटी गौरैया वही भात खा रही थीं। 'इन्हें कैसे पता लग गया कि यहां खाने को मिल जाएगा ?'— मां ने सोचा।

रसोई में खाना बनता है। सब खाते हैं। पर भूख
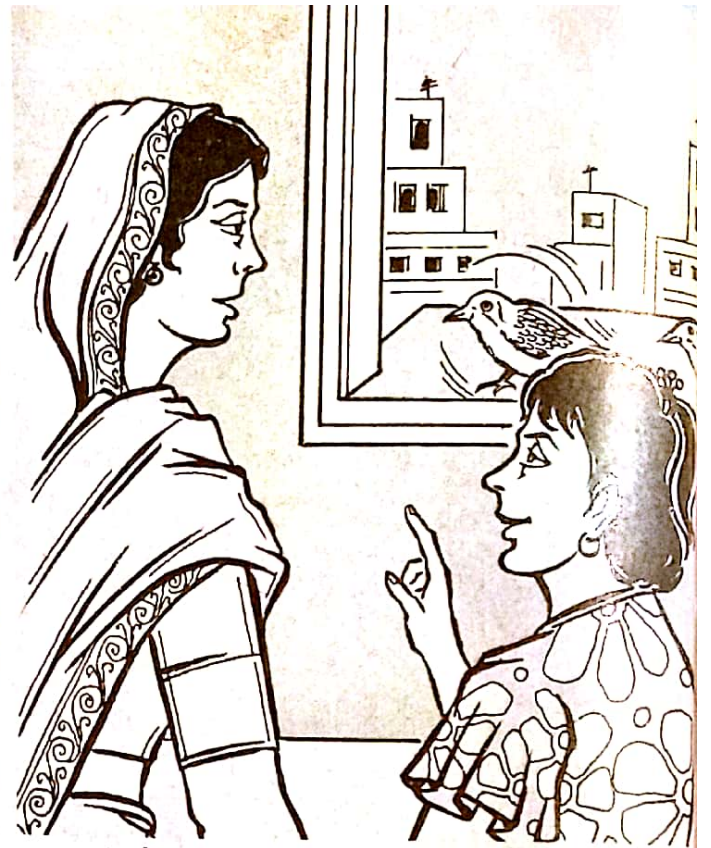
ही तो है। कभी किसी ने कम खाया, कभी ज्यादा खाया। हर दिन कुछ न कुछ तो थाली में बच ही जाता था। अब मां को सोचना नहीं पड़ता था कि वह बचे भोजन का क्या करें ? खिड़की खोली और भोजन पत्थर पर रख दिया।

अब मां रसोई में काम करतीं तो, देखतीं गौरैया पत्थर पर फुदक रही हैं। पास खड़ी पायल कह उठती— "मां, इनको कुछ खाने को दो। अरे ! कुछ भी दे दो। इन्हें भूख लगी होगी।"

और मां कभी रोटी, कभी आटा, बिसकुट, डबलरोटी कुछ न कुछ वहां जरूर रख देतीं। खुशी से फुदक-फुदक कर जब गौरैया खाना खातीं,तो मां और पायल दोनों मुसकरा उठतीं।

"अरे ! यह क्या कर रही है।"— मां ने एक दिन पायल को टोका।

"देखो मां ! गौरैया को खाने के बाद प्यास भी तो लगती होगी। मैं यह बात भी भूल गई। मां तुमने भी यह याद नहीं दिलाया। अब मैं इस प्याले में पानी रख देती हूं।"

'हे भगवान ! यह पायल तो मुझे किसी f पागल कर देगी।'— उसकी मां ने सोचा

हुआ यह था कि पायल चाय के मंहगे

एक प्याले में पानी रख रही थी ।

खैर ! अब पक्षियों के पानी पीने के लिए एक हेंडिल टूटा हुआ प्याला ढूंढ़ लिया गया । पायल सुबह-शाम प्याले में पानी भर देती ।

जो खाना-पीना गौरैया से शुरू हुआ था, इधर उसके अनेक भागीदार बन गए थे । कबूतर, मुर्गा, कौआ आदि सभी खाने की टोह में वहां आ जाते । पायल को वे कतई नहीं सुहाते । "देखो तो मां ! इन मोटे ताजे कबूतरों और कौओं को, यहां मुफ़्त का खाना खाने चले आते हैं । उफ ! यह भी नहीं सोचते कि इन छोटी-छोटी गौरैयों का खाना छीन लेना अच्छी बात नहीं है ।"— फिर वह उनको वहां से भगा देती ।

मां और बेटी की गौरैया से दोस्ती हो चली थी । खिड़की खुली पाकर गौरैया रसोई में चली आतीं । आंखें घुमा-घुमा कर इधर-उधर ताकतीं । शुरू में तो पायल को नजदीक आते देख गौरैया फुर्र से उड़ जाती थीं । पर अब सब दोस्त बन गए थे ।

पायल कभी हथेली पर चुग्गा रख लेती । गौरैया आतीं, चहककर पायल की तरफ देखतीं । फिर फुर्र से उड़कर उसके हाथ पर आ बैठतीं । एक-एक दाना खातीं और उड़ जातीं ।

बहुत दिनों तक गौरैया को खाना खिला-खिलाकर मां ने उनके बारे मे बहुत कुछ जान लिया था । उन्हें केक बहुत पसंद था । उसके बाद बिसकुट, दाल या चावल का दाना । मां कहतीं— "गौरैया भी आधुनिक हो गई हैं । केक का स्वाद जुबान पर चढ़ गया है ।"

कुछ दिन ऐसे ही बीत गए । फिर आया पायल का जन्मदिन । मां ने पायल के सभी मित्रों को बुलावा भेज दिया । पायल के लिए सफेद लेस की फूली-फूली, गुड़िया-जैसी फ्रॉक खरीदी गई । बालों में सफेद रिबन का फूल टांका गया । सब मित्र आए । गाना-बजाना हुआ । पायल को अनेक उपहार मिले ।

पर आज पायल अपनी गौरैया को भूल गई थी । सुबह से उन्हें दाना-पानी नहीं मिला था ।

बच्चों का खेल खत्म हुआ । मां ने आवाज दी— "पायल, केक काटो अब ।"

सब बच्चे मेज के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए । पायल ने 'हैप्पी बर्थडे टू यू' गाने के शोर में केक काटा । मां ने केक का एक टुकड़ा पायल के मुंह की ओर बढ़ाया । बोलीं— "पायल को केक बहुत अच्छा लगता है ।" यह सुनते ही पायल चौंकी ।

"क्या हुआ पायल ?"–मां ने पूछा ।

"मुझे थोड़ा केक और दो मां । तुम्हें तो पता है गौरैया को केक बहुत अच्छा लगता है । मैंने आज सुबह से उसे कुछ भी नहीं खिलाया ।"— हाथ में केक का टुकड़ा लेकर कहते हुए वह तेजी से रसोई में जा पहुंची ।

"मां !"— पायल जोर से चीखी ।

—"क्या हुआ बेटी ?" कहती हुई मां पायल के मित्रों के साथ वहां आ पहुंचीं ।

—"मां देखो ! आज गौरैया भी मेरे लिए उपहार लाई हैं ।"

मां ने देखा— उन गौरैयों के साथ उनका नन्हा बच्चा भी फुदक रहा था ।

पायल ने खिड़की खोली, तो फुदककर गौरैया उसके कंधों पर आ बैठी ।

बच्चों ने तालियां बजा दीं । वे बहुत प्रसन्न थे। ●

□ एक आदमी— डाक्टर साहब, मुझे स्वास्थ्य प्रमाणपत्र चाहिए।
डाक्टर— ठीक है, कल आना। क्योंकि आज मेरा ही स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

□ मोहन— यदि मैं ड्राइवर बन जाऊं, तो...
सोहन— डाक्टरों की आमदनी बढ़ जाएगी।

□ हलवाई— वाह साहब ! आपको कैसे मालूम कि जलेबियां कम मीठी हैं ?
ग्राहक— क्योंकि इन पर कम मक्खियां भिनभिना रही हैं।

□ डाक्टर— अरे भाई, जब तुम यहां आए थे तब तुमने पेट में दर्द बताया था। पर अब सिर में दर्द बता रहे हो।
रोगी— हां, डाक्टर साहब ! यदि थोड़ी देर और आपकी बातें सुनता रहा, तो बुखार भी हो सकता है।

□ एक खिलाड़ी— तुम बड़े सुस्त खिलाड़ी हो। मुझे देखो, मैं कैसे खेलता हूं ?
दूसरा खिलाड़ी— तभी तो शरीर पर जगह-जगह पट्टियां बंधी हैं।

□ एक आदमी— डाक्टर साहब, मेरे बबलू के कान कुछ छोटे हैं, क्या करूं ?
डाक्टर— स्कूल भेज दो, मास्टर साहब रोज उसके कान खींचकर बड़े कर देंगे।

□ एक मुर्गा— आज-कल तुम सुबह बांग भी नहीं देते, बहुत आलसी हो गए हो।
दूसरा मुर्गा— आलसी मैं नहीं, मेरा मालिक हो गया है। वह समय से घड़ी में अलार्म ही नहीं लगाता।

□ पर्यटक— कुछ ऐसी चीज लाओ कि तबियत हरी हो जाए।
होटल मैनेजर— बैरा, साहब को होटल के पीछे लान में ले जाओ। वहां हरियाली बहुत है।

□ ज्योतिषी (गुस्से से)—तुम अगले जन्म में बंदर बनोगे।
एक आदमी— कोई बात नहीं, मैं फल तोड़कर आपको खिलाया करूंगा। अब तो आप खुश हो जाइए।

□ अध्यापक— सोनू, तुम्हारे पिता इतने बड़े डाक्टर कैसे हो गए ?
सोनू— क्योंकि अक्सर वह मरीज को दवा देने से पहले खुद उस दवा को चखकर देखते हैं।

□ नौकर— मालिक, मैंने आपकी बहुत सेवा की। देखिए, मेरे काले बाल सफेद हो गए।
मालिक— लेकिन मेरे तो सारे बाल ही उड़ गए।

□ दारोगा— तुम माफी मांग लो, जेल से छुट्टी मिल जाएगी।
चोर— आपसे या जिसके यहां चोरी की है, उससे माफी मांगूं।

□ एक श्रोता— तुम जोर-जोर से ताली क्यों बजा रहे हो ?
दूसरा श्रोता—क्या करूं, यहां के मच्छर बहरे हैं। धीरे बजाता हूं, तो ये सुनते ही नहीं।

□ अध्यापक— मोहन, तुम्हारा रूमाल इतना गंदा क्यों है ?
मोहन— सर, भूल से मैं आज सोनू का रूमाल ले आया हूं।

□ मां— बेटा, तुम जान-बूझकर इतनी गलतियां क्यों करते हो ?
बेटा— क्योंकि अनजाने में तो इससे भी ज्यादा गलतियां हो जाती हैं।

□ कवि— आज के कवि सम्मेलन में बहुत भीड़ है !
आयोजक— हां, क्योंकि श्रोताओं को बताया गया था कि इस बार आप नहीं आएंगे।

□ पिता—बेटा, तुम्हें जेब खर्च के लिए कितने रुपए चाहिएं।
बेटा—बिना रुपए खर्च किए भला मैं यह कैसे बता सकता हूं।

तेनालीराम

पगड़ में कागज

राजा कृष्णदेव राय सप्ताह में एक दिन आम दरबार लगाते थे। उसमें कोई भी व्यक्ति आकर राजा को अपनी परेशानी बता सकता था।

एक दिन दरबार में एक बूढ़ा देहाती आया। घुटनों तक की धोती। बिना बांह की बंडी। सिर पर बड़ा-सा पग्गड़। पैरों में फटी जूतियां। आते ही वह अपने पग्गड़ को टटोलने लगा। उसकी विचित्र वेशभूषा और हरकत देख दरबारी मुसकराने लगे। देहाती उन्हें मुसकराता देख बिना कुछ कहे लौट गया।

सारा दरबार सन्न। यह तो एकदम अपमान था। मंत्री ने कहा—"ऐसे बेहूदा व्यक्ति को दंड दिया जाना चाहिए।"

राजा के संकेत पर सैनिकों ने दरबार से निकलते देहाती को पकड़ लिया। देहाती घबरा गया। बार-बार पूछने पर भी कुछ बोल न सका। राजा ने क्रोध में भरकर कहा—"क्या तुम गूंगे हो ?"

तुरंत सेनापति ने कहा—"गूंगा नहीं महाराज, यह शत्रु का भेदिया लगता है। नाटक कर रहा है।"

देहाती ने दयनीय दृष्टि से तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम बोला—"अन्नदाता, इसकी आंखें कह रही हैं कि इसने पग्गड़ में कुछ छिपा रखा है।"

देहाती की तलाशी ली गई। उसके पग्गड़ से एक कागज निकला। राजा ने उसे पढ़ा, तो देहाती से बोले—"ऐसा था तो तुम चुपचाप क्यों जाने लगे !"

देहाती हाथ जोड़कर बोला—"महाराज, जिसका अन्न खाते हैं, आपके सामने सब उसी की हंसी उड़ाने लगे। मैंने सोचा कि मेरी बात यहां भी नहीं सुनी जाएगी। इसीलिए वापस जा रहा था।"

राजा ने पूरी छानबीन कराई। पता चला कि राज्य के कारिंदे लगान वसूली के लिए किसानों पर अत्याचार करते थे। मुंह खोलने पर दंड की धमकी देते थे। व्यवस्था में सुधार का आदेश दे, राजा ने तेनालीराम से पूछा—"तुम्हें कैसे पता चला कि देहाती ने पग्गड़ में कुछ छिपा रखा है ?"

"उसके व्यवहार से।"—तेनालीराम बोला—"वह परेशान-सा टटोल रहा था राजन् ! किसी पर इस तरह हंसना बुद्धिमानी नहीं।"
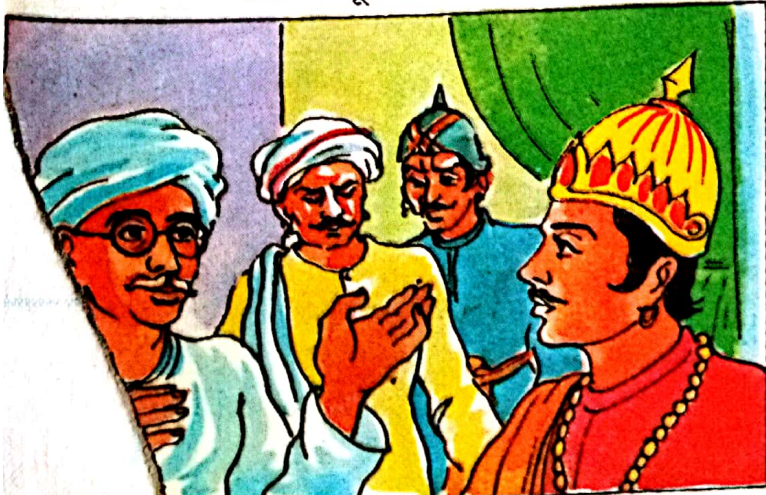
Scanned with CamScanner

चित्र : देबव्रत बनर्जी, तिमिर दत्त

कहें कहानी नई पुरानी

जगद्गुरु शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी— मानवता का पाठ पढ़ाने वाले युगपुरुष। संस्कृति और धर्म की कथा कहते तीन स्मारक।

१. सांची (मध्य प्रदेश) : प्राचीन बौद्ध तीर्थ। यहां अशोक का बनवाया हुआ सांची स्तूप है।

२. कांचीपुरम् (तमिलनाडु) : प्राचीन मंदिरों और ज्ञान का केंद्र। शंकराचार्य की लीलाभूमि।

३. कन्याकुमारी : भारत के धुर दक्षिण में।

१. तोरण द्वार

२. कांचीपुरम का एक मंदिर

वह शक्ति जिसने मीना को बनाया

कॅमल चैम्प

प्यारे दोस्तो,

आज स्कूल में पेंटिंग प्रतियोगिता का फर्स्ट प्राइज़ मुझे मिला. और जलनेवालों ने हमेशा की तरह सोचा कि किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे जिताया है. उन्हें क्या मालूम मेरी असली शक्ति है मेरा प्यारा कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर बॉक्स. मेरे कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर ही तो मेरी

पेंटिंग में जगमगाते, खिलखिलाते, इंद्रधनुषी रंग भरकर उसे बिल्कुल जीता-जागता बना देते हैं. स्कूल में मेरी पेंटिंग ने खूब रंग जमा रखा है. इसीलिए पापा सोचते हैं मैं बड़ी होकर हुसैन साहब जैसी महान चित्रकार बनूंगी. आखिर कॅमल चैम्प हूं न मैं.

इसके लिए शाबासी मिलनी चाहिए कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर्स को.

तुम्हारी दोस्त,

मीना.

camel
FANTASY
STUDENTS' WATER COLOURS
14 ASSORTED SHADES IN TUBES OF 6 ML
NON TOXIC
FREE UNIQUE OFFER

कॅमल

विजेता रंग अपनाओ. कॅमल चैम्प बन जाओ

कॅम्लिन लिमिटेड, आर्ट मटीरियल डिवीज़न, जे.बी. नगर, अंधेरी (पूर्व), बंबई ४०० ०५९.

INTERACT VISION

कॅमल चैम्प
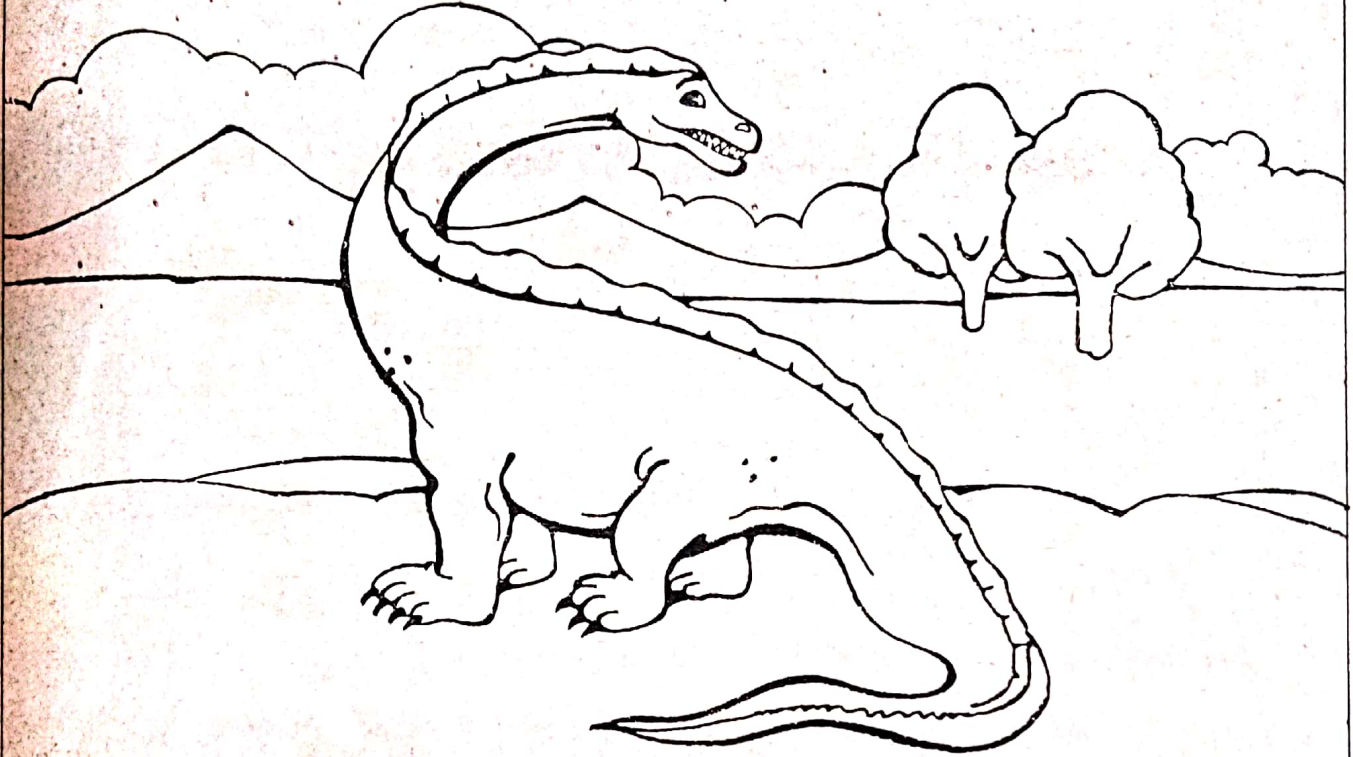
कॅमल विजेता बनने और आकर्षक पुरस्कार जीतने की आपको है चाह तो उसकी राह है बहुत आसान।

बस.. कॅमल के अनेक प्रकार के इंद्रधनुषी रंगों की छटा से रंग दीजिए इस चित्र को रंगों की अपनी सजीली कल्पना से। अपने मन के मुताबिक आप कॅमल के क्रांयोन वॅक्स, क्रायन्स क्रायप्लस, ऑयल पेस्टल्स, वाटर कलर या पोस्टर कलर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। जीतन के लिए हैं ढेर सारे आकर्षक पुरस्कार **पहला पुरस्कार**, कॅमल बम्पर मैक्सी पैक (150 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) **दूसरा पुरस्कार** कॅमल मिडी पॅक (100 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद), **तीसरा पुरस्कार** कॅमल मिनी पॅक (75 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) इसके अलावा **200 बेहतरीन रंगीन पुरस्कार** – "आई एम ए कॅमल चैम्प" 2- डी स्टीकर मुफ्त।

हां, मैं कॅमल विजेता बनना चाहता हू. रंगो से भरा चित्र इसके साथ लगा है

नाम ______________ उम्र ______________ वर्ष. लड़का/लड़की (कृपया निशान लगाएं)

घर का पता ______________

____

____

स्कूल ______________

नियम एवं विनियम: • प्रवेश शुल्क नहीं। खरीदने का कोई प्रमाण आवश्यक नहीं। • इस प्रतियोगिता में 15 साल की उम्र के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। • पूरी तरह से भरकर यह पूरा पृष्ठ हमे भेजना चाहिए। • प्रवेश फॉर्म के रूप में इस पृष्ठ की फोटोकॉपी का इस्तेमाल किया जा सकता है। • कॅम्लिन लि और इटरऐक्ट विजन एडव -एण्ड मार्के प्रा लि के कर्मचारियों के बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग नही ले सकते। • प्रविष्टियां इस विज्ञापन के प्रकाशन के महीने के समाप्त होने के 15 दिनों के अदर **कॅम्लिन लि. पोस्ट बैग सं. 37430, जे. बी. नगर, अंधेरी (पू), बम्बई - 400 059.** को भेजें। विजेताओं को अलग से सूचित किया जाएगा। पुरस्कार भेजने के लिए चार सप्ताह तक इतजार करने की कृपा करें। निर्णायकों का निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। कृपया इस कूपन को केवल अंग्रेजी में ही भरें।

कॅमल

सफलता के रंग

INTERACT VISION CL/94/7/HIN

कॅम्लिन लिमिटेड, आर्ट मॅटेरियल डिविजन, जे. बी. नगर, अंधेरी (पूर्व), बम्बई- 400 059.

पुतले की लाठी

—विनोद पंत

बहुत पुरानी बात है। हिमालय की घाटियों में गरुड़ गंगा के किनारे एक गरीब किसान सगतसिंह, अपने बेटे हरू के साथ रहता था। नदी के पास सगतसिंह की थोड़ी-सी भूमि थी। यद्यपि सगतसिंह मेहनती और ईमानदार था, किंतु थोड़ी-सी भूमि होने से वह अपने लिए साल भर का अन्न भी नहीं जुटा पाता था। किसी तरह दिन कट रहे थे। खेती के काम से निबटकर दोनों या तो जंगली फल और सब्जी ढूंढ कर लाते या बरसात में नदी द्वारा बहाकर लाई लकड़ियां चुनते फिरते। कभी-कभार नदी से मछलियां भी पकड़ लाते। गरुड़ गंगा के किनारे दूर-दूर तक न तो कोई दूसरे खेत थे और न कोई गांव। हरू वहां बिलकुल अकेला था। उसकी मां बचपन में ही चल बसी थी। हरू के लिए उसके पिता ही सब कुछ थे। किसी दूसरे को उसने कभी ठीक से जाना ही नहीं था। अभी हरू आठ वर्ष का ही था, फिर भी वह अपने पिता के कामों में भरपूर मदद करता था।

एक बार कुमाऊं के राजा भूदेव को आखेट से लौटते हुए सगतसिंह की झोंपड़ी में विश्राम करना पड़ा। सगतसिंह ने मोटे अनाज मडुवा और जंगली सब्जी कैरू से राजा का सत्कार किया। उस के विनम्र स्वभाव और अतिथि सत्कार से राजा भूदेव अत्यधिक प्रभावित हुए। उसकी विपन्नता देख, राजा ने नदी के किनारे की बहुत सारी भूमि सगतसिंह को इनाम में दे दी।

सगतसिंह भूमि पाकर उत्साहित हो उठा। उसने खूब परिश्रम किया। थोड़े ही समय में उसकी मेहनत रंग लाई। उसके खेत लहलहा उठे। भरपूर फसल होने लगी। लेकिन अब उसे दूर-दूर तक फैले खेतों की देखभाल की समस्या सताने लगी। यदि वह दिन में खेतों की रखवाली करता, तो रात को जंगली जानवर आकर उत्पात मचाते। अगर रात को जागता, तो दिन में हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों से ढेर सारे पक्षी आकर खेत चुग जाते। अंत में सगतसिंह ने बहुत सोच-विचार कर खेतों के बीच घासफूस का एक पुतला बनाया। नाम दिया भेसौण। भेसौण के हाथ में एक लाठी भी थमा दी। तत्काल प्रभाव पड़ा। भेसौण के डर से पक्षियों ने खेत चुगने बंद कर दिए।

हरू को भी खेल का एक साधन मिल गया। पिता की अनुपस्थिति में वह भेसौण के पास बैठकर उससे बातें करता। कल्पना की ऊंची उड़ान भरता। भले ही भेसौण उसकी बातों का उत्तर नहीं देता था, पर हरू को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह भेसौण की देखभाल वैसे ही करता था, जैसे कोई खिलौना हो।

एक दिन, सांझ के झुटपुटे में सगतसिंह अनाज बेचकर हाट से लौट रहा था। उसने जंगल में एक युवती को रोते देखा। सगतसिंह ने युवती के पास जाकर रोने का कारण पूछा। युवती ने रोते हुए बताया कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई है। चाचा-चाची ने उसकी सम्पत्ति हड़प कर, उसे घर से निकाल दिया है। वह पिछले कई दिनों से इधर-उधर भटकती फिर

रही है। युवती की कथा सुनकर, नेक सगतसिंह का हृदय भर आया। वह उसे अपने घर ले आया और उससे विवाह कर लिया।

वास्तव में वह युवती एक दुष्ट परी चांचरी थी। जिसके बुरे स्वभाव के कारण उसे चांचरी लोक से निकाल दिया गया था। परी चांचरी धरती पर आकर अपनी अलौकिक शक्तियां खो बैठी थी, पर उसने अपना दुष्ट स्वभाव नहीं छोड़ा था। सगतसिंह से विवाह कर, वह फूली नहीं समाई, किंतु हरू उसे फूटी आंख नहीं सुहाया। उसे लगा हरू के रहते वह पूरी स्वतंत्रता से इस धन-दौलत का उपयोग नहीं कर पाएगी। सगतसिंह के सामने वह हरू से बहुत प्यार करने का ढोंग करती। उसके बाहर जाते ही खेतों की रखवाली के बहाने हरू को रूखा-सूखा खिलाकर भेज देती। दोनों की अनुपस्थिति में वह मनमाने पकवान बनाकर खाती रहती थी।

पिता की अनुपस्थिति में हरू रात-दिन खेतों में पड़ा रहता था। दिन तो किसी तरह कट जाता, पर रात में उसे डर लगता था। जंगली जानवरों की अजीब-अजीब आवाजों से भयभीत होकर, अगर वह घर आ जाता, तो चांचरी उसे डांटती। दोबारा खेतों में भेज देती। हरू रोता हुआ फिर पुतले भेसौण के पास आकर बैठ जाता। उसे अब केवल भेसौण का ही

सहारा रह गया था। वह भेसौण के हाथ की लाठी पकड़कर कल्पना की दुनिया में खो जाता।

एक दिन सगतसिंह की अनुपस्थिति में दुष्ट चांचरी ने उसे फिर खेतों की रखवाली के लिए भेज दिया। स्वयं अपने लिए नए-नए व्यंजन बनाने बैठ गई। सर्दी का मौसम था। रुई के फाहों जैसी बर्फ गिर रही थी। हरू ठंड से कांपता, रोता हुआ भेसौण के पास आकर बैठ गया। उसने कातर आंखों से भेसौण की ओर देखा — 'काश यह लम्बा-चौड़ा पुतला जीवित होता और अपनी छाया में लेकर मुझे सर्दी से बचा लेता।' हरू ने सोचा। ठीक उसी समय आकाश मार्ग से परी चांचरियां हिमालय की एकांत ढलानों पर फिसलने का खेल खेलने निकलीं। छोटे-से हरू को सर्दी से ठिठुरते देख, उन्हें दया आ गई। वे यह भी जान गईं कि हरू को सताने में दुष्ट चांचरी का हाथ है। बस देखते ही देखते चांचरियों की रानी ने अपनी जादुई छड़ी घुमा दी।

'हरू डर मत। मैं जाग गया हूं।' — किसी ने सिसकते हुए हरू के कान के पास मधुर आवाज में कहा।

हरू ने इधर-उधर देखा। उसकी समझ में नहीं आया कि इस अंधेरी और बर्फीली रात में इतने प्यार से पुकार कर साहस बढ़ाने वाला कौन है? अचानक भेसौण पुतले को अपनी ओर झुककर शरीर ढांपते देख, वह चकित रह गया। 'तो क्या भेसौण सचमुच जीवित हो गया है। पर कैसे।'–उसने सोचा।

'हां हरू, परी चांचरियों की कृपा से मुझ में प्राण आ गए हैं। अब तू किसी प्रकार की चिंता मत कर।' भेसौण ने हंसते हुए धीरे से कहा।

रात भर भेसौण और हरू खेतों की रखवाली करते, खेलते रहे। भेसौण ने अपनी करामाती लाठी के प्रभाव से स्वादिष्ट भोजन निकालकर, उसे खिलाया। दिन निकलने से पहले ही भेसौण ने हरू को रात में मिलने का विश्वास दिलाते हुए, घर की ओर भेज दिया। स्वयं फिर पुतला बनकर खड़ा हो गया।

अब यह क्रम प्रतिदिन चलने लगा। रात को हरू

के आते ही भेसौण जाग जाता। दोनों खूब खेलते। स्वादिष्ट व्यंजन खाते। सुबह होते ही भेसौण फिर अपने पुराने रूप में आ जाता।

दुष्ट चांचरी हरू में आने वाले परिवर्तन को देखकर चौंक उठी। यही सोचकर एक रात उसने हरू का छिपकर पीछा किया। खेत में जीते-जागते भेसौण को हरू के साथ खेलता देखकर वह हक्की-बक्की रह गई। चांचरी की दुष्ट बुद्धि चमकी। वह तेजी से घर की ओर लपकी। चूल्हे से जलती हुई लकड़ी लाकर भेसौण में आग लगा दी। घास फूस और चीथड़ों से बना भेसौण धू-धूकर जलने लगा।

हरू ने भेसौण को जलते देखा, तो उसकी लाठी पकड़कर चीख-चीख कर रोने लगा। विमाता चांचरी अपनी विजय पर अट्टहास करती हुई घर चली गई। उसने हरू की ओर मुड़कर भी नहीं देखा। पूरा भेसौण जलकर राख हो गया। केवल एक लाठी बची थी। हरू लाठी पकड़े-पकड़े रोता हुआ भेसौण की राख के पास ही हार-थककर सो गया। उसका सारा खेल ही समाप्त हो गया था।

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। अचानक हरू की नींद टूट गई। उसे लगा, कोई उसे जगा रहा है। लाठी से आवाज आ रही थी–'तू रो मत हरू।' लाठी ने कहा — 'जो जला है वह घासफूस का पुतला था। मैं परी रानी द्वारा दी गई शक्तियों के साथ इस लाठी में आ गया हूं। अब तू आंसू पोंछ। मुझे झाड़ियों के बीच छिपाकर घर चला जा। तेरे पिता हाट से वापस आने वाले हैं। आज अन्याय का अंत हो जाएगा।'

हरू ने लाठी के कहे अनुसार सारे कार्य किए और घर आकर चुपचाप एक कोने में बैठ गया। विमाता ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह प्रसन्न होकर सगतसिंह के लिए बढ़िया खाना बनाने में जुट गई थी। कुछ देर बाद, थका-हारा सगतसिंह घर लौटा। उसे घर का वातावरण कुछ बदला-बदला-सा नजर आया। हरू एक कोने में उदास बैठा था। भीतर आते ही दुष्ट चांचरी ने हरू की शिकायत करते हुए कहा कि हरू बहुत उपद्रवी हो गया है। उसका बिलकुल कहा नहीं मानता। आज बार-बार मना करने पर भी इसने खेत में खड़े भेसौण पुतले को जला दिया।

पत्नी की बात सुनकर सगतसिंह बहुत क्रोधित हुआ। हरू ने रो-रो कर बार-बार कहा कि भेसौण को उसने नहीं, मां ने जलाया है। लेकिन सगतसिंह ने उसकी बात नहीं सुनी। वह हरू को घसीटता हुआ, खेत में ले गया। पीछे-पीछे दुष्ट चांचरी भी आ गई। जले हुए भेसौण को दिखा-दिखा कर हरू को कोसने लगी। विशाल भेसौण पुतले की हालत देखकर, सगतसिंह का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। दुष्ट चांचरी के शब्दों ने आग में घी का काम किया। सगतसिंह क्रोध में आकर, हरू को पीटने के लिए आगे बढ़ा। हरू दौड़कर झाड़ियों में छिपाई भेसौण की लाठी उठा लाया।

हरू ने गरज कर अपने पिता से कहा — "रुक जाइए पिता जी ! सच और झूठ का निर्णय आप नहीं, भेसौण की यह लाठी करेगी।" हरू ने लाठी को छोड़ दिया। लाठी हवा में तैरती हुई विमाता के पास पहुंच कर उसकी पिटाई करने लगी।

दुष्ट चांचरी लाठी की मार से चीखकर इधर-उधर भागने लगी। इस दृश्य को देखकर सगतसिंह हक्का-बक्का रह गया। चीखने के साथ ही चांचरी एक भद्दी और कुरूप औरत में बदलने लगी। उसने रोते-रोते सगतसिंह को सच्ची कहानी बता दी। कहानी खत्म होते ही दुष्ट चांचरी काले धुएं में बदल कर हवा में विलीन हो गई।

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. चल-चल—, नाव चलाएं हैया रे हैया!
(राजा/रामू)

२. — की सुंदरता की परख तो आप ही कर सकते हैं राजन!
(भाले/भाषा)

४. अम्मां, चिंटू को तो बस, हर वक्त—चाहिए।
(चीनी/चीकू)

८. सचमुच,—कितनी सुंदर है!
(रात/रानी)

९. लो, मैं—चला आया सोमदेव।
(भी/ही)

११. सिद्धराज,—को लेकर तुम्हीं गए थे न!
(सोना/मैना)

१२. कभी खाकर देखो यह मिठाई!

ऊपर से नीचे

३. गरमियों में—के पेड़ की छाया कितनी अच्छी लगती है!
(आम/नीम)

५. उस—पर इतने सितारे जड़े थे कि मैं चकित रह गया।
(डाल/भाल)

६. रंग-रंग के गुलाबों का मेला देखो—!
(भाई/भाभी)

७. उन—की याद हमारे दिल में कभी कम न होगी।
(वीरों/तीरों)

१०. भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०६

नाम ____________________

उम्र ______ पता ____________________

____

(१) रा			(२) भा			(३)
	(४) ची					म
(५)			(६) भा		(७)	
ल					रों	
	(८) रा			(९)		(१०)
(११)	ना	अंतिम तिथि: १५.६.९४				वी
	(१२)	न		ता		

न.ज्ञा.प. ३०६

जॉमेट्री का मज़ा यही
हर कोण अचूक
हर रेखा सही!
WITH PENCIL SHARPENER
kores®
SUCCESS
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENT SET
अपने लिए
कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट लीजिए.
इसके अचूक उपकरण
सालोंसाल उत्तम कार्य करते हैं.
सर्वोत्तम ही लीजिए: कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट.
कोरस का एक और श्रेष्ठ उत्पादन:
एलीगेंट जॉमेट्री सेट.
ABCDEFGHIJKLM
NOPQRSTUVWXYZ
abcdefghijklmnopqrst
uvwxyz 1234567890
मुफ़्त!
*अक्षरोंका स्टेंसिल साथ में
कोरस
कोरस (इंडिया) लि. बंबई 400 018
भारत-भर में शाखाएं
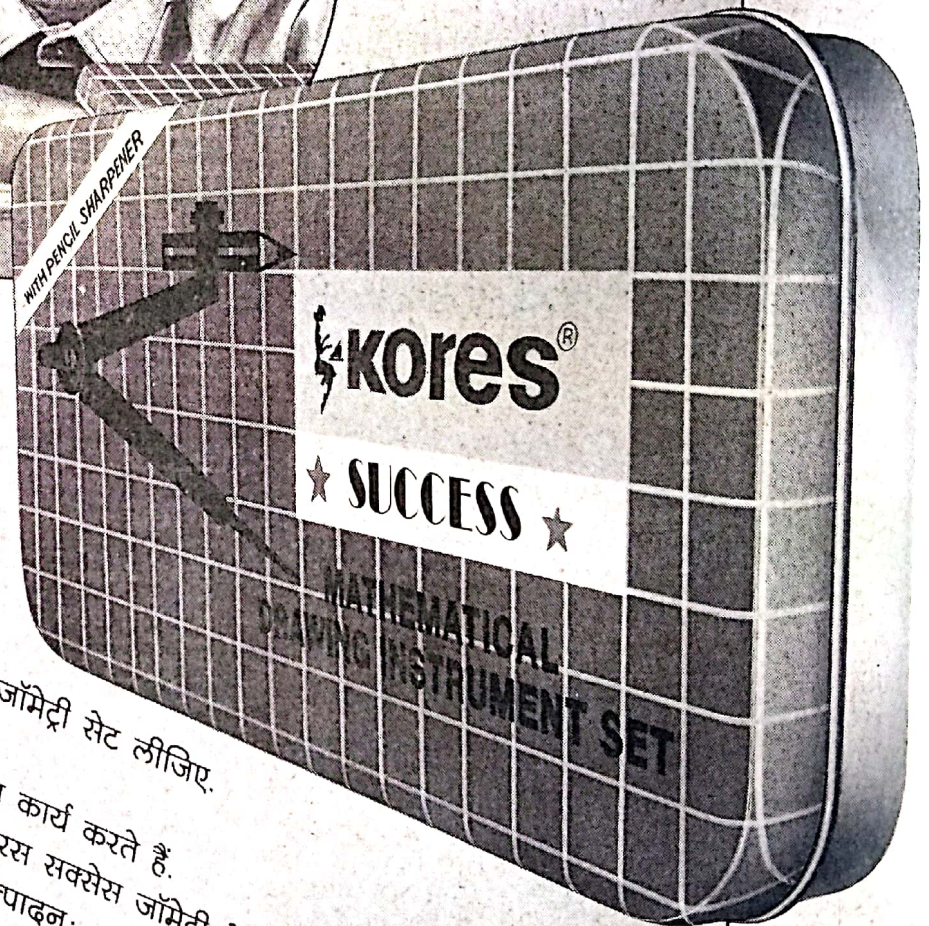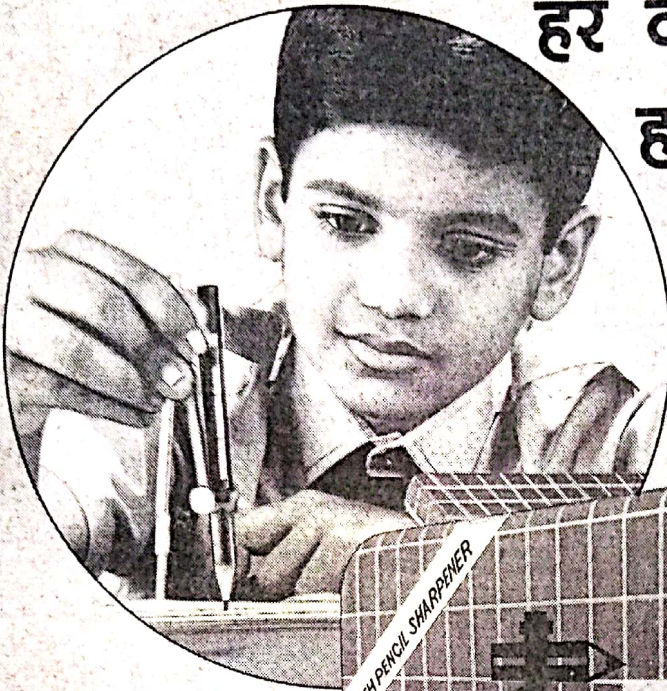
बोले नागराज

—सुनीति

महर्षि कश्यप की पत्नी कद्रू ने अपने सर्प पुत्रों को किसी कार्य की आज्ञा दी। पुत्रों ने उसकी बात नहीं मानी। कद्रू ने नाराज होकर उन्हें शाप दिया—"जाओ तुम कुछ वर्ष बाद सर्पयज्ञ में जलकर भस्म हो जाओगे।"—यह सुनकर सब सर्प बड़े घबराए।

नागराज वासुकि भागे-भागे देवताओं के पास गए। समुद्र मंथन के समय वासुकि को डोरी बनाकर देवताओं ने चौदह रत्न प्राप्त किए थे। इसलिए देवता उन्हें ब्रह्माजी के पास ले गए। ब्रह्माजी ने कुछ देर विचार कर वासुकि को बताया कि 'सर्पयज्ञ में सर्पों का विनाश जरूर होगा। पर आपकी बहन का पुत्र ही इस यज्ञ को रुकवा देगा।'

उन्हीं दिनों जरत्कारु नाम के एक मुनि थे। जो जंगल में केवल वायु खाकर और पानी पीकर तपस्या [illegible]रु रहे थे। एक दिन वह ऐसी जगह पहुंचे, जहां कुछ [illegible]र एक गड्ढे में उलटे लटक रहे थे। ऊपर केवल [illegible]छोटी-सी शाखा शेष थी। उसे भी चूहा कुतर रहा

जरत्कारु को उनकी यह दशा देखकर बहुत दया आई। उन्होंने उनसे पूछा—"भगवन, आप कौन हैं? इस दशा में क्यों लटक रहे हैं? ऊपर तो अब केवल एक ही पतली डाली बची है। उसे भी चूहा कुतर रहा है। अगर वह कट गई, तो आप निश्चित ही गड्ढे में गिर पड़ेंगे। अगर मैं आपके लिए कुछ कर सकूं, तो अपना अहोभाग्य मानूंगा। आप कहें, तो मैं अपनी तपस्या का सारा फल आपको दे दूं।"

पूर्वजों ने कहा—"बेटा, तपस्या की बात होती, तो हमने भी कम तपस्या नहीं की। पर यह तो हमारे वंश की बात है। अब हमारे वंशजों में केवल एक ही बेटा बचा है। वह भी शादी नहीं करता। तुम यह जो चूहा देख रहे हो, यह काल है। चूहा अर्थात काल जब इसे भी काट देगा, तो हम सभी गड्ढे में गिर पड़ेंगे।"

—"महाभाग! आपके पुत्र का क्या नाम है?"

—"बेटा, हमारे पुत्र का नाम जरत्कारु है। तुम कभी उससे मिलो तो उसे हमारा यह संदेश कह देना!"

जरत्कारु ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और कहा—"पितरो, मैंने निश्चय किया था इसी प्रकार

तपस्या करते हुए प्राणों का त्याग करूंगा। पर अब मैं विवाह जरूर करूंगा।"

इसके बाद जरत्कारु मुनि वन में घूमने लगे। उन्होंने निश्चय किया था — मैं उसी लड़की के साथ विवाह करूंगा जिसका नाम जरत्कारु हो। जिसका पालन-पोषण मुझे न करना पड़े। तीसरी बात यह है कि मैं किसी के द्वार पर जाकर लड़की नहीं मागूंगा।"

जरत्कारु मुनि ने जंगल में जाकर घोषणा की— 'यहां रहने वाले प्राणी सुनें। मुझे संतान पाने के लिए पत्नी की आवश्यकता है। जिस किसी की भी गुणवती कन्या हो, वह मुझ ब्राह्मण को अपनी लड़की दे दे। उस लड़की का नाम भी जरत्कारु होना चाहिए।'

नागराज वासुकि ने भी जरत्कारु की घोषणा सुनी। उन्होंने इसी अवसर के लिए अपनी बहन जरत्कारु को पाल-पोसकर खूब योग्य बनाया था।

वह अपनी बहन को लेकर जरत्कारु की सेवा में उपस्थित हुए। यथा समय दोनों का विवाह हो गया।

दो-तीन वर्ष के बाद जरत्कारु फिर से जंगल में चले गए। जाते-जाते पत्नी को आशीर्वाद दे गए कि—"तुम्हारा पुत्र बहुत तेजस्वी और विद्वान होगा।"

जरत्कारु के यहां पुत्र हुआ। मामा वासुकि ने उसे गुरुकुल में भेजकर खूब पढ़ाया-लिखाता। उसका नाम था आस्तीक। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की मृत्यु हो गई थी। उनके पुत्र थे महाराज परीक्षित, जिनको छोटी-सी गलती के कारण शृंगी ऋषि ने तक्षक सांप से डंसे जाने का शाप दिया।

बहुत वर्षों के बाद महाराज परीक्षित के पुत्र

जनमेजय ने जब तक्षक की क्रूरता और चालाकी के बारे में सुना, तो उन्हें सांपों पर बड़ा गुस्सा आया। उन्होंने सर्पयज्ञ किया। उसमें हजारों सर्प दिन-प्रतिदिन यज्ञकुंड में गिर-गिरकर भस्म होने लगे।

तब वासुकि ने आस्तीक से प्रार्थना की—"बेटा, इस विनाश को केवल तुम ही रोक सकते हो। ब्रह्माजी ने यही भविष्यवाणी की थी।"

आस्तीक यज्ञ में गए। वहां जाकर उन्होंने सबसे पहले यज्ञ की बड़े सुंदर शब्दों में प्रशंसा की। उसके बाद यज्ञ के पुरोहितों की स्तुति करते हुए कहा कि उनका मंत्रगायन बहुत ही मधुर है। उसके बाद यज्ञ में आनेवाले लोगों की स्तुति की सबसे अंत में महाराज जनमेजय के यश का खूब गुणगान किया।

आस्तीक ऋषि बहुत विद्वान तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनकी स्तुति भी इतनी मार्मिक थी कि राजा तथा ब्राह्मण सभी गद्‌गद् हो गए। सब एक स्वर से बोले—"इन्हें इसका पारितोषिक मिलना चाहिए।"

राजा ने कहा—"ऋषिवर, हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं। आप जो चाहें मांग लें।"

आस्तीक ने कहा—"महाराज, सज्जन अपने कहे हुए वचनों से कभी नहीं मुकरते। अगर आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो कृपा करके यह सर्पयज्ञ बंद करवा दीजिए।"

ऊपर अकाश में तक्षक दिखाई दिया। वह इन्द्र के भवन में छिपा हुआ था। यज्ञ के मंत्रबल से यज्ञ कुंड में गिरने ही वाला था।

आस्तीक ने हाथ बढ़ाकर उसे वहीं रोक दिया। कहा—"ठहर जा।" वह वहीं ठहर गया था। महाराज जनमेजय ने आस्तीक से कहा—"कोई और वर मांग लो।" आस्तीक ने कहा—"महाराज, मुझे धन-संपत्ति किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं है। आप यह यज्ञ रुकवा दीजिए। मैं यही मांगता हूं।"

राजा ने कहा—"तथास्तु।"

इस प्रकार सर्पयज्ञ रुक गया।

खुश होकर मामा वासुकि ने आस्तीक को लगा लिया।

वाह! कितना ठंडा, बेटा हाथ, पांव भी धुला दो और दो लोटे मेरे बदन पर। भगवान तुम्हें खुश रखे

बालटी में पानी समझ कर सारा शर्बत पी गई, अब मटके में...

सुबह से पानी से खेल रहे हो, एक मटका अपनी आण्टी को भी... उपकार होगा
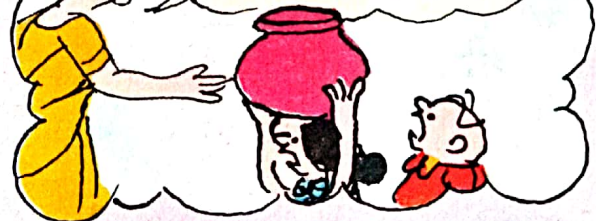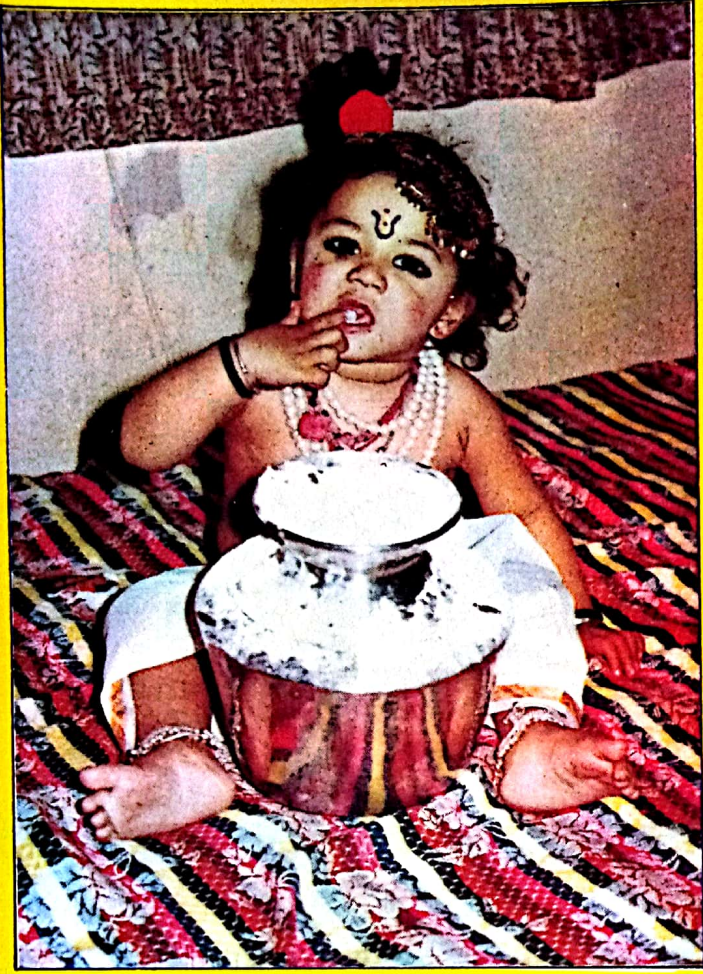
शीर्षक बताइए

मैं नहीं माखन खायो : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जून, '९४ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '९४ अंक

पुरस्कृत चित्र

फिलसीता द्वारा जेम्स मिज, सी-१३५, सर्वोदय एन्क्लेव, नई दिल्ली-११००१७

इनके चित्र भी पसंद आए—
संतोषकुमार, मुजफ्फरपुर; गौरीकुमारी, नई दिल्ली-१८; रसिका पुन्डीर, नानौता, सहारनपुर; रूपेश विश्वनाथ, फरीदाबाद; सौरभ गर्ग, चकगुजरान, होशियारपुर (पं.)।

पत्र मिला

□ कपिलदेव का चित्र इस अंक की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। 'राजमाता', 'तीन वचन', 'पारसमणि', 'महाबली बेटा' तथा 'पहली रोटी' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'तेनालीराम' के तो क्या कहने!

—जयदीप काजल, नारनौंद (हरि.)

□ हमें 'नंदन' का बहुत इंतजार करना पड़ता है, तो बहुत गुस्सा आता है। लेकिन पत्रिका मिलते ही गुस्सा छूमंतर हो जाता है। यह हम बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है।

—कुंदनकुमार, भूपतिपुर (बिहार)

□ अप्रैल अंक बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। 'तीन वचन', 'हार का उपहार' तथा 'खुशी का दिन' कहानियां बहुत बढ़िया थीं। गेंदबाजी में विश्व कीर्तिमान बनाने वाले क्रिकेट खिलाड़ी कपिलदेव का चित्र अच्छा लगा।

—धर्मप्रकाश सिंहल, हिंडौन सिटी

□ इस अंक को एक बार पढ़ने के बाद दोबारा पढ़ने की चाहत रहती है। कहानियों में 'खुशी का दिन' बेजोड़ थी। कपिलदेव का चित्र छापकर आपने इस महान खिलाड़ी को सम्मान प्रदान किया है।

—मनीष सांखला, गंगरार (राज.)

□ मेरे मम्मी-पापा ने मुझसे 'नंदन' पढ़ने को कहा। मुझे यह पत्रिका बेहद अच्छी लगी। यह पत्रिका मनोरंजन और ज्ञान से भरपूर है। इसकी सभी रचनाएं मनमोहक होती हैं।

—राजू बादल, गुवाहटी (असम)

□ 'दंड को दंड' और 'पिकनिक' चित्रकथाएं मजेदार लगीं। 'हर दिन एक' और 'पहली रोटी' कहानियां बहुत शिक्षाप्रद लगीं।

—विनय मिश्र, नौबस्ता, कानपुर

□ आसमान का चांद रोशनी देता है अपार
उसी तरह नंदन हमें कहानी देता हजार,
हमें भी 'नंदन' प्यारा है जो शिक्षा देता अपार
हर महीने 'नंदन' से आती खुशियों की बौछार।

—दयानंद पुंडोरा, फरीदाबाद

□ यह पत्रिका किशोरों का अच्छा मार्गदर्शन करती है। आजकल बाजार में घटिया और सस्ते साहित्य की पुस्तकें छाई हुई हैं। ऐसे में 'नंदन' में उच्च कोटि का साहित्य पढ़ने को मिलता है।

—प्रेमशंकर, खगड़िया

□ 'नंदन' नियमित रूप से पढ़ता हूं। इसे पढ़कर लगता है जैसे इंद्र के बगीचे में टहल रहा होऊं।

—वाचस्पति मणि त्रिपाठी, महाराजगंज

□ उर्दू भाषी होते हुए भी 'नंदन' बहुत शौक से पढ़ता हूं। मुझे अप्रैल अंक बहुत पसंद आया। 'पारसमणि', 'पहली रोटी' तथा 'पिजारो की तलवार' कहानियां विशेष पसंद आईं।

—मो. फाहद अंजुम, बिहारशरीफ

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अमित सिंघल, बिसवां (उ. प्र.); संतोष गुप्ता, रायगढ़ (महा.); महेंद्र डामाणी, चित्तौड़गढ़।

शीर्षक बताइए
परिणाम

'नंदन' अप्रैल' ९४ में छपे चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए–

इसमें घूमूं दुनिया सारी, मेरी गाड़ी सबसे प्यारी।
—धीरेंद्र वर्मा, टाइप III/७७ सैक्टर-१ बी. एच. ई. एल. टाउनशिप, झांसी।

साइकिल पर मैं होकर सवार, चली अपनी गुड़िया के द्वार।
—कुमारी पारमिता सुमंतभद्र, पो. बॉक्स नं. १२, चिंचवड़, पूना।

मम्मी ने साइकिल दिलवाई, मैंने उस पर दौड़ लगाई।
—शुभम् श्रीवास्तव, एस. के. श्रीवास्तव, असम काटन मिल्स, पो. चारद्वार, जि. शोणितपुर (असम)।

कहां जाऊं? समझ न पाऊं।
—सौरभ, विनोद सिंह, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा, ब्लाक कालोनी, औरगांबाद (बि.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : मीनाक्षी वरुण, बिजनौर, (उ. प्र.) ; अवि माथुर, गौतमनगर, नई दिल्ली ; राधेश्याम जोशी, चुरू (राज.) ; निर्मलसिंह सैनी, मोहाली, (पं.) ; विश्वकर्मा, गुड़गांव (हरि.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं दीवार पर चित्र को टांगने वाली डोरी और कील दिखाई दे रही है।
२. टेलीफोन में डायल नहीं है।
३. नर्स के बाल पीछे से अलग तरह के हैं।
४. डाक्टर का दायां पैर अधिक घूमा हुआ है।
५. कुर्सी में तीन पैडल लगे हैं।
६. उस पर बैठे मरीज का नैपकिन लम्बा है।
७. दाएं कोने में रखी बड़ी शीशी पर डाट नहीं है।
८. आर्क लैम्प का एक भाग काला है।
९. ड्रिल मशीन का सिरा घूमा हुआ है।
१०. टोप टांगने की एक खूंटी गायब है।

पुरस्कृत कथाएं

पेड़ बोला

असम चाय के बागानों से भरा है। आजादी के पहले बागानों के मालिक अंग्रेज थे। उनके मैनेजर भी अंग्रेज होते थे। आजादी के बाद भारतीयों ने वे बागान खरीद लिए। भारतीय प्रबंधकों ने बागानों का कार्यभार संभाला।

बरपेटा चाय बागान का प्रबंधक भूपेन गोगोई दीमापुर का रहने वाला था। उसका एक लड़का आशु और दो लड़कियां मीना और मीनी थीं। तीनों बच्चे बड़े होशियार थे। स्कूल से आने के बाद वे अक्सर पिता जी के साथ चाय बागान जाते थे। वे खूब घूमते और मजदूरों को चाय की पत्ती तोड़ते देखा करते।

चाय के बागानों से लगे जंगल में तरह-तरह के पेड़ भरे पड़े थे। जब से शहरों में पक्के मकान बनने शुरू हुए, इमारती लकड़ियों की कीमत बहुत बढ़ गई थी। ठेकेदारों के हाथ में जंगल आने से खूब कटाई हो रही थी और खूबसूरत जंगल उजड़ने लगे थे।

बरपेटा से लगे जंगल को भी प्रबंधक गोगोई ठेकेदारों को बेचने की सोच रहा था। एक दिन तीनों बच्चे स्कूल से आकर जंगल की ओर घूमने निकल गए। अचानक उनकी नजर एक अनोखे पेड़ पर पड़ी। आदमी के हाथ की तरह उसके पत्तों की बनावट थी। वे दोनों हाथ जोड़े कुछ कह रहे थे। बच्चे उस पेड़ के नीचे जा पहुंचे। एक चिड़िया उस पेड़ पर बैठी थी। उसने कहना शुरू किया कि पेड़ों को न काटने दें। पेड़ों को भी दर्द होता है। वे फल-फूल और छाया देते हैं। फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं।

यह सुनते ही तीनों बच्चे एक साथ कह उठे कि वे पेड़ नहीं कटने देंगे। उन्होंने अपने पिता से कहकर पेड़ों का जंगल ठेकेदार के हाथ बेचने से रुकवा दिया।

आज बरपेटा के वे जंगल और गोगोई का व चाय बागान उस क्षेत्र के सबसे खूबसूरत स्थानों में एक है।

—कु. जोशलिन,

दयालु चिड़िया

श्यामनगर में एक धनी सेठ रहता था। वह बहुत दयालु था। उसके तीन बच्चे थे। सोना-मोना और छोटा लड़का जोन। ये तीनों बहुत प्रेम से रहा करते थे। इनकी मां की मृत्यु हो चुकी थी। सेठ को अपनी पत्नी से बहुत सहयोग मिलता था। उसके चले जाने से वह परेशान रहने लगा। एक दिन, दिल का दौरा पड़ जाने पर वह भी स्वर्ग सिधार गया। तीनों बहन-भाई बहुत दुखी हुए। अब वे बिलकुल अकेले थे। वहां उनका कोई नजदीकी रिश्तेदार भी नहीं था। वे परेशान हुए कि किससे सहायता मांगें।

बड़ी बहन सोना अपनी नानी के यहां जाने का थोड़ा बहुत रास्ता जानती थी। अतः उन तीनों ने नानी के यहां जाने का निश्चय किया। उनकी नानी रामगढ़ में रहती थी जो कि श्यामनगर से बहुत दूर था। वे थोड़ा-सा धन लेकर चल पड़े। रास्ते में जंगल पड़ता था। उस जंगल में बहुत अनोखे पेड़ लगे थे। बच्चों को बहुत भूख लगी थी। वे थके हुए भी थे। वे एक [पे]ड़ के नीचे बैठ गए और खा-पीकर वहीं लेट गए।

सुबह उठकर चले, तो उसी जंगल में एक बहुत अजीब पेड़ देखा। जो बहुत लम्बा था। उस पर केवल एक शाख थी। पत्ती एक भी नहीं थी। शाख के अगले हिस्से में पेड़ पर दो हाथ थे। उन्होंने इसी पेड़ की शाख पर एक चिड़िया को मनुष्य की बोली में बोलते हुए देखा। वे तीनों हैरान थे और दुखी भी। इसलिए रोने लगे।

एक चिड़िया ने उनके दुखी होने का कारण पूछा। उन्होंने सारी बात बता दी। चिड़िया ने कहा कि तुम दुखी न हो। तुम पेड़ के इन हाथों में से एक हाथ पर तीन बड़े तथा दो छोटे पत्थर रख दो। ऐसा करने के बाद तुम अपनी नाक की सीध में चलना। वहीं तुम्हें एक विमान मिलेगा, जो तुम्हे तुम्हारी नानी के यहां पहुंचा देगा। तीनों ने उस पेड़ के एक हाथ पर उसी प्रकार कंकड़ रखे जैसे चिड़िया ने कहा था। फिर चिड़िया को अपने साथ लेकर चल दिए। बहुत दूर चलने के बाद उन्हें विमान मिला। चिड़िया की वजह से वे अपनी नानी के पास तक पहुंच सके थे। चिड़िया उनकी पक्की सहेली बन गई थी।

—पूजा चौहान, सहारनपुर

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : मीनू मंजरी, जमालपुर; स्वाति कक्कड़, लखनऊ; रूपिंदर कौर, भुवनेश्वर।

बाल-सभा

मास्टर प्रिंस

रोहित सिकरवार

पलक

गरिमा

सचिन

तुषार गुप्ता

नई पुस्तकें

शब्दार्थ विचार कोश—आचार्य रामचंद्र वर्मा ; संशोधन-परिवर्धन : डा. बदरीनाथ कपूर ; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली ; मूल्य : ३५० रुपए ।

भाषा के सही ज्ञान के लिए शब्दों के सही-सही अर्थ और प्रयोग को जानना-समझना जरूरी है । यह कोश उसी दिशा में सराहनीय प्रयास है । एक जैसे मिलते-जुलते शब्दों को लेकर उन पर विचार किया गया है जैसे पांव, पैर और टांग या व्यापार, वाणिज्य और व्यवसाय । यह कोश अध्यापकों व लेखकों के लिए अत्यंत उपयोगी और संग्रहणीय है । किशोर तथा युवक इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं ।

उड़नखटोले आ—लेखक : रमेश तैलंग ; प्रकाशक : मगध प्रकाशन, मंडोली रोड, दिल्ली-३२ : मूल्य : ५० रुपए ।

बाल मन के गीत, उन्हीं के शब्दों में रमेश तैलंग लिखते रहे हैं । इस पुस्तक में उनके बासठ बाल-गीत हैं । अलग-अलग रंग की ये कविताएं पढ़ने, गाने, गुनगुनाने और मित्रों को सुनाने के लिए हैं । नानी की चिट्ठी, छुट्टी हों, घड़ी री घड़ी, लाल परी, इम्तहान के बुखार में तथा फूलों की टोपी जैसे गीत एकदम नई तरह के हैं । बच्चे पसंद करेंगे ।

पर्यावरण जीवों का आंगन—लेखक : प्रेमानंद चंदोला ; प्रकाशक : पुस्तकायन, २/४२४० ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली : मूल्य : १० रुपए ।

पुस्तक पर्यावरण के बारे में है । पर्यावरण क्या है । शुरुआत में धरती का पर्यावरण कैसा था ? पर्यावरण में गड़बड़ी कैसे हुई और जीव-जंतुओं का लोप शुरू हो गया ? आदि बातों की जानकारी पुस्तक में दी गई है । पौधे हमारे पर्यावरण की जानदार इकाइयां हैं और नदियां हमारा कल्याण कैसे करती हैं ? यह बात भी पुस्तक में विस्तार से बताई गई है । भाषा सरल है ।

खेल-खेल में सामान्य ज्ञान—लेखक : बलवीर त्यागी ; प्रकाशक : सुनील साहित्य सदन, ए. १०१, उत्तरी घोंडा, दिल्ली : मूल्य : १२ रुपए ।

लेखक ने मनोरंजक ढंग से बहुत-सी बातों का ज्ञान बच्चों को कराया है । पहेलियों के माध्यम से पशु-पक्षियों के बारे में बताया गया है । पुस्तक का मुखपृष्ठ आकर्षक है मगर अंदर के पृष्ठों के चित्र साधारण ही हैं ।
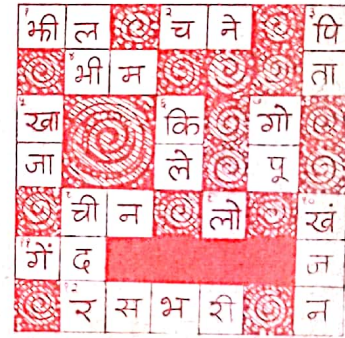
नंदन ज्ञान-पहेली : ३०४

परिणाम

पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया, लेकिन कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आ सका । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

एक गलती : आठ

प्रत्येक को एक सौ पचीस रुपए

१. अजयकुमार चानना, नई दिल्ली ; २. लजा नायर, बोकारो ; ३. बृजेशकुमार सिंह, सुल्तानपुर ; ४. सज्जनकुमार श्रेष्ठ, राप्ती अंचल (नेपाल) ; ५. संजय पांडेय 'डब्बू', भिलाई ; ६. दीपक उपाध्याय, सिंधौली (बदायूं) ; ७. दीपक पोखरना, चित्तौड़गढ़ ; ८. अतुल त्रिपाठी, भाटपाररा (देवरिया) ।

अजब-अनोखी दुनिया

बोतलबंद एअरकंडीशनर : चिलचिलाती धूप में कभी स्कूटर की सीट पर बैठे हो ? झटका-सा लगता है । यही हाल बगीचे की बैंच का है । बैठने से पहले पानी का छिड़काव हो, तो शायद बात बने ।

अब लंदन की एक कम्पनी ने एक स्प्रे बनाया है । नाम है मेगीकूल । बोतल का खटका दबाते ही ठंडी फुहार छूटती है । फुहार में हैं—कुछ सुरक्षित रसायन, पानी और सुगंध । तीस सैकंड की फुहार से जानते हो कितना तापमान गिरेगा ? चालीस डिग्री सेल्सियस । अगर गरमी तेज हो, तो अपने ऊपर ही एक फुहार छोड़ दो । एअरकंडीशनिंग का मजा आ जाएगा ।

रक्तदान—जीवनदान : पटियाला के सतपाल बंसल अब तक अपना ७० गिलास खून दान कर चुके हैं । पहली बार उन्होंने १९६५ में खून दिया था । जरूरतमंद रोगियों को खून देने से उनके मन को शांति मिलती है ।

जरूरतमंद रोगियों के लिए खून जमा करने का काम 'ब्लड बैंक' करते हैं । हमारे देश में सौ से ज्यादा ब्लड बैंक हैं । इनमें सालाना करीब दस लाख यूनिट (एक यूनिट =४५० मिलीलिटर) खून जमा होता है । विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमान लगाया है कि पूरी दुनिया में हर साल ९१ करोड़ यूनिट खून, ब्लड बैंकों में जमा होता है ।

श्री सतपाल बंसल को खून देने के लिए कई [illegible]क मिले हैं । रक्तदान से सम्बंधित कई बैज भी [illegible] जमा किए हैं ।

मंगलगाड़ी : चलती का नाम रॉकी : सामने रेत का ढेर । रेत के ढेर पर छह पहियों की छोटी-सी गाड़ी । बमुश्किल दो फुट लम्बी । वजन होगा यही कोई साढ़े सात किलो । रिमोट कंट्रोल से चलती है । कभी आगे—कभी पीछे । इस गाड़ी से खेलने वाली कोई गुड़िया नहीं एक वैज्ञानिक है । नाम है डोन्ना पिवीरोट्टो । अमरीका के पासाडेना शहर में रहती है । मंगल ग्रह पर गाड़ी दौड़ाने का सपना देखती हैं ।

डोन्ना ने अपनी गाड़ी का नाम रखा है—रॉकी-४ । यह गाड़ी १९९६ में मंगल पर दौड़ेगी । मंगलगाड़ी चट्टानों की बनावट का पता लगाएगी । वहां के भूकम्पों की सूचना भेजेगी । फोटो खींचेगी और नन्ही क्रेन की तरह मंगल की मिट्टी के नमूने दूसरी गाड़ी पर लादेगी । डोन्ना धरती पर बैठे-बैठे मंगल पर अपनी गाड़ी को नचाएगी ।

दांतों के ब्रश की छुट्टी : दांतों को साफ करने वाले ब्रश से जल्दी ही छुट्टी मिलेगी । अमरीका में एक नई चुइंगगम पर खोज चल रही है । बस उसे चबाओ और दांत साफ । काओलिन नामक चीनी मिट्टी से कप-प्लेट बनते हैं । एक खास तापक्रम पर उसे गरम करने से एक गोंद सा बनता है । यही गोंद चुइंगगम में मिलाया जाएगा । यह गोंद दांतों पर जमी पपड़ी और धब्बों को साफ कर देगा । बस चुइंगगम चबाओ और दांत चमकाओ ।

दिल के दौरों का राज : अब दिल के दौरों का पता पैरों की जांच से चलेगा । ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि दिल की बीमारियों का हमला पैरों में मौजूद खून की नालियों (धमनियों) से शुरू होता है । उनमें चिकनाई जमा हो जाती है । चिकनाई की परत खून का बहाव रोकती है । इसी रुकावट से दिल के दौरे पड़ते हैं । अगर पैरों की धमनियों की जांच समय-समय पर होती रहे, तो दिल के दौरों का पता चल सकता है ।

—बृजमोहन गुप्त

पधारो प्रभु

—डा. एम. एस. अग्रवाल

रामभक्त राजा सुरथ कुंडलपुर के राजा थे। जो कोई भी उनके पास आता, उससे धर्म और जीवन के बारे में अनेक प्रश्न पूछते। इससे प्रजा सही राह पर चलती थी।

एक बार स्वयं यमराज जटाधारी मुनि का रूप बनाकर उनकी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए आए। दरबार में सभी के गले में तुलसी-माला पड़ी देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। राजा ने तपस्वी मुनि को आदर से उच्च आसन दिया। प्रणाम करके उन्हें हरि की कथा सुनाने के लिए कहा।

मुनि ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"कैसी हरि कथा ? तुम क्या मूर्खों जैसी बात करते हो ? संसार में कर्म ही प्रधान है। जो जैसा करता है, वैसा फल प्राप्त करता है। फिर व्यर्थ हरि-जप में समय क्यों नष्ट करते हो ?"

रामभक्त राजा सुरथ को मुनि की बात सुनकर दुःख हुआ। नम्रता पूर्वक बोले— "प्रभु, आप भगवान की निंदा क्यों करते हैं ? ध्रुव और प्रह्लाद की कथा आपने सुनी होगी। फिर भी आप ऐसी बातें कर रहे हैं ?"

राजा की भक्ति से प्रसन्न होकर यमराज अपने असली रूप में आ गए। उनसे वरदान मांगने को कहा। राजा सुरथ बोले—"जब तक श्रीराम अवतार लेकर यहां न पधारें, तब तक मेरी मृत्यु न हो।"

"तथास्तु !"–कहकर यमराज अंतर्धान हो गए।

राजा सुरथ को श्रीराम के अयोध्या में जन्म का समाचार मिल गया था। मिथिला में धनुष तोड़कर सीता-विवाह, वनवास और रावण वध आदि समाचार भी मिल गए थे। लेकिन मन में श्रीराम के अपने राज्य में दर्शन करने की इच्छा बहुत प्रबल हो चली थी।

दूतों ने समाचार दिया कि अयोध्यापति श्रीराम अश्वमेध का घोड़ा उनके राज्य में प्रवेश कर गया है। राजा को यह समाचार सुनकर आनंद अनुभव हुआ। सेवकों को उन्होंने अश्वमेध का घोड़ा पकड़ने का आदेश दे दिया। राजा सुरथ के दस पुत्र युद्ध क्षेत्र में आ डटे। शत्रुघ्न की विशाल सेना के नायक अंगद राजा सुरथ के पास गए और उनसे घोड़ा छोड़ देने के लिए कहा। राजा सुरथ बोले—"आप जो कह रहे हैं वह ठीक है। अयोध्या के प्रताप को कौन नहीं जानता ? मेरा राज्य छोटा है लेकिन युद्ध के भय से मैं पीछे नहीं हटूंगा। दयामय राम के भरोसे मैं इस युद्ध के लिए तैयार हूं। जब तक प्रभु स्वयं मेरे राज्य में नहीं आएंगे, तब तक मैं अपने परिवार सहित युद्ध करूंगा।"

अंगद इन बातों को सुनकर लौट गए। भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में शत्रुघ्न के साथ पुष्कल, अंगद, हनुमान आदि थे। राजा सुरथ ने अपने पराक्रम से सभी को बांध दिया। बंदी अवस्था में हनुमानजी ने श्रीराम का स्मरण किया। वह पुष्पक विमान में बैठकर भरत और लक्ष्मण सहित वहां आ गए। अनेक ऋषिगण भी इकट्ठे हो गए थे।

राजा सुरथ प्रभु श्रीराम को देखकर गद्‌गद् हो उठे और उन्हें प्रणाम किया। श्रीराम ने प्रसन्न होकर उन्हें अपना चतुर्भुज रूप दिखाया और हृदय से लगा लिया।

"प्रभु, मैंने बहुत बड़ा अपराध किया। लेकिन पहले ही मैंने अंगद को सचेत कर दिया था कि जब तक प्रभु राम मेरे राज्य में नहीं आएंगे, तब तक मैं युद्ध करूंगा।"—राजा सुरथ ने हाथ जोड़कर कहा।

प्रभु मुसकराए। उन्होंने राजा सुरथ के शौर्य की प्रशंसा की।

चौथे दिन राजा सुरथ ने अपना राज्य अपने पुत्र चम्पक को सौंप दिया। स्वयं शत्रुघ्न की सेना के साथ अश्व की रक्षा के लिए चल दिए। ●

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ________________ आयु ______

पूरा पता ______________________

____

रुचि ______________________

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. रोहित मीना, १६ वर्ष, २२० सराय नसरुल्ला, खुर्जा, बुलंदशहर; २. राजेशकुमार पांडेय, १४, एम/३६ हरभू हाउसिंग कालोनी, रांची; ३. विकास गोयल, १७, १९१, खुड़बुड़ा मुहल्ला, देहरादून; ४. आनंद सेठिया, १३, मदनलाल-अमरचंद सेठिया, सुजानगढ़, चुरू (राज.); ५. प्रमोद गुप्ता, १५, एच १५१ जे. जे. कालोनी, वजीरपुर, दिल्ली; ६. संजयकुमार अग्रवाल, १७, विश्वनाथ अग्रवाल, पो. बगोदर, जिला गिरिडीह (बि.); ७. गौरव अग्रवाल, १२, ४७बी, पाकेट ४ मयूर विहार फेज-१, दिल्ली; ८. यामिनी जैन, १०, सी ७२ वैशाली कामप्लेक्स, गढ़ रोड, मेरठ; ९. पूनमकुमारी जैन, १६, खेमराज नाहटा, मुरली गंज, मधेपुरा (बि.); १०. प्रवीणकुमार मिश्र, १२, आदर्श पेंट एंड हार्डवेयर स्टोर, निकट तेल टंकी, फेफना, बलिया; ११. रवि चंचल, बिंदेश्वर सिंह, ग्रा.+पो. खसराही, वाया पातेपुर, जि. वैशाली; १२. उपेंद्रकुमार यादव, १४, ग्रा. दौलतपुर, पो. मुइउद्दीपुर, जि. फिरोजाबाद; १३. सुरेंद्रसोहन, ११, विपिनलाल कर्ण, ग्रा.+पो. चतरा, जि. मधुबनी; १४. विकास सैनी, १६, म. नं. ८६, भगवतपुरा, रेत वाली गली, मेरठ; १५, मनीषकुमार, १३, एन. पी. सिंह (ए. टी.), जी. ए. उच्च विद्यालय, अरवल, जहानाबाद; १६. बृजेश यादव, १६, शांति निकेतन, ग्रा.+पो. रसूलपुर, जौनपुर; १७. रामनारायण विश्वकर्मा, १६, ग्रा.-माने गांव, पो. मेख, जि. नरसिंहपुर (म.प्र.); १८. अमितकुमार, १६, डा. विश्वनाथ साहा, बी.सी.ई. सदौर, भागलपुर; १९. भावना माहेश्वरी, १६, मुहल्ला दीवान परमानंद, नजीबाबाद, जि. बिजनौर; २०. केशव चक्रवर्ती, १५, म.नं. १७२, टाइप-२ सी. आर. पी. एफ. दुर्गापुर; २१. मधुकुमारी, १३, बाबूलाल झा, श्रीकृष्णनगर, मोतिहारी; २२. दिनेशकुमार झा १५, अमरकांत झा, ग्रा.+पो. भागा, जि. धनबाद; २३. अमरदीपकुमार, १७, खगेंद्रनारायण झा, अमला टोला, मधुबनी, पूर्णियां; २४. विनयकुमार साव, १६, नंदी बाजार, साहागंज, हुगली (प. बं.); २५. बसंतकुमार निगम, १५, ४७०, सत्ती तालाब, उन्नाव; २६. शशिभूषण प्रसाद, १६, रामलखन प्रसाद, रोड नं. १३, राजेंद्रनगर, पटना; २७. विजया मनोज साहु, १४, दिवाकर पैकुजी कायरकर, तीसरा बस स्टाप, गोपालनगर, नागपुर (महा.); २८. दिलीप महतो, १२, कल्याणनगर (टी.वी.सी.) म. नं. १५९, धनबाद; २९. सुनील सिंह, १७, १८६३ टाइप-१, सैक्टर २, न्यू व्हीकल इस्टेट, जबलपुर; ३०. सज्जनकुमार सिन्हा, १४, रंजन वर्मा, चित्रगुप्तनगर, खगड़िया।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. भवेशकुमार गुप्ता, १६ वर्ष, महेशप्रसाद-भवेशकुमार, अस्थावां, नालंदा; २. ललित शर्मा, १५, १०४/१६४९ बलदेवनगर, अम्बाला; ३. रंजीता वर्मा, १२, विजय वर्मा, ८१, भगतसिंह नगर, कोंच, जि. जालौन; ४. निधि गर्ग, १२, बी.-३/४०, अशोक विहार, फेज-२, दिल्ली; ५. ज्योत्सना गुप्ता, १४, रामदास गुप्ता, बहादुर एंड कम्पनी, पुखरायां, कानपुर; ६. विवेकवरुण, १०, डा. पी. एन. झा, धरमपुर, समस्तीपुर; ७. नेहा अग्रवाल, १३, नटवर बेंगिल स्टोर, मु. दुली, फिरोजाबाद; ८. पुरुषोत्तम नरेंद्र धाकड़, १०, दामोदर धाकड़, ग्रा. पांचौरा, पो. रामपुर (टैंक) जि. गुना (म.प्र.); ९. चंद्रप्रकाश, १५, चंद्रदेवप्रसाद, आटा कुट्टी मिल, राजेंद्र आश्रम, कुशवाहा कालोनी, गया; १०. प्रदीप अग्रवाल, १५, अम्बिका वस्त्रालय, मेन रोड-१२, विराटनगर, (नेपाल); ११. पुनीतकुमार, १२, ७/११ चक्रवर्ती मुहल्ला, दयानंद गली, कुरुक्षेत्र (हरि.); १२. मुकेशकुमार चौधरी, १३, पी. एन. टी. कालोनी, १३/९ बोकारो स्टील सिटी; १३. वीरू चौधरी, १४, उपरलावास, ग्रा.+पो. भावी, जि. जोधपुर; १४. रीतूकुमारी, १३, कौशलकिशोर यादव, ग्रा.+पो. सैदपुर, वाया मानसी, जि. खगड़िया; १४. पुखसिंह राजपुरोहित, १६. बाबूसिंह राजपुरोहित, पो. गादाना वाया-रानावास, जि. पाली; १५. श्वेताकुमारी, १२, रेणुबिहारी लाल, सदर बाजार, दानापुर (बि.); १६. बंटीकुमार, १५, ठाकुरप्रसाद-ओमप्रकाश, खुदरा वस्त्र विक्रेता, कृष्ण कटरा, सिवान; १७. सत्यप्रकाश, ८, सिद्धेश्वर मलिक, मलिक निवास, गंगजला, वार्ड-१३, सहरसा· १८. रवीशचंद्र रस्तोगी, १३, कमलकृष्ण रस्तोगी, जी. टी. रोड, सकरी, जि. भभुआ; १९. शोहेल, १२, शोएब अंजाना, तीन पहाड़, साहेबगंज; २०. सतीशकुमार, १५, बलुआ चौक, मोतिहारी निकट चित्र मंदिर टाकीज, पूर्वी चम्पारण।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

ऐसा भी होता है!

शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. आचानक तेज हवा चलने लगी...
और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रुक गई...

mango bite

पारले
मैंगो
बाइट

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९४ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

स्टंप उड़े तो क्या बोले ? खेल की सच्ची शक्ति है जी

पारले-जी

स्वाद भरे, शक्ति भरे.

भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट.

everest/93/PP/173